अफ़ला यतदब्बरून

(क्या ये लोग ग़ौर ओ फ़िक्र नहीं करते?)



हिन्दी मुतरजिम
डॉ. शहेज़ादहुसैन काज़ी

मुरत्तब
ख़ुसरो क़ासिम

अफ़ला यतदब्बरून

(क्या ये लोग ग़ौर ओ फ़िक्र नहीं करते?)



मुरत्तब

ख़ुसरो क़ासिम

हिन्दी लिपियांतर

डॉ. शहेज़ाद हुसैन क़ाज़ी

किताब का नाम	:	अफ़ला यतदब्बरून
मुरत्तब	:	ख़ुसरो क़ासिम असिस्टेंट प्रोफेसर मैकेनिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़ उत्तरप्रदेश, भारत
हिन्दी लिपियांतर	:	डॉ. शहेज़ादहुसैन काज़ी फाउन्डर एन्ड चेरमेन ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह), मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, भारत
सन इशाअत	:	**2018**
हदिया	:	रु. 200/-
कम्पोझिंग एन्ड प्रिन्टिंग	:	इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (गुजरात)
नाशिर	:	इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (गुजरात) & अली एकेडमी (यु.पी.)

मिलने का पता

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन, मोडासा, गुजरात

Mo. 8511021786

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अर्ज़े मुरत्तब

अल्लाह ﷻ! का इस उम्मत पर फ़ज़्ल ओ अहसान है कि उसने हमें किताब-ए-हिदायत क़ुरआन-ए-करीम और इसका अमली नमूना नबी अकरम रहमतुल लिल आलमीन ﷺ की ज़ात-ए-मुबारका इनायत फ़रमाइ। इसी किताब में अल्लाह ﷻ! ने जगह जगह ईमान वालों को ग़ौर ओ फ़िक्र की दावत दी है और अपने अक़्ल ओ शऊर का इस्तेमाल करने पर ज़ोर दिया है।

यह उम्मत-ए-मुस्लिमा की बदक़िस्मती है कि इस किताब को उन्हों ने सिर्फ़ मुर्दो के ईसाल-ए-सवाब या घर में बरकत के लिए रख दिया और हुज़ूर पाक ﷺ के इर्शादात जिन्हें अहादीस-ए-नबवी कहा जाता है, मुसलमानों की अक्सरीयत उनसे नावाक़िफ़ है। अवाम तो क्या अह्ल-ए-इल्म भी दर्सी किताबों के सिवा कुछ नहीं देखते और अवाम जो सीखती हैं वो अह्ल-ए-इल्म से सीखते है तो जब वो ख़ुद ही नावाक़िफ़ हैं तो अवाम को क्या बताएँगे।

तारीख़-ए-इस्लामी के बहुत से ऐसे वाक़यात हैं और बहुत सी शख़्सियात जो उन वाक़यात से मुता'ल्लिक़ हैं उन पर दबीज़ पर्दे पड़े हुए हैं। अगर हम ग़ौर ओ फ़िक्र से काम लें और आयात-ए-क़ुरआनी और अहादीस में ततबीक़ करें तो बहुत जल्द हक़ तक रसाई हो जाएगी। एक बात याद रखने की है कि किसी बुज़ुर्ग का क़ौल या अमल हुज्जत नहीं है, हमारे लिए हुज्जत क़ुरआन-ए-करीम और सही अहादीस हैं।

इस किताब में मुख़्तलिफ़ सही अहादीस को जमा कर दिया गया है और यह क़ारी पर छोड़ दिया गया है कि वह किस नतीजे पर पहुँचता है। या अल्लाह ﷻ हमें हक़ को हक़ दिखा और उस पर चलने की तौफ़ीक़ दे और बातिल को बातिल दिखा और उससे बचने की तौफ़ीक़ दे।

तालिब-ए-शफ़ाअत-ए-रसूल ﷺ
ख़ुसरो क़ासिम
असि० प्रोफेसर, मैकानिकल इंजिनिरिंग डिपार्टमेंट
अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़

بسم الله الرحمن الرحيم

अर्ज़े मुतरजिम

(अनुवादक का निवेदन)

अल्लाह ﷻ ! के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नही है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ﷻ ! के और मुहम्मद ﷺ अल्लाह ﷻ ! के रसूल है। अल्लाह ﷻ ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से **"अफला यतदब्बरुन"** किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया।

आज हमारी आँखों के सामने एक ऐसा ज़माना गुज़र रहा है कि जिसमे नासबीय्यत और ख़ारजिय्यत उरुज़ पकड़ रही है, बुग्ज़े मौला अली علیہ السلام को कुछ फिरका परस्त लोंगों ने खुद के मस्लक का अहम हिस्सा बना दिया है। ऐसे हालात में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के **Mechanical Engineering Department** के **Assistant Professor हज़रत खुसरो क़ासिम साहब** ने जिम्मा उठाया कि ऐसे नासबी, ख़ारजी हमलो का किताबी शक्लो में जवाब दिया जाए। मस्लके अहले सुन्नत में मुहब्बत-ए-अहले बैत علیہم السلام और मुहब्बत-ए-अली علیہ السلام ये शीयत नही है, ये राफ़ज़ीयत नहीं है बलकि ये तो अहले सुन्नत का **1400** साल से चला आ रहा मजबूत अक़ीदा है, दीन का मजबूत सतून है। ये बात प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब ने "शान-ए-अहले बैत" में सिर्फ **20** (बीस) सालो में **160** से भी ज़्यादा किताबे लिखकर बता दिया है। प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब ने इन किताबो में सिर्फ और सिर्फ अहले सुन्नत की किताबो के हवाल पेश किये जो मस्लके अहले सुन्नत के **1400** साल के मुफस्सिरीन, मुहद्दिसीन, मुअर्रिख़ीन मुहक़्क़ीन का इकट्ठा किया हुआ सरमाया है। **1400** साल के इस समन्दर को एक जगह पर इकट्ठा करने का काम प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब ने किया हैं. प्रोफेसर साहब ने खुद को अहले सुन्नत कहलाने वाले अहल-ए-हदीस और अहल-ए-देवबन्द मस्लक के उलमा व मुहद्दिसीन की किताबो के हवाले भी पेश किये है - जैसे कि अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी। प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब को हदीस बयान करने की सनद भी हासिल हैं जो इमाम अली रज़ा علیہ السلام से मिलती है जिसे इस हकीर ने अपने आँखों से देखी हैं. अल्लाह ﷻ ! उनके इस काम का बदला अता फरमाए और ब-रोज-ए-कयामत उन को, उनकी नस्लों को खातमुन्नबी रसूलल्लाह ﷺ के हाथो जाम-ए-कौसर नसीब फरमाये .... आमीन।

ये किताब **"अफला यतदब्बरुन"** जिस में मैं ने प्रोफेसर साहब से इजाज़त ले कर इस को हिन्दी और गुजराती में तर्जुमा कम लिपियांतर किया हैं। प्रोफेसर साहब ने मुझे इजाज़त दे कर मुझ नाचीझ को भी अहल-ए-बैत का कुछ काम करने का मौका दिया हैं। इस अजीमुश्शान किताब को उर्दू से हिन्दी ज़बान में मुन्तफिक करते वक्त मैं ने अपने तौर पर इस बात की पूरी कोशिश की है कि इस के कलाम की मअ्नवीयत और रुह्‌हाने फिक्र कहीं से मजरूह न होने पाए।

इस बीच प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब से मेरी मुलाकात और उनकी किताबो का हिन्दी, गुजराती ज़बान में तर्जुमा के काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले ख़तीब-ए-अह्ले बैत मुफ्ती शफ़ीक़ हनफी कादरी साहब (मुम्बई) का तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फाज़ के हिन्दी-गुजराती मा'ना में **Confuse** हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक्त आमदा रहने वाले दीवान मोहसीनशाह (सांसरोद,गुजरात) का भी शुक्रगुजार हूँ।

दरअस्ल यह काम कौम की उस नस्ल के लिये किया गया है जो हालाते ज़माना के हाथों अपनी मादरी ज़बान (उर्दू) के रस्मुल ख़त से नाबलद हो गई है अगरचे अभी भी इन अल्फ़ाज से उस के कान मानूस और ज़बान इनकी लज्जत से आशना है ! चुनांचे मैं ने उर्दू अल्फ़ाज के तलफ्फ़ुज़ात की सेहत का ख़ास लिहाज़ रख़ा है। इस लिए बतौर मुतरजिम मैं ने "पूर्ण हिन्दी तर्जुमा" न कर के ज़ियादातर लिपियांतर ही किया है ताकि उर्दू दीनी अल्फ़ाजो का और उसूल-ए-हदीस के अल्फ़ाजो का वज़न बरकरार रहे। मैं ने निहायत जांफिशानी और खुलूसे नियत के साथ इस अज़ीम क़रीज़े को अंजाम देने की कोशिश की है, इन तमाम बातों और तज्जुहात के बावजूद ग़लतियां मिल सकती है जिन के लिए मैं पहले से मअज़िरत ख़्वाह हूँ।

अल्लाह ﷻ ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलल्लाह ﷺ व अहल-ए-बैत عليهم السلام की शफाअत नसीब फरमाए !

ग़ुलाम-ए-दरे सैय्यदा ज़हरा-ए-पाक व अली عليهم السلام

डॉ. शहेज़ाद हुसैन यासीनमीया काज़ी

फेहरिस्त

ध्यान रहे : यहां पर फेहरिस्त में उस किताब और उसके तालीफ (Auther) का नाम दिया गया है जिस किताब का स्केन पेज इस किताब में है

अफ़ला यतदब्बरून

(क्या ये लोग ग़ौर ओ फ़िक्र नहीं करते?)

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ

لقاء العشر الأواخر
بالمسجد الحرام
(٦٩)

شعب الإيمان

تأليف
الحافظ عماد الدين أبي الفداء
إسماعيل بن عمر بن كثير القرشي الدمشقي الشافعي
٧٠١ — ٧٧٤ هـ
رحمه الله تعالى

تحقيق وتعليق
الدكتور وليد بن محمد بن عبد الله العلي

أسهم بطبعه بعض أهل الخير من الحرمين الشريفين ومحبيهم

دار البشائر الإسلامية

فهرس الموضوعات

الثانية والعشرون: حب علي، عن زر بن حبيش[١] رضي الله عنه قال: «والذي فلق الحبة وبرأ النسمة إنه لعهد النبي الأمي: أن لا يحبك إلا مؤمن، ولا يبغضك إلا منافق» رواه مسلم[٢].

→ **इब्न-ए-कसीर शाफ़ई "शुअबल ईमान"** (जिसमें उन्हों ने ईमान के मुख़्तलिफ़ शुअबों को बयान किया है) इसके शुअबा नंबर २२ में लिखते हैं:

☆ शुअबा नंबर २२ हुब्ब-ए-अली عليه السلام के बारे में है (या'नी हज़रत अली رضي الله عنه की मुहब्बत को ईमान का एक हिस्सा बताया है)।

→ **हज़रत ज़र बिन हुबैश** رضي الله عنه फ़रमाते हैं: "उस ज़ात की क़सम जिसने दाने को फाड़ा और जान को पैदा किया कि यह नबी उम्मी صلى الله عليه وآله وسلم का फ़रमान है कि (ऐ अली عليه السلام) तुम से नहीं मुहब्बत करेगा मगर ईमान वाला और तुम से नहीं बुग्ज़ रखेगा मगर मुनाफ़िक़।"

مُسْنَد الإمَام أحمد بن حَنبَل

(١٦٤ - ٢٤١ هـ)

أشرف على تحقيقه
الشيخ شعيب الأرنؤوط

حقق هذا الجزء وخرّج أحاديثه وعلّق عليه
شعيب الأرنؤوط — عادل مرشد

الجزء الثاني

مؤسسة الرسالة

٦٤١ - حدثنا ابنُ نُمير، حدثنا عبد الملك، عن أبي عبد الرحيم الكِنْدِي، عن زاذان أبي عُمر[١]، قال:

سمعتُ علياً في الرَّحْبةِ وهو يَنْشُدُ الناسَ: مَن شَهِدَ رسولَ الله ﷺ يومَ غَدِير خُمٍّ، وهو يقولُ ما قال؟ فقام ثلاثةَ عشرَ رجلاً، فشَهِدُوا أنهم سَمِعوا رسولَ الله ﷺ وهو يقول: «مَنْ كنتُ مَوْلاهُ فعليٌّ مَوْلاهُ»[٢].

٦٤٢ - حدثنا ابن نُمير، حدثنا الأعمش، عن عدي بن ثابت، عن زِر بنِ حُبَيْش، قال:

قال عليٌّ: واللهِ إنه لَمِمَّا[٣] عَهِدَ إليَّ رسولُ الله ﷺ: أنه لا يُبغِضُني إلا مُنافِقٌ، ولا يُحِبُّني إلا مُؤمنٌ[٤].

= من طرق، عن هشام، به. وسيأتي برقم (٩٣٨) و(١١٠٩) و(١٢١٢).

وقوله: «خير نسائها»، قال القرطبي المحدث: الضمير عائد على غيرِ مذكور لكنه يفسره الحال والمشاهدةُ يعني به الدنيا.

(١) تحرف في (م) إلى: زاذان بن عمر.

(٢) صحيح لغيره، وهذا إسناد ضعيف لجهالة أبي عبد الرحيم الكندي، لكن متن الحديثِ صحيح ورد من طرق كثيرة تزيد على ثلاثين صحابياً، قال الإمام الذهبي في «سير أعلام النبلاء» ٨/٣٣٥: متنه متواتر، وانظر صحيح ابن حبان (٦٩٣٠) و(٦٩٣١).

وأخرجه ابنُ أبي عاصم في «السنة» (١٣٧٢) من طريق إسحاق الأزرق، عن عبد الملك بن أبي سليمان، بهذا الإسناد.

غدير خُم، قال السندي: بضم معجمة وتشديد ميم، غيضة بثلاثة أميال من الجحفة، عندها غدير مشهور يضاف إليها.

(٣) في (م) و(ص): مما.

(٤) إسناده على شرط الشيخين إلا أنَّ عدي بن ثابت - وإن أخرجا له - قال فيه =

→ **इमाम अहमद बिन हम्बल** ﷬ अपनी ‘**मुस्नद**’ में रिवायत करते हैं कि:

☆ हज़रत अली ﷺ फ़रमाते हैं: “यह मुझसे रसूलल्लाह ﷺ का अहद व फ़रमान है कि मुझसे मुनाफ़िक़ के अलावा कोई बुग्ज़ नहीं रखेगा और मोमिन के अलावा कोई मुहब्बत नहीं करेगा।”

☆ **इस किताब के मुहक़्क़िक़ शोऐब अरनौवत कहते हैं कि इस रिवायत की सनद शेख़ैन (इमाम बुखारी ﷬ व इमाम मुस्लिम ﷬) की शर्त के मुताबिक़ है, सिवाए अदी बिन साबित के।**

﴿لقد من الله على المؤمنين إذ بعث فيهم رسولا من أنفسهم يتلوا عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة وإن كانوا من قبل لفي ضلال مبين﴾ [آل عمران: ١٦٤]

صحيح مسلم

للإمام أبي الحسين مسلم بن الحجاج القشيري النيسابوري

٢٠٦ - ٢٦١هـ

لو أن أهل الحديث يكتبون مائتي سنة الحديث فمدارهم على هذا المسند

صنفت هذا المسند الصحيح من ثلاثمائة ألف حديث مسموعة
مسلم بن الحجاج

طبعة معتنى بها مرقمة
الأحاديث مع الفهارس

دار المغني

١٣١– (٧٨) حدثنا أبو بكر بن أبي شيبة: حدثنا وكيع، و أبو معاوية، عن الأعمش. ح وحدثنا يحيى بن يحيى (واللفظ له) أخبرنا أبو معاوية، عن الأعمش، عن عدي بن ثابت، عن زر قال: قال علي: والذي فلق الحبة وبرأ النسمة إنه لعهد النبي الأمي ﷺ إلي: «أن لا يحبني إلا مؤمن، ولا يبغضني إلا منافق».

٣٤ ـــ باب بيان نقصان الإيمان بنقص الطاعات وبيان إطلاق لفظ الكفر على غير الكفر بالله، ككفر النعمة والحقوق

١٣٢– (٧٩) حدثنا محمد بن رمح بن المهاجر المصري: أخبرنا الليث، عن ابن الهاد، عن عبد الله بن دينار، عن عبد الله بن عمر، عن رسول الله ﷺ أنه قال: «يا معشر النساء تصدقن وأكثرن الاستغفار. فإني رأيتكن أكثر أهل النار» فقالت امرأة منهن، جزلة: وما لنا يا رسول الله أكثر أهل النار. قال: «تكثرن اللعن. وتكفرن العشير، وما رأيت من ناقصات عقل ودين أغلب لذي لب منكن» قالت: يا رسول الله وما نقصان العقل والدين؟ قال: «أما نقصان العقل فشهادة امرأتين تعدل شهادة رجل. فهذا نقصان العقل، وتمكث الليالي ما تصلي، وتفطر في رمضان، فهذا نقصان الدين».

وحدثنيه أبو الطاهر. أخبرنا ابن وهب، عن بكر بن مضر، عن ابن الهاد، بهذا الإسناد، مثله.

(٨٠) وحدثني الحسن بن علي الحلواني و أبو بكر بن إسحق قالا: حدثنا ابن أبي مريم أخبرنا محمد بن جعفر، قال: أخبرني زيد بن أسلم، عن عياض بن عبد الله، عن أبي سعيد الخدري، عن النبي ﷺ. ح وحدثنا يحيى بن أيوب وقتيبة وابن حجر. قالوا: حدثنا إسماعيل (وهو ابن جعفر) عن عمرو بن أبي عمرو، عن المقبري، عن أبي هريرة عن النبي ﷺ بمثل معنى حديث ابن عمر عن النبي ﷺ.

٣٥ ـــ باب بيان إطلاق اسم الكفر على من ترك الصلاة

١٣٣– (٨١) حدثنا أبو بكر بن أبي شيبة و أبو كريب قالا: حدثنا أبو معاوية عن الأعمش، عن أبي صالح، عن أبي هريرة قال: قال رسول الله ﷺ: «إذا قرأ ابن آدم

→ **सहीह मुस्लिम** में है कि हज़रत अली ﷛ ने फ़रमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसने दाने को फाड़ा और जान को पैदा किया कि यह मुझसे रसूलल्लाह ﷺ का अहद व फ़रमान है कि मुझसे मोमिन के अलावा कोई मुहब्बत नहीं करेगा और मुनाफ़िक़ के अलावा कोई बुग्ज़ नहीं रखेगा।”

كتاب الشريعة

للإمام المحدث أبي بكر محمد بن الحسين الآجري

المتوفى سنة ٣٦٠هـ

دراسة وتحقيق

الدكتور عبد الله بن عمر بن سليمان الدميجي

عضو هيئة التدريس بجامعة أم القرى

الجزء الرابع

دار الوطن

الرياض – شارع الفطر – ص.ب ٣٣١٠

☎ ٤٧٩٢٠٤٢ – فاكس ٤٧٦١٦٥٦

قال: حدثنا أبو معاوية، عن الأعمش، عن عدي بن ثابت، عن زر بن حبيش، قال: سمعت عليًا رضي الله عنه على المنبر يقول: «والذي فلق الحبة، وبرأ النسمة إنه لعهد النبي الأمي إلي ﷺ، أنه لا يحبك إلا مؤمن ولا يبغضك إلا منافق».

١٥٣٢ – حدثنا أبو القاسم عبد الله بن محمد بن عبد العزيز البغوي، قال: حدثنا أحمد بن عمران الأخنسي، قال: سمعت محمد بن فضيل، قال: حدثنا أبو نصر عبد الله بن عبد الرحمن الأنصاري، عن مساور الحميري، عن أمه، عن أم سلمة قالت: سمعت رسول الله ﷺ يقول لعلي رضي الله عنه: «ما يحبك إلا مؤمن ولا يبغضك إلا منافق».

١٥٣٣ – وحدثنا الفريابي، قال: حدثنا عثمان بن أبي شيبة، قال: حدثنا

١٥٣٢ - إسناده: ضعيف جدًا.

١ . فيه أحمد بن عمران الأخنسي: قال البخاري: يتكلمون فيه. وقال أبو زرعة: كوفي تركوه، وتركه أبو حاتم. الميزان (١/ ١٢٣).

٢ . وفيه مساور الحميري: مجهول. من السادسة. التقريب (ص ٥٢٧) التهذيب (١٠/ ١٠٣).

٣ . وفيه أم مساور: الحميرية. قال الحافظ: لا يعرف حالها. من الرابعة. التقريب (٧٥٩).

٤ . وفيه محمد بن فضيل: صدوق عارف، رمي بالتشيع. تقدم في ح: ١٨٢.

● عبد الله بن عبد الرحمن القيسي: أبو نصر الكوفي: ثقة من الخامسة. التقريب (ص ٣١١).

تخريجه:

أخرجه الإمام أحمد (٦/ ٢٩٢) والترمذي في المناقب ح: ٣٧١٧. (٥/ ١٣٥) كلاهما من طرق عن محمد بن فضيل . . . به. وقال الترمذي: حسن غريب.

١٥٣٣ - إسناده صحيح

● مالك بن إسماعيل النهدي أبو غسان الكوفي، ثقة متقن، صحيح الكتاب، عابد من صغار التاسعة. التقريب (٥١١).

مالك بن إسماعيل، قال: حدثنا إسرائيل، عن الأعمش، عن أبي صالح، عن أبي سعيد الخدري، قال: «إنما كنا نعرف منافقي الأنصار ببغضهم علي بن أبي طالب رضي الله عنه».

١٥٣٤ – وحدثنا أبو محمد جعفر بن أحمد بن عاصم الدمشقي، قال: حدثنا محمد بن مصفى، قال: حدثنا عبيد الله بن موسى، عن محمد بن علي، عن عبد الله بن محمد بن عقيل، عن جابر قال: «ما كنا نعرف منافقينا معشر الأنصار إلا ببغضهم علي بن أبي طالب رضي الله عنه».

١٥٣٥ – حدثنا الفريابي، قال: حدثنا محمد بن المثنى، قال: حدثنا

تخريجه:

أخرجه الترمذي في المناقب ح: ٣٧١٧ (٥/ ١٣٥) من حديث جعفر بن سليمان، عن أبي هارون، عن أبي سعيد . . . به نحوه.

قال الترمذي: «هذا حديث غريب، إنما نعرفه من حديث أبي هارون، وقد تكلم شعبة في أبي هارون، وقد روي هذا عن الأعمش، عن أبي صالح، عن أبي سعيد».

١٥٣٤ - إسناده: فيه ضعف.

● فيه عبد الله بن محمد بن عقيل: صدوق في حفظه لين، وقد تغير بأخرة. تقدم في ح: ١٠١٣.

● وفيه محمد بن مصفى: صدوق له أوهام. تقدم في ح: ٧٩.

تخريجه:

أخرجه الطبراني في الأوسط (١/ ١١٧)، والبزار كما في كشف الأستار (٣/ ١٩٩).

قال الهيثمي: «وأسانيد كلها ضعيفة». (٩/ ١٣٢-١٣٣).

وأخرجه عبد الله بن أحمد في فضائل الصحابة ح: ١٠٨٦ (٢/ ٦٣٩) من حديث عبد الله بن محمد بن عقيل عن جابر . . . به.

وأخرجه أحمد في فضائل الصحابة ح: ٩٧٩ (٢/ ٥٧٩) من حديث أبي صالح عن أبي سعيد الخدري . نحوه.

١٥٣٥ - إسناده: فيه ضعف.

● فيه أبو إسحاق. وهو مدلس وقد عنعن. تقدم في ح: ١٠٩.

→ **अबू बक्र मुहम्मद बिन हुसैन आजूरी رحمه الله की "किताबुल शरीअत"** में है कि : हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه फ़रमाते हैं: "हम अंसार में से मुनाफ़िक़ीन को हज़रत अली رضي الله عنه से बुग्ज़ रखने की वजह से पहचानते थे।"

☆ **इस किताब के मुहक्क़िक़ अब्दुल्लाह बिन उमर बिन सुलेमान कहते हैं कि इसकी सनद सहीह है।**

تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن
ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩ هـ - ٥٧١ هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الثاني والأربعون

علي بن أبي طالب رضي الله عنه

دار الفكر
للطباعة والنشر والتوزيع

أخبرنا أبو محمد بن طاوس، أنا عاصم بن الحسن، أنا أبو عمر بن مهدي، أنا محمد بن مخلد، نا إسماعيل بن أبي الحارث، نا محمد بن إسماعيل الأسدي، نا زهير أبو[1] خيثمة، عن أبي الزبير، عن جابر قال: كنا نعرف نفاق الرجل منا ببغضه علياً.

أخبرنا أبو المظفر القشيري، أنا أبو القاسم الشحامي، قالا: أنا أبو سعد الجنزرودي، أنا أبو سعيد الكرابيسي، نا محمد بن إدريس السامي[2]، نا سويد بن سعيد، نا معاوية بن عمار، عن أبي الزبير قال: سئل جابر، عن علي فقال: ما كنا نعرف منافقي هذه الأمة إلا ببغضهم علياً.

أخبرنا أبو عبد الله الخلال، نا سعيد بن أحمد الصوفي، أنا أبو بكر محمد بن عبد الله بن زكريا الشيباني، نا عمر بن الحسن بن علي بن مالك[3]، نا أحمد بن الحسن الخزاز، نا أبي، نا حصين بن مخارق، عن ابن أبي ليلى، عن أبي الزبير، عن جابر قال: كنا نعرف المنافقين ببغض علي بن أبي طالب.

قال: ونا حصين، عن زيد بن عطاء بن السائب، عن أبيه، عن الوليد بن عبادة بن الصامت، عن أبيه قال:

كنا ننور أولادنا بحب علي بن أبي طالب، فإذا رأينا أحداً لا يحب علي بن أبي طالب علمنا أنه ليس منا، وأنه لغير رشده.

أخبرنا أبو القاسم هبة الله بن عبد الله، أنا أبو بكر الخطيب، أخبرني أبو القاسم عبد العزيز بن محمد بن علي المطرز، نا عبد الرحمن بن عمر بن محمد المعدل - بمصر - نا محمد بن الحارث بن الأبيض القرشي، نا عبد السلام بن أحمد، نا إبراهيم بن صالح أبو صالح، أنا مالك بن أنس، عن محبوب بن أبي الزناد قال: قالت الأنصار: إن كنا لنعرف الرجل إلى غير أبيه ببغضه علي بن أبي طالب.

قال: ونا عبد الرحمن بن عمر، حدثناه أبو الحسن محمد بن إسحاق الملحمي، حدثني عبد السلام بن سهل السكري، نا إبراهيم بن صالح الخزاز، نا مالك بن أنس، عن محبوب بن أبي الزناد قال: قالت الأنصار: إنْ كنا لنعرف الرجل بغير أبيه ببغضه علي بن أبي طالب.

(١) الأصل: «بن» تصحيف، والتصويب عن م، وهو زهير بن معاوية بن حديج بن الرحيل، أبو خيثمة الجعفي الكوفي، ترجمته في سير أعلام النبلاء ٨/ ١٨١.

(٢) بالأصل و«ز»، والمطبوعة: الشامي، تصحيف، والمثبت عن م. ترجمته في سير أعلام النبلاء ١٤/ ٤٦٤.

(٣) ترجمته في سير أعلام النبلاء ١٥/ ٤٠٦.

→ **इब्न-ए-असाकिर** की **"तारीख़-ए-दिमश्क़"** में है : "हम अपने बच्चों को हज़रत अली رضي الله عنه की मुहब्बत से मुनव्वर करते थे, और जब हम किसी को देखते कि वह हज़रत अली رضي الله عنه से मुहब्बत नहीं करता है तो हम समझ लेते कि यह हम में से नहीं है, और वह ग़लत रास्ते पर है।

☆ **अंसार कहते हैं कि : "हम आदमी को उस के बाप के अलावा किसी और की तरफ़ मंसूब करते थे अगर वह हज़रत अली رضي الله عنه से बुग्ज़ रखता होता।"**



٣٣ ـ الفرق بين المؤمن والمنافق

[١٠٠] أخبرنا أبو كريب محمد بن العلاء الكوفي، قال: حدثنا أبو معاوية، عن الأعمش، عن عدي بن ثابت، عن زر بن حُبيش، عن علي قال: «والذي فلق الحبة وبرأ النسمة إنه لعَهْد النبي الأمي ﷺ إليّ: «لا يحبني إلا مؤمن، ولا يبغضني إلا منافق»

[١٠١] أخبرنا واصل بن عبد الأعلى، قال: حدثنا وكيع، عن الأعمش، عن عدي بن ثابت، عن زر بن حُبيش، عن علي قال: عهد إليَّ النبي ﷺ: «أن لا يُحبُّني إلا مؤمن، ولا يبغضني إلا منافق»

[١٠٢] أخبرنا يوسف بن عيسى، قال: أخبرنا الفضل بن موسى، قال: أخبرنا الأعمش، عن عدي، عن زر، قال: قال علي: إنه لعهد النبي الأمي ﷺ إليّ، إنه: «لا يحبك إلا مؤمن، ولا يبغضك إلا منافق».

انظر لكثرة المصادر!!

★ [١٠٠] إسناده صحيح.

أخرجه مسلم (٧٨) وابن أبي شيبة (١٢/٥٦/١٢١١٣) وعبد الله بن أحمد في زوائده على «الفضائل» (١١٠٧) وابن ماجه (١١٤) وابن أبي عاصم (٢/٨٨٨/١٣٦٠) وابن منده في «الإيمان» رقم (٢٦١) وابن المؤيد الخراساني في «الفرائد» (١/١٣٢) وابن حبان (١٥/٣٦٧/١٩٣٤) والآجري في «الشريعة» (٣/٢٢٢/١٥٨٩). من طريق أبي معاوية به.

★ [١٠١] إسناده صحيح.

أخرجه أحمد (١/٩٥، ١٢٨) وفي «الفضائل» (٩٤٨) والمصنف في مسنده (الصغرى) (٨/١١٧) وابن الأعرابي في معجمه (٢/٥١٦/١٠٠٠).

من طريق: وكيع به.

★ [١٠٢] أخرجه المصنف في سننه (٨/١١٥ ـ ١١٦) بنفس هذا الإسناد، وهو إسناد صحيح. انظر ما قبله.

والحديث أخرجه أيضاً: أحمد في «المسند» (١/٨٤) وفي «الفضائل» (٩٦١) والترمذي (٣٧٣٦) والحميدي في مسنده (١/٣١/٥٨) وابن الأعرابي في معجمه (١/٣٣٣ ـ ٣٣٤/ ٦٤٢) وأبو نعيم في «الحلية» (٤/١٨٥) والآجري في «الشريعة» (٣/٢٢٢/١٥٨٨) والخطيب في تاريخه (٢/٢٥٥ و١٤/٤٢٦) والخوارزمي في «المناقب» (٣٣٦) وغيرهم.

من طرق: عن الأعمش به.

→ **इमाम निसाई رحمه الله की “ख़साइस-ए-अली बिन अबी तालिब عليه السلام”** में है: हज़रत ज़र رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि हज़रत अली رضي الله عنه ने फ़रमाया: “ये मुझसे नबी-ए-उम्मी صلى الله عليه وآله وسلم का अहद व फ़रमान है कि तुमसे मुहब्बत नहीं करेगा मगर मोमिन और तुमसे बुग्ज़ नहीं रखेगा मगर मुनाफ़िक़।”

كتاب فضائل الصحابة

للإمام

أبي عبد الله أحمد بن محمد بن حنبل

(١٦٤ - ٢٤١هـ)

حققه وخرج أحاديثه

وصي الله بن محمد عباس

المملكة العربية السعودية جامعة أم القرى بمكة المكرمة

طبعة جديدة منقحة

الجزء الثاني

دار ابن الجوزي

وهو القرقساني، قثنا الأوزاعي، عن شداد أبي عمار، قال: دخلت على واثلة بن الأسقع، وعنده قوم فذكروا علياً فشتموه فشتمته معهم، فلما قاموا، قال لي: لم شتمت هذا الرجل؟ قلت: رأيت القوم شتموه فشتمته معهم، فقال: ألا أخبرك بما رأيت من رسول الله ﷺ؟ قلت: بلى، فقال: أتيت فاطمة أسألها عن علي فقالت: توجه إلى رسول الله ﷺ، فجلست أنتظره حتى جاء رسول الله ﷺ ومعه علي وحسن وحسين آخذاً كل واحد منهما بيده، حتى دخل فأدنى علياً وفاطمة فأجلسهما بين يديه، وأجلس حسناً وحسيناً كل واحد منهما على فخذه، ثم لف عليهم ثوبه أو قال[1]: كساء، ثم تلا هذه الآية: ﴿إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ﴾[2] ثم قال: اللهم هؤلاء أهل بيتي وأهل بيتي أحق».

(٩٧٩) حدثنا عبد الله، قال: حدثني أبي، قثنا أسود بن عامر، قثنا إسرائيل، عن الأعمش، عن أبي صالح، عن أبي سعيد الخدري، قال: «إنما كنا نعرف منافقي الأنصار ببغضهم علياً».

(٩٨٠) حدثنا عبد الله، قال: حدثني أبي، قثنا معتمر بن سليمان، عن أبيه، عن مغيرة، عن أم موسى، عن علي، قال: «ما

(٩٧٩) إسناده صحيح.
ويأتي بإسناد حسن عن جابر برقم (١٠٨٦).

(٩٨٠) إسناده صحيح لغيره.
مغيرة بن مقسم يدلس لكن شواهده كثيرة والحديث في المسند (١: ٧٨) وفيه ما زيدت بجيلة المتكلم.
وأخرجه الطبراني في حديث طويل، ذكره في مجمع الزوائد (٩: ١٢٣) وقال: وفيه أحمد بن سهل بن علي الباهلي ولم أعرفه وبقية رجاله ثقات.

(١) في (ي): لا يوجد قال.
(٢) في (ي): زيادة ﴿وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا﴾ الأحزاب: ٣٣.

→ **इमाम अहमद** ﷬ की **"फ़ज़ाइलुल सहाबा"** में है: हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷠ फ़रमाते हैं कि: "हम अंसार में से मुनाफ़िक़ीन को हज़रत अली ﷠ से बुग्ज़ रखने की वजह से पहचानते थे।"

☆ **इस किताब के मुहक़्क़िक़ वसीअल्लाह बिन मुहम्मद अब्बास कहते हैं कि इसकी सनद सहीह है।**

وأخرج ابنُ مردويه ، وابنُ عساكرَ ، عن أبي سعيدٍ الخدريِّ في قوله : ﴿وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ﴾ . قال : ببغضِهم عليَّ بنَ أبي طالبٍ(١) .

وأخرج ابنُ مَرْدُويه عن (٢)ابنِ مسعودٍ(٢) قال : ما كنّا نعرِفُ المنافقين/ على عهدِ رسولِ اللهِ ﷺ إلا ببُغضِهم عليَّ بنَ أبي طالبٍ .

وأخرج عبدُ بنُ حميدٍ عن مجاهدٍ ، أنه تلا هذه الآية : ﴿وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ مِنكُمْ﴾ . الآية . فقال : اللهمَّ عافِنا واستُرْنا ، ولا تَبْلُ أخبارَنا .

وأخرج عبدُ بنُ حميدٍ عن عاصمٍ ، أنه قرأ : (وليبلونكم) بالياءِ ، (حتى يعلم) بالياءِ ، (٣)(ويبلوَ) بالياءِ(٣) ، ونصبِ الواوِ(٤) .

قوله تعالى : ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ﴾ الآية .

أخرج عبدُ بنُ حميدٍ ، وابنُ جريرٍ ، عن قتادةَ في الآيةِ قال : مَن استطاع منكم ألا يُبطِلَ عملًا صالحًا بعملِ سوءٍ فليفعلْ ، ولا قوةَ إلا باللهِ ، فإن الخيرَ يَنسخُ الشرَّ (٥)وإن(٦) الشرَّ ينسخُ الخيرَ(٥) ، فإنما مِلاكُ الأعمالِ خواتيمُها(٧) .

---

(١) ابن عساكر ٣٦٠/٤٢ .

(٢ - ٢) في ح١ : « أبي سعيد » .

(٣ - ٣) ليس في : الأصل ، ح١ .

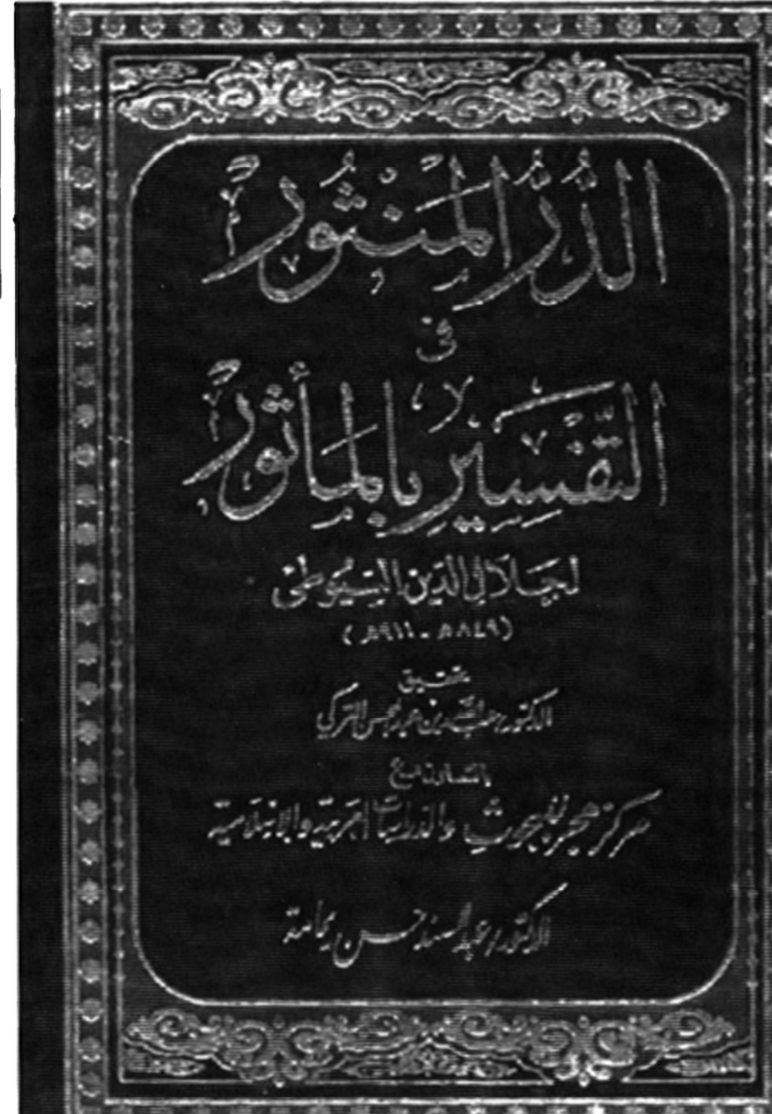
(٤) وهي قراءة أبي بكر عن عاصم ، وقرأ الباقون بالنون في الثلاثة . واختلفوا في : ﴿ونبلو أخباركم﴾ فروى رويس بإسكان الواو ، وقرأ الباقون بفتحها . ينظر النشر ٢٨٠/٢ .

(٥ - ٥) سقط من : ف١ ، م .

(٦) ليس في : الأصل .

(٧) في ح١ : « خواتمها » .
والأثر عند ابن جرير ٢٢٦/٢١ .

الجزء الثالث عشر



→ **अल्लामा सुयूती** رحمہ اللہ की **"दुर्रे मंसूर"** में है: हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि

وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ से मुराद हज़रत अली رضی اللہ عنہ से बुग्ज़ है।

(ये क़ुरआन शरीफ की सूरह मुहम्मद की आयत नम्बर-३० का हिस्सा हैं)"

→ **अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती** رحمہ اللہ इस आयत की तफसीर **"दुर्रे मंसूर"** में ये बात लिखते है।

→ हज़रत इब्न-ए-मसऊद رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि : "हम रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم के ज़माने में मुनाफ़िक़ीन को नहीं पहचानते थे मगर हज़रत अली رضی اللہ عنہ से बुग्ज़ रखने की वजह से।"

العواصم والقواصم

في

الذب عن سنة أبي القاسم

تصنيف

الإمام العلامة النظار المجتهد محمد بن إبراهيم الوزير اليماني

المتوفى سنة ٨٤٠ هـ

حققه وضبط نصه، وخرج أحاديثه، وعلق عليه

شعيب الأرنؤوط

الجزء الثامن

مؤسسة الرسالة

الله بن نمير ثلاثتهم عن الأعمش، به[١]، وهو الحديثُ السادسُ والستون من مسند علي عليه السلام من «جامع» المسانيد لابن الجوزي، وهذا إسنادٌ صحيح على شرط أئمة الحديث وأئمة الإسلام كُلُّهم خرّجوا حديث رواته لو لم يرد[٢] سواه، كيف وله شواهد، فقد روى التِّرمذيُّ[٣] وغيرُه عن أمّ سلمةَ أنَّ رسول الله ﷺ قال: «لا يُحبُّ علياً منافقٌ ولا يَبْغِضُهُ مُؤمِنٌ». رواه جماعة مِنَ حُفّاظ الحديث، وأئمة السنة منهم الزُّبيري[٤] في «المناقب» عن واصل بن عبد الأعلى، ومنهم عبدُ الله بنُ أحمد بن حنبل في «زوائد المسند»[٥]، ومنهم البغوي[٦] في «كتابه»، ومنهم ابنُ عدي في كتاب «الكامل»[٧]، ومنهم الذهبي في كتاب «الميزان»[٨] ثلاثتهم عن أحمد بن عمران عن البغوي وابن عدي والذّهبي ثلاثتهم عن محمد بن فُضيل ـ أعني أحمد بن عمران ـ، وعثمان بن أبي شيبة، وواصل بن عبد الأعلى، ورواه محمد بن فضيل، عن أبي نصر عبد الله بن عبد الرحمن بن نصر الأنصاري، عن مُساوِرٍ الحميريِّ، عن أمِّه، عن أمّ سلمةَ رضي الله عنها.

وقال الترمذي: حديث حسن غريب من هذا الوجه.

قلت: ورواته ثقات لم يذكر في كتب الجرح أحد منهم إلاَّ ابن فضيل وشيخه بما لا يقدح، أمّا ابنُ فضيل، فذكر فيه التشيع لا سوى، وقال الذّهبي[٩]: هو صدوق صاحب حديث ومعرفة.

قلت: وهو من شيوخ أحمدَ بنِ حنبل وإسحاقَ بنِ راهويه وأمثالِهما، وهما شيخا أهلِ السُّنَّة.

---

(١) هو في «المسند» ١/٨٤، وقد تقدم تخريجه ١/٣٧٠.

(٢) في (ف): «يكن».

(٣) برقم (٣٧١٧)، وانظر التعليق رقم (٦).

(٤) تحرف في الأصول إلى: «الزبيدي».

(٥) ٦/٢٩٢، وهو من رواية الإمام أحمد نفسه، لا من زيادات ابنه عبد الله.

(٦) هو أبو القاسم عبد الله بن محمد بن عبد العزيز، تقدمت ترجمته ١/٣٥٦.

(٧) ٤/١٥٤١.

(٨) ٢/٤٠٣-٤٠٤.

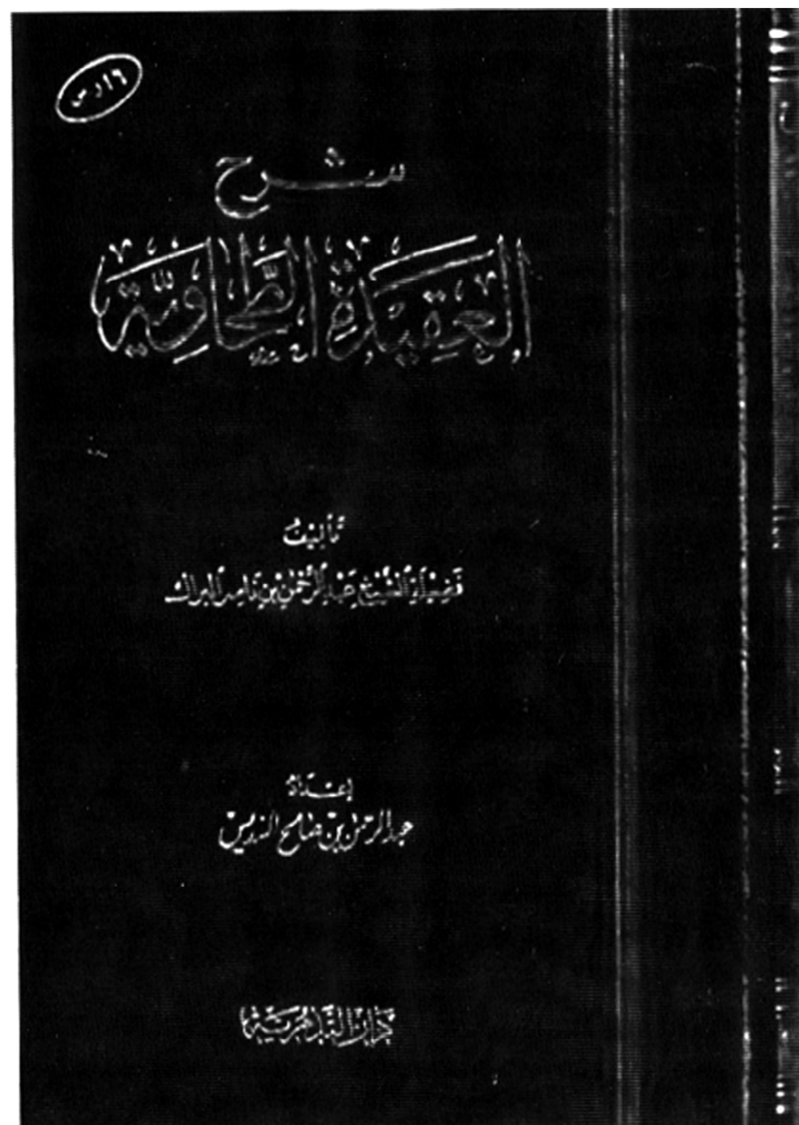
(٩) في «الميزان» ٤/٩.

→ **मुहम्मद बिन इब्राहीम वज़ीर यमानी** की **"अलअवासिम वल क़वासिम"** में है: हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها फ़रमाती हैं कि रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: "अली رضي الله عنه से कोई मुनाफ़िक़ मुहब्बत नहीं करता है और कोई मोमिन बुग्ज़ नहीं रखता है।"

☆ **तिर्मिज़ी** رحمه الله **कहते हैं कि यह रिवायत इस सनद से हसन ग़रीब है।**

☆ **इस किताब के मुहक़्क़िक़ शोएब अरनौवत कहते हैं :**

मैं कहता हूँ कि इस के रावी सिक़्क़ा (Trustworthy) हैं ।



وفي باب الإيمان والدين بين الحرورية والمعتزلة، وبين المرجئة والجهمية.

وفي أصحاب رسول الله ﷺ بين الروافض وبين الخوارج»(١).

والطحاوي رحمه الله أتى بالعبارات المتضمنة لمعتقد ومنهج أهل السنة والجماعة في أصحاب رسول الله ﷺ، حيث قال: «**ونحبُّ أصحاب رسول الله ﷺ**» وحب الصحابة رضي الله عنهم، هو من الحب في الله، والحب في الله واجب لكل المسلمين؛ فكل من آمن بالله ورسوله تجب محبته على قدر ما يعرف به من الإيمان والتقوى والعمل الصالح، وأحق الناس من ذلك الواجب هم أصحاب الرسول ﷺ؛ لما خصهم الله به من فضيلة صحبتهم للرسول ﷺ التي لا يشركهم فيها أحد ممن جاء بعدهم.

وقوله: «**ولا نُفْرِطُ في حب أحد منهم**».

الإفراط: الغلو وتجاوز الحد، والواجبُ الاعتدال والتوسط بعدم الإفراط والتفريط، فكل انحراف فإنه يعود إلى أحد الأمرين: إما انحراف بإفراط وتجاوز وغلو، أو تفريط وتقصير وجفاء، وكلاهما انحراف عن الصراط، والحق ما وافق الصراط المستقيم.

وقوله: «**ولا نتبرأ من أحد منهم**».

ولا نتبرأ من أحد منهم كما تفعل الروافض أو الخوارج؛ بل نواليهم جميعًا، وعند الرافضة مقولة: «لا ولاء إلا ببراء» فلا يكون الإنسان عندهم مواليًا لأهل بيت الرسول إلا إذا تبرأ من أبي بكر وعمر، فعندهم أن من والى أبا بكر وعمر؛ فقد أبغض عليًا، ومن أبغض عليًا فهو ناصبي.

نعم من أبغض عليًا فهو ناصبي هذا صحيح، لكن زعمهم: أن من والى أبا بكر وعمر فقد أبغض عليًا هذا عين الباطل؛ بل أهل السنة

(١) ص ١٧٧.

→ **“शरह अक़ीदा-ए-तहाविया”** में है:

“और हम किसी से तबर्रा नहीं करते हैं।

जिस ने हज़रत अली رضي الله عنه से बुग्ज़ किया वह नासिबी है।”

جامعة أم القرى
مركز البحث العلمي وإحياء التراث الإسلامي
كلية الشريعة والدراسات الإسلامية
مكة المكرمة



من تراثنا الإسلامي
الكتاب الثامن والعشرون

كتاب فضائل الصحابة

للإمام
أبي عبد الله أحمد بن محمد بن حنبل
(١٦٤ - ٢٤١ هـ)

حققه وخرج أحاديثه
وصي الله بن محمد عباس

الجزء الثاني

دافع اللواء غدا الى رجل يحبه الله ورسوله او [١] يحب الله ورسوله لا يرجع حتى [٢] يفتح له وبتنا طيبة انفسنا ان الفتح غد [٣] فلما اصبح رسول الله ﷺ صلى الغداة ثم قام قائما فدعا باللواء والناس على مصافهم فدعا عليا وهو ارمد فتفل في عينيه ودفع اليه اللواء وفتح له قال بريدة وانا فيمن تطاول لها .

(١٠١٠) حدثنا عبدالله قال حدثني ابي نا يحيى بن ابي بكير وابن آدم يعني يحيى قالا نا اسرائيل عن ابي اسحاق عن حبشي بن جناده قال ابن آدم السلولي وكان [٤] قد شهد حجة الوداع قال قال رسول الله ﷺ علي مني وانا منه ولا يقضي عني ديني الا انا او علي ، قال ابن آدم : ولا يؤدي عني الا انا او علي .

(١٠١١) حدثنا عبدالله قال حدثني ابي قال نا يحيى بن ابي بكير [٥] نا اسرائيل عن ابي اسحاق عن ابي عبدالله الجدلي قال دخلت على ام سلمة فقالت لي أيسب رسول الله ﷺ فيكم قلت معاذ الله او سبحان الله او كلمة نحوها ، قالت سمعت رسول الله ﷺ يقول : من سب عليا فقد سبني .

(١٠١٠) إسناده صحيح وإسرائيل سمع أبا إسحاق قبل اختلاطه . وهو في المسند (٤ : ١٦٤) وأخرجه النسائي في الكبرى كما في تحفة الأشراف (٣ : ١٣) من طريق يحيى بن آدم والترمذي والنسائي في الخصائص (ص ٢٠) وابن ماجه (١ : ٤٤) كلهم من طريق أبي إسحاق ، وذكره في الرياض النضرة (٣ : ١٧١) ونسبه للحافظ السلفي .

(١٠١١) إسناده صحيح .

وأبو عبدالله الجدلي الكوفي اسمه عبد بن عبد أو عبدالرحمن بن عبد تابعي ثقة يتشيع وثقه أحمد وابن معين وابن حبان والعجلي وقال ابن سعد يستضعف في الحديث وكان يتشيع .

التهذيب (١٢ : ١٤٢) .

(١) (ي) : و .

(٢) (ي) : يفتح الله .

(٣) كذا في الأصل مرفوعاً (غد) وهو جائز عربية قال في المساعد ١ . ٢٣٩ وربما رفع خبراً الزمان الموقوع في بعضه أي سواء كان معرفة أو نكرة نحو زيادة يوم الخميس أو يوم (بالرفع) والنصب أجود وأكثر من الرفع وهما جائزان جميعاً أ . هـ

(٤) (ي) : وكان صحبة الوداع .

(٥) (ي) : بكر .

→ इमाम अहमद ﷫ की किताब **"फ़ज़ाइलुल सहाबा"** में है: रसूलल्लाह ﷺ का इरशाद है: **"अली ﷛ मुझसे है और मैं अली ﷛ से, और मुझसे मेरा क़र्ज़ मेरे और अली ﷛ के अलावा कोई अदा नहीं कर सकता।"**

→ अबू अब्दुल्लाह जदली कहते हैं कि मैं हज़रत उम्मे सलमा ﵂ के पास आया तो आप ﵂ ने मुझ से फ़रमाया : "क्या तुम्हारे दरमियान रसूलल्लाह ﷺ को बुरा भला कहा जाता है?", मैं ने कहा: "अल्लाह की पनाह", या कहा : "अल्लाह ﷻ! की ज़ात पाक है", या इस तरह का कोई कलमा इज़्हार-ए-हैरत के लिए कहा, तो हज़रत उम्मे सलमा ﵂ ने फ़रमाया : **"मैं ने रसूलल्लाह ﷺ को फ़रमाते हुए सुना है कि जिसने अली ﷛ को बुरा भला कहा उसने मुझे बुरा भला कहा।"**

☆ **किताब के मुहक़्क़िक़ वसीअल्लाह बिन मुहम्मद अब्बास पहली रिवायत के मुतअल्लिक़ कहते हैं कि: इसकी सनद सहीह है, और इसराईल ने अबू इसहाक़ से इख़्तलात के ज़माने से पहले सुना है।**

☆ **और दूसरी रिवायत के बारे में कहते हैं कि: इस की सनद सहीह है।**

المستدرك على الصحيحين

للإمام الحافظ أبي عبد الله محمد بن عبد الله الحاكم النيسابوري

مع تضمينات الإمام الذهبي في التلخيص والميزان والعراقي في أماليه والمناوي في فيض القدير وغيرهم من العلماء الأجلاء

أول طبعة مرقمة الأحاديث ومقابلة على عدة مخطوطات

دراسة وتحقيق
مصطفى عبد القادر عطا

كتاب الهجرة، كتاب المغازي والسرايا، كتاب معرفة الصحابة

الجزء الثالث

منشورات
محمد علي بيضون
لنشر كتب السنة والجماعة
دار الكتب العلمية
بيروت - لبنان

الوهاب العبدي، ثنا يعلى بن عبيد، ثنا إسماعيل بن أبي خالد، عن قيس بن أبي حازم قال: لما بلغت عائشة رضي الله عنها بعض ديار بني عامر نبحت عليها الكلاب فقالت: أي ماء هذا؟ قالوا الحوأب قالت: ما أظنني إلا راجعة فقال الزبير: لا بعد تقدمي ويراك الناس ويصلح الله ذات بينهم قالت: ما أظنني إلا راجعة سمعت رسول الله ﷺ يقول: «كيف بإحداكن إذ نبحتها كلاب الحوأب».

٤٦١٤/ ٢١٢ ـ أخبرنا أبو العباس محمد بن أحمد المحبوبي، ثنا سعيد بن مسعود، ثنا عبد الله بن موسى، أنبأ إسرائيل، عن أبي إسحاق، عن هبيرة بن يريم وهانىء بن هانىء، عن علي رضي الله عنه قال: لما خرجنا من مكة اتبعتنا ابنة حمزة فنادت: يا عم يا عم فأخذت بيدها فناولتها فاطمة قلت دونك ابنة عمك فلما قدمنا المدينة اختصمنا فيها أنا وزيد وجعفر فقلت: أنا أخذتها وهي ابنة عمي وقال زيد ابنة أخي وقال جعفر ابنة عمي وخالتها عندي فقال رسول الله ﷺ لجعفر: «أشبهت خلقي وخلقي» وقال لزيد: «أنت أخونا ومولانا» وقال لي: «أنت مني وأنا منك ادفعوها إلى خالتها فإن الخالة أم» فقلت ألا تزوجها يا رسول الله؟ قال: «إنها ابنة أخي من الرضاعة».

هذا حديث صحيح الإسناد ولم يخرجاه بهذه الألفاظ إنما اتفقا على حديث أبي إسحاق عن البراء مختصراً. /

٤٦١٥/ ٢١٣ ـ أخبرنا أحمد بن كامل القاضي، ثنا محمد بن سعد العوفي، ثنا يحيى بن أبي بكير، ثنا إسرائيل، عن أبي إسحاق، عن أبي عبدالله الجدلي قال: دخلت على أم سلمة رضي الله عنها فقالت لي: أيسب رسول الله ﷺ فيكم فقلت معاذ الله أو سبحان الله أو كلمة نحوها فقالت: سمعت رسول الله ﷺ يقول: «من سب علياً فقد سبني».

هذا حديث صحيح الإسناد ولم يخرجاه وقد رواه بكير بن عثمان البجلي عن أبي إسحاق بزيادة ألفاظ.

٤٦١٦/ ٢١٤ ـ حدثنا أبو جعفر أحمد بن عبيد الحافظ بهمدان، ثنا أحمد بن موسى بن إسحاق التيمي، ثنا جندل بن والق، ثنا بكير بن عثمان البجلي قال: سمعت أبا

٤٦١٤ ـ قال في التلخيص: صحيح، واتفقا على حديث أبي إسحاق عن البراء.
٤٦١٥ ـ قال في التلخيص: صحيح. وافقه الذهبي
٤٦١٦ ـ سكت عنه الذهبي في التلخيص.

→ इमाम हाकिम رحمه الله की **“मुस्तदरक अल सहीहैन”** में है: अबू अब्दुल्लाह जदली कहते हैं कि मैं हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها के पास आया तो आप رضي الله عنها ने मुझसे फ़रमाया: “क्या तुम्हारे दरमियान रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم को बुरा भला कहा जाता है?” मैं ने कहा: “अल्लाह की पनाह”, या कहा: “अल्लाह سبحانه وتعالى ! की ज़ात पाक है,” या इस तरह का कोई कलमा इज़्हार ए-हैरत के लिए कहा, तो हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها ने फरमाया: **“मैं ने रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم को फ़रमाते हुए सुना है कि जिसने अली رضي الله عنه को बुरा भला कहा उसने मुझे बुरा भला कहा।”**

☆ **किताब के मुहक़्क़िक़ मुस्तफ़ा अब्दुल क़ादिर अता कहते हैं:**

तल्ख़ीस में कहा है कि यह रिवायत सहीह है।

تهذيب خصائص الإمام علي

للإمام الحافظ الحجة أبي عبد الرحمن
أحمد بن شعيب المعروف بالنسائي

حققه وخرجه

أبو إسحاق الحويني الأثري حجازي بن محمد بن شريف

وثائق وصواعق

دار الكتب العلمية
بيروت — لبنان

وجهه) على الناس ، وإن تفرقتما فكل واحد منكما على جنده ، فلقينا بني زيد — من أهل اليمن — وظفر المسلمون على المشركين ، فقاتلنا المقاتلة وسبينا الذرية ، فاصطفى علي جارية لنفسه من السبي ، وكتب بذلك خالد بن الوليد إلى النبي ﷺ ، وأمرني أن أنال منه ، قال : فدفعت الكتاب إليه ونلت من علي رضي الله عنه ، فتغير وجه رسول الله ﷺ ، وقال : لا تبغضن يا بريدة علياً ، فإن علياً مني وأنا منه وهو وليكم بعدي .

ذكر قول النبي ﷺ : من سبّ علياً فقد سبّني

(٨٦) أخبرنا أحمد بن شعيب ، قال : أخبرنا العباس بن محمد الدوري ، قال : حدثنا يحيى بن زكريا ، قال : أخبرنا إسرائيل ، عن أبي إسحاق ، عن أبي عبد الله الجدلي ، قال : دخلت على أم سلمة ، فقالت : أيُسب رسول الله ﷺ فيكم ؟ قلت : سبحان الله — أو معاذ الله — قالت : سمعت رسول الله ﷺ يقول : « من سبّ علياً فقد سبني » .

---

(٨٦) إسناده صحيح .

يحيى هو ابن أبي بكير من شيوخ الدوري . ووقع في « المطبوعة »: « يحيى بن زكريا » (ا). وأبو عبد الله الجدلي وثقه أحمد وابن معين وغيرهما .

والحديث أخرجه أحمد (٣٢٣/٦) والحاكم (١٢١/٣) من طريق يحيى ابن أبي بكير بإسناده سواه .

قال الحاكم : « صحيح الإسناد » ووافقه الذهبي .

قلت : أبو إسحاق مدلس وقد عنعنه .

ولكن تابعه السدي عن أبي عبد الله الجدلي .

أخرجه الطبراني في « الصغير » (٢١/٢) من طريق عيسى بن عبدالرحمن السلمي عن السدي به .

→ इमाम निसाई رحمہ اللہ की **"तहज़ीब-ए-ख़साइसुल इमाम अली"** में है कि: अबू अब्दुल्लाह जदली कहते हैं कि मैं हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا के पास आया तो आप رضی اللہ عنہا ने मुझसे फ़रमाया: "क्या तुम्हारे दरमियान रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को बुरा भला कहा जाता है?", मैं ने कहा: "अल्लाह عزوجل ! की पनाह," या कहा: "अल्लाह عزوجل ! की ज़ात पाक है", तो हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا ने फरमाया: **"मैं ने रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को फ़रमाते हुए सुना है कि जिसने अली رضی اللہ عنہ को बुरा भला कहा उसने मुझे बुरा भला कहा।"**

✯ **किताब के मुहक़्क़िक़ अबू इसहाक़ हुवैनी असरी कहते हैं कि इसकी सनद सहीह है।**

٢٦٦٢٤ ـ حدثنا عفان قال ثنا همام عن قتادة عن سعيد ـ يعني ابن المسيب ـ عن عامر بن أبي أمية عن أخته أم سلمة أن النبي ﷺ كان يصبح جنباً فيصوم ولا يفطر.

٢٦٦٢٥ ـ حدثنا عفان ثنا حماد بن سلمة قال ثنا علي بن زيد عن شهر بن حوشب عن أم سلمة أن رسول الله ﷺ قال لفاطمة «ائتيني بزوجك وابنيك» فجاءت بهم، فألقى عليهم كساء فدكياً، قال: ثم وضع يده عليهم، ثم قال «اللهم إن هؤلاء آل محمد؛ فاجعل صلواتك وبركاتك على محمد وعلى آل محمد إنك حميد مجيد» قالت أم سلمة: فرفعت الكساء لأدخل معهم، فجذبه من يدي وقال «إنك على خير».

٢٦٦٢٦ ـ حدثنا عبدالله بن بكر قال ثنا حاتم بن أبي صغيرة عن المهاجر بن القبطية عن أم سلمة عن رسول الله ﷺ أنه قال «ليخسفن بقوم يغزون هذا البيت ببيداء من الأرض» فقال رجل من القوم: يا رسول الله، وإن كان فيهم الكاره؟ قال «يبعث الله كل رجل منهم على نيته».

٢٦٦٢٧ ـ حدثنا يحيى بن أبي بكير قال ثنا إسرائيل عن أبي إسحق عن أبي[1] عبدالله الجدلي قال: دخلت على أم سلمة، فقالت لي: أيسب رسول الله ﷺ فيكم؟ قلت: معاذ الله ـ أو سبحان الله أو كلمة نحوها ـ قالت: سمعت رسول الله ﷺ يقول «من سب علياً فقد سبني».

(٢٦٦٢٤) إسناده صحيح، سبق في ٢٦٥٢٧.

(٢٦٦٢٥) إسناده حسن، سبق في ٢٦٤٧٩.

(٢٦٦٢٦) إسناده صحيح، سبق في ٢٦٥٨١.

(٢٦٦٢٧) إسناده صحيح، وقال الهيثمي ١٣٠/٩ رجاله رجال الصحيح.

(١) في ط (عن عبدالله الجدلي) وهو خطأ.

الجزء الثامن عشر

المسند

للإمام أحمد بن محمد بن حنبل

١٦٤ - ٢٤١

شرحه وصنع فهارسه حمزة أحمد الزين

دار الحديث القاهرة

→ **"मुस्नद अहमद"** में है: अबू अब्दुल्लाह जदली कहते हैं कि मैं हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها के पास आया तो आप رضي الله عنها ने मुझसे फ़रमाया: "क्या तुम्हारे दरमियान रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم को बुरा भला कहा जाता है?", मैं ने कहा: "अल्लाह की पनाह," या कहा: "अल्लाह سبحانه وتعالى! की ज़ात पाक है", या इस तरह का कोई कलमा इज़्हार-ए-हैरत के लिए कहा तो हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها ने फ़रमाया: **"मैं ने रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم को फ़रमाते हुए सुना है कि जिसने अली رضي الله عنه को बुरा भला कहा उसने मुझे बुरा भला कहा।"**

☆ **किताब के मुहक़्क़िक़ हम्ज़ी अहमद ज़ैन कहते हैं: इस की सनद सहीह है और इमाम हैसमी رحمه الله (९/१३०) ने कहा है कि इस के रिजाल सहीह के रिजाल हैं।**

مَجْمَعُ الزَّوَائِد وَمَنْبَعُ الفَوَائِد

تأليف

الحافظ نور الدين علي بن أبي بكر بن سليمان الهيثمي المصري

المتوفى سنة ٨٠٧ هـ

تحقيق

محمد عبد القادر أحمد عطا

الجزء التاسع

المحتوى:

كتاب المناقب

منشورات

محمد علي بيضون

لنشر كتب السنة والجماعة

دار الكتب العلمية

بيروت - لبنان

١٤٧٤٠ — وَعَنْ أَبِي عبد الله الجدلي، قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى أُمِّ سَلَمَةَ، فَقَالَتْ لِي: أَيُسَبُّ رَسُول اللَّهِ ﷺ فِيكُمْ؟ قُلْتُ: مَعَاذَ اللَّهِ، أَوْ سُبْحَانَ اللَّهِ، أَوْ كَلِمَةً نَحْوَهَا، قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُول اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: «مَنْ سَبَّ عَلِيًّا، فَقَدْ سَبَّنِي»[1].

رواه أحمد، ورجاله رجال الصحيح، غير أَبِي عبد الله الجدلي، وَهُوَ ثقة.

١٤٧٤١ — وَعَنْ أَبِي عبد الله الجدلي، قَالَ: قَالَتْ لي أُمُّ سَلَمَةَ: يَا أبا عبد اللَّه، أيسب رَسُول اللَّه ﷺ فيكم؟ قُلْتُ: أنى يسب رَسُول اللَّه ﷺ؟ قَالَتْ: أليس يسب عَلى ومن يحبه، وَقَدْ كَانَ رَسُول اللَّه ﷺ يحبه[2].

رواه الطبراني فِي الثلاثة، وَأَبو يعلى، ورجال الطبراني رجال الصحيح، غير أَبِي عبد اللَّه، وَهُوَ ثقة.

١٤٧٤٢ — وروى الطبراني بعده بإسناد رجاله ثقات إِلَى أُمِّ سَلَمَةَ عَنْ النَّبِي ﷺ قَالَ مِثْله[3].

١٤٧٤٣ — وَعَنْ كعب بن عجرة، قَالَ: قَالَ رَسُول اللَّهِ ﷺ: «لاَ تَسُبُّوا عَلِيًّا، فَإِنَّهُ مَمْسُوسٌ فِي ذَاتِ اللَّه»[4].

رواه الطبراني فِي الكبير والأوسط، وَفِيهِ سفيان بن بشر، أَوْ بشير، متأخر لَيْسَ هُوَ الَّذِي روى عَنْ أَبِي عبد الرحمن الجيلي، ولم أعرفه، وبقية رجاله وثقوا، وفي بعضهم ضعف.

١٤٧٤٤ — وَعَنْ أَبِي كثير، قَالَ: كُنْت جالسًا عِنْدَ الحسن بن عَلى، فجاءه رجل، فَقَالَ: لقد سب عِنْدَ معاوية عليًا سبًا قبيحًا، رجل يُقَالُ لَهُ: معاوية بن خديج، فلم يعرفه، قَالَ: إذا رأيته فائتني بِهِ، قَالَ: فرآه عِنْدَ دار عمرو بن حريث، فأراه إياه، قَالَ: أنت معاوية بن خديج؟ فسكت فلم يجبه ثلاثًا، ثُمَّ قَالَ: أنت الساب عليًا عِنْدَ ابن آكلة الأكباد، أما لئن وردت عَلَيْهِ الحوض، وما أراك ترده، لتجدنه مشمرًا حاسرًا عَنْ

(١) أخرجه الإمام أحمد في المسند (٣٢٣/٦)، وأورده المصنف في زوائد المسند برقم (٣٦٥٦)، والألباني في السلسلة الصحيحة (٢٨٨/٣).

(٢) أخرجه الطبراني في الكبير (٣٢٢/٢٣)، والأوسط برقم (٥٨٣٠)، والصغير برقم (٨٢٢).

(٣) أخرجه الطبراني في الكبير (٣٢٢/٢٣).

(٤) أخرجه الطبراني في الكبير (١٤٨/١٩)، والأوسط برقم (٩٣٥٩).

→ **“मजमाउल ज़वाइद व मम्बाउल फ़वाइद”** में है कि: अबू अब्दुल्लाह जदली कहते हैं कि मैं हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا के पास आया तो आप رضی اللہ عنہا ने मुझसे फ़रमाया: “क्या तुम्हारे दरमियान रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को बुरा भला कहा जाता है?”, मैं ने कहा: “अल्लाह ﷻ! की पनाह” या कहा: “अल्लाह ﷻ! की ज़ात पाक है”, या इस तरह का कोई कलमा इज़्हार-ए-हैरत के लिए कहा तो हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا ने फरमाया: **“मैं ने रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को फ़रमाते हुए सुना है कि जिसने अली رضی اللہ عنہ को बुरा भला कहा उसने मुझे बुरा भला कहा।”**

☆ **इसे इमाम अहमद رحمہ اللہ ने रिवायत किया है और अबू अब्दुल्लाह जदली के अलावा इसके तमाम रावी सहीह के रावी हैं और जदली भी सिक़्क़ा(Trustworthy) हैं।**

سِيَرُ أَعْلَامِ النُّبَلَاءِ

تصنيف

الإمام شمس الدين محمد بن أحمد بن عثمان الذهبي

المتوفى

٧٤٨هـ - ١٣٧٤م

الجزء العاشر

أشرف على تحقيق الكتاب وخرّج أحاديثه

شعيب الأرنؤوط

حقق هذا الجزء

محمد نعيم العرقسوسي

مؤسسة الرسالة

قلتُ: حَديثُه في كلّ الأُصول ، وفيه أدنى تَشيُّع .

أخبرنا أحمدُ بن عَبد الرحمن بن يوسف المُقرئ ، أخبرنا مُحمدُ بن إسماعيل ، أخبرنا يَحيى بن مَحمود ، أخبرتْنا فاطِمةُ بنتُ عَبد الله بن عَقِيل ، أخبرنا مُحمد بن عَبد الله ، أخبرنا أبو القاسِم الطَّبَراني ، أخبرنا مُحمد بن أحمد بن النَّضر الأزْدي ، حدثنا مالِكُ بن إسماعيل النَّهْدي ، حدثنا أسْبَاطُ بن نَصْر ، عن السُّدِّي ، عن صُبَيح مولى أُمِّ سَلَمة ، عن زَيد ابن أرْقَم ، أنَّ النبيَّ ﷺ قال لِعليٍّ وفاطِمةَ والحَسنِ والحُسين : « أنَا حَرْبٌ لِمَنْ حَارَبْتم ، سِلْمٌ لِمَنْ سَالمتُم » .

تفرَّد به أَسباط ، عن السُّدِّي . رَواهُ التِّرمذيُّ[1] عن سُليمان بن عَبد الجبَّار ، عَن علي بن قَادِم ، وابنُ ماجَة عن الحُلواني ، وغيره عن أبي غَسان ، جميعاً عن أَسْباط . وصُبَيح : قالَ التِّرمذي : ليس بمعروف .

أبو أحمد الحاكم : حدثنا الحُسينُ الغازي قال: سألتُ البخاريَّ عن أبي غسان قال: وعمَّاذا تَسألُ ؟ قُلت : التَّشيُّع . فقال: هو على مَذهبِ أهْل بَلده ، ولو رأيتُم عُبيدَ الله بنَ موسى ، وأبا نُعيم ، وجَماعَةَ مَشايخِنا الكوفيِّين ، لمَا سَألتُمونا عن أبي غَسان .

قلت: وقَد كان أبو نُعيم وعُبيد الله مُعظِّمين[2] لأبي بكرٍ وعُمر ، وإنما ينالان من مُعاوية وذَويه . رَضي اللهُ عن جَميع الصَّحابة .

(١) رقم (٣٨٧٩) ، وابن ماجه (١٤٥) ، وأخرجه الطبراني في « الكبير » برقم (٢٦١٩) ، وابن حبان (٢٢٤٤)، وله شاهد من حديث أبي هريرة عند أحمد وغيره يتقوى به تقدم في الجزء الثالث من هذا الكتاب ص ٢٥٧ .

(٢) في الأصل : « معظمان » وهو خطأ .

→ **“सैर-ए-आलाम अलनुबला (जुज़:10)”** में है: हज़रत ज़ैद बिन अरक़म फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह ने हज़रत अली , हज़रत फ़ातिमा , हज़रत हसन और हज़रत हुसैन से फ़रमाया:

“मेरी उस से जंग है जिससे तुम्हारी जंग है, और मेरी उससे सुलह है जिससे तुम्हारी सुलह है।”

☆ **मुहक़्क़िक़-ए-किताब शोएब अरनौवत कहते हैं कि: इमाम अहमद ने हज़रत अबू हुरैरह से इसकी एक शाहिद रिवायत नक़ल की है, जिससे यह रिवायत क़वी(Strong) हो जाती है।**

فضائل فاطمة

الجزء فيه فضائل سيدة النساء بعد مريم :

فاطمة بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم ورضي عنها

جمع

أبي حفص عمر بن أحمد بن عثمان بن أيوب بن شاهين

تحقيق

أبي إسحق الحويني

الناشر
مكتبة التوعية الإسلامية
للتحقيق والنشر والبحث العلمي
ت : ٣٥٨٦٨٦٠٥ / ٣٣٧٦٥٣٤٤

١٦- حَدَّثَنَا أحمدُ بنُ مُحَمَّدِ بنِ سَعِيدِ بنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ (الحرَّاني) (١) قَالَ: ثَنَا يَعْقُوبُ بنُ (يُوسُفَ) (٢) الضَّبِّيُّ ، ثَنَا نَصْرُ بنُ مُزَاحِمٍ ، ثَنَا عَبْدُاللهِ بنُ مُسْلِمٍ المُلَائِيُّ ، حَدَّثَنِي دَاوُدُ بنُ أَبِي عَوْفٍ أَبُو الجَحَّافِ ، عَنْ عَطِيَّةَ العَوْفِيِّ ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الخُدْرِيِّ قَالَ : لَمَّا دَخَلَ عَلِيٌّ بِفَاطِمَةَ جاء النبيُّ ﷺ أَرْبَعِينَ صَبَاحًا إِلَى (٣) بَابِهَا فَيَقُولُ : « أنا حَرْبٌ لِمَنْ حَارَبْتُمْ ، وَسِلْمٌ لِمَنْ سَالَمْتُمْ » .

= « صحيح على شرط مسلم » وهو كما قال .

• قلت : وفي الباب عن عائشة ، وسعد بن أبي وقاص ، وعمر بن أبي سلمة ربيب النبي ﷺ وأم سلمة ، وأبي سعيد الخدري ، وواثلة بن الأسقع ، وأبي الحمراء ، والحسن بن علي ؓ جميعًا ، وقد خرجت أحاديثهم في تخريجي على مسند «سعد بن أبي وقاص » لأبي بكر البزار وهو قيد الطبع والحمد لله .

١٦- ضعيفٌ .

شيخ المصنف هو ابن عقدة ، وهو متكلَّم فيه مع سعة حفظه ، وعبد الله بن مسلم الملائي لم أقف له على ترجمة .

وخالفه أبو عوانة وضاح بن عبد الله ، فرواه عن أبي الجحاف ، قال : حدثني إبراهيم بن عبد الرحمن بن صبيح ، عن جده صبيح قال : أتيت زيد بن أرقم فسألته، فحدثني أن نبي الله ﷺ مرَّ على عليٍّ وفاطمة وحسن وحسين عليهم السلام فقال : « أنا حرب لمن حاربتم ، سلم لمن سالمتم » .

أخرجه الدارقطنيُّ في « حديث أبي الطاهر الذهلي » (١٥٤) .

ووضاح أثبت وأشهر ، ولكن إبراهيم لم أعرفه.

وتابعه سليمان بن قرم ، عن أبي الجحاف ، عن إبراهيم بن عبد الرحمن بن صبيح، عن جده صبيح ، عن زيد بن أرقم . =

(١) كذا في الحاشية وصححها . وفي الأصل « الحداني » بالدال .

(٢) كتب في « الحاشية » : « موسى » .

(٣) في الأصل : «على» وصححت في الحاشية : «إلى» .

→ अबू हफ़्स उमर बिन अहमद बिन अय्यूब बिन शाहीन رحمه الله की **"फ़ज़ाइल-ए-फ़ातिमा"** में है: हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अली رضي الله عنه का हज़रत फ़ातिमा رضي الله عنها से निकाह हुआ तो हुज़ूर صلى الله عليه وآله وسلم चालीस दिन तक हज़रत फ़ातिमा رضي الله عنها के दरवाज़े पर आते और फ़रमाते:

"मेरी उससे जंग है जिससे तुम्हारी जंग है, और मेरी उससे सुलह है जिससे तुम्हारी सुलह है।"

سنن ابن ماجه

بشرح الإمام أبي الحسن الحنفي المعروف بالسندي
المتوفى ١١٣٨ هـ

وبحاشية

تعليقات مصباح الزجاجة في زوائد ابن ماجه
للإمام البوصيري المتوفى سنة ٨٤٠ هجرية

المجلد الأول

حقق أصوله وخرج أحاديثه على الكتب الستة
ورقمه حسب المعجم المفهرس وتحفة الأشراف
الشيخ خليل مأمون شيحا

دار المعرفة
بيروت - لبنان

عُثْمَانَ بْنِ خُثَيْمٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي رَاشِدٍ، أَنَّ يَعْلَى بْنَ مُرَّةَ حَدَّثَهُمْ: أَنَّهُمْ خَرَجُوا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ إِلَى طَعَامٍ دُعُوا لَهُ، فَإِذَا حُسَيْنٌ يَلْعَبُ فِي السِّكَّةِ، قَالَ: فَتَقَدَّمَ النَّبِيُّ ﷺ أَمَامَ الْقَوْمِ، وَبَسَطَ يَدَيْهِ، فَجَعَلَ الْغُلَامُ يَفِرُّ هٰهُنَا، وَيُضَاحِكُهُ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى أَخَذَهُ، فَجَعَلَ إِحْدَى يَدَيْهِ تَحْتَ ذَقَنِهِ، وَالأُخْرَى فِي فَأْسِ رَأْسِهِ فَقَبَّلَهُ، وَقَالَ: «حُسَيْنٌ مِنِّي، وَأَنَا مِنْ حُسَيْنٍ، أَحَبَّ اللَّهُ مَنْ أَحَبَّ حُسَيْنًا، حُسَيْنٌ سِبْطٌ مِنَ الأَسْبَاطِ».

١٤٤ م/٤ ـ حدثنا عَلِيُّ بْنُ مُحَمَّدٍ، ثنا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ مِثْلَهُ.

١٤٥/٥ ـ حدثنا الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ الْخَلَّالُ، وَعَلِيُّ بْنُ الْمُنْذِرِ، قَالَا: حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ، ثنا أَسْبَاطُ بْنُ نَصْرٍ، عَنِ السُّدِّيِّ، عَنْ صُبَيْحٍ مَوْلَى أُمِّ سَلَمَةَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِعَلِيٍّ وَفَاطِمَةَ وَالْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ: «أَنَا سِلْمٌ لِمَنْ سَالَمْتُمْ، وَحَرْبٌ لِمَنْ حَارَبْتُمْ».

١٤٥ ـ أخرجه الترمذي في كتاب: المناقب، باب: فضل فاطمة بنت محمد ﷺ (الحديث ٣٨٧٠)، تحفة الأشراف (٣٦٦٢).

الصغار إذا أراد أحدٌ أن يأخذهم. قوله: (في فأس رأسه) بالهمزة هو طرف مؤخرة المنتشر على القفا.

قوله: (حسين مني وأنا من حسين) أي: بيننا من الاتحاد والاتصال ما يصح أن يقال كل منهما من الآخر. (سبط) هو ولد الولد. خرج تأكيداً للاتحاد والبعضية، وتقريراً لها. ويحتمل أن يكون فائدة الإخبار بيان أنه حقيقٌ بذلك وأهلٌ له، وليس من الأولاد الذين ينفى نسبهم عن الآباء، كما قال تعالى: ﴿إنه ليس من أهلك﴾[1] وقيل: يطلق السبط على القبيلة، وهو المراد ها هنا، والمقصود الإخبار ببقائه وكثرة أولاده، وقيل: المراد أنه أمةٌ من الأمم في الخير، على حد قوله تعالى: ﴿إن إبراهيم كان أمة﴾[2] وفي الزوائد: إسناده حسنٌ، رجاله ثقاتٌ. وأخرج الترمذي من قوله: (حسين مني... إلخ) ولم يذكر القصة. قال: حديث حسن.

١٤٥ ـ قوله: (أنا سلم) بكسر السين، ويفتح: الصلح، أي: مصالحٌ. وكذا حربٌ أي: محاربٌ. وجعل صلى الله تعالى عليه وسلم نفسه نفس الصلح. والجواب مبالغةٌ، كقوله: رجلٌ عدلٌ.

(١) سورة: هود، الآية: ٤٦.
(٢) سورة: النحل، الآية: ١٢٠.

→ **“सुनन इब्न-ए-माजा”** में है: हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ﵁ फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अली ﵁, हज़रत फ़ातिमा ﵂ , हज़रत हसन ﵁ और हज़रत हुसैन ﵁ से फ़रमाया:

“मेरी उससे सुलह है जिससे तुम्हारी सुलह है,

और मेरी उस से जंग है जिससे तुम्हारी जंग है।”

أحكام القرآن

للإمام أبي بكر أحمد بن علي الرازي الجصاص

تحقيق

محمد الصادق قمحاوي

عضو لجنة مراجعة المصاحف بالأزهر الشريف

والمدرس بالأزهر الشريف

الجزء الرابع

دار إحياء التراث العربي   مؤسسة التاريخ العربي

بيروت - لبنان

١٤١٢هـ - ١٩٩٢م

باب حد المحاربين

قال الله تعالى [إنما جزاء الذين يحاربون الله ورسوله ويسعون في الأرض فساداً] الآية قال أبو بكر قوله تعالى [يحاربون الله] هو مجاز ليس بحقيقة لأن الله يستحيل أن يحارب وهو يحتمل وجهين أحدهما أنه سمى الذين يخرجون ممتنعين مجاهرين بإظهار السلاح وقطع الطريق محاربين لما كانوا بمنزلة من حارب غيره من الناس ومانعه فسموا محاربين تشبيها لهم بالمحاربين من الناس كما قال تعالى [ذلك بأنهم شاقوا الله ورسوله] وقوله [إن الذين يحادون الله ورسوله] ومعنى المشاقة أن يصير كل واحد منهما في شق يباين صاحبه ومعنى المحادة أن يصير كل واحد منهما في حد على وجه المفارقة وذلك يستحيل على الله تعالى إذ ليس بذي مكان فيشاق أو يحاد أو تجوز عليه المباينة والمفارقة ولكنه تشبيه بالمعادين إذ صار كل واحد منهما في شق وناحية على وجه المباينة وذلك منه على وجه المبالغة في إظهار المخالفة والمباينة فكذلك قوله تعالى [يحاربون الله] يحتمل أن يكونوا سموا بذلك تشبيها بمظهري الخلاف على غيرهم ومحاربتهم إياهم من الناس وخصت هذه الفرقة بهذه السمة لخروجها ممتنعة بأنفسها لمخالفة أمر الله تعالى وانتهاك الحريم وإظهار السلاح ولم يسم بذلك كل عاص لله تعالى إذ ليس بهذه المنزلة في الامتناع وإظهار المبالغة في أخذ الأموال وقطع الطريق ويحتمل أن يريد الذين يحاربون أولياء الله ورسوله كما قال تعالى [إن الذين يؤذون الله] والمعنى يؤذون أولياء الله ويدل على ذلك أنهم لو حاربوا رسول الله لكانوا مرتدين بإظهار محاربة رسول الله ﷺ وقد يصح إطلاق لفظ المحاربة لله ولرسوله على من عظمت جريرته بالمجاهرة بالمعصية وإن كان من أهل الملة والدليل عليه ما روى زيد بن أسلم عن أبيه أن عمر بن الخطاب رأى معاذاً يبكي فقال ما يبكيك قال سمعت رسول الله ﷺ يقول اليسير من الربا شرك ومن عادى أولياء الله فقد بارز الله بالمحاربة فأطلق عليهم اسم المحاربة ولم يذكر الردة ومن حارب مسلماً على أخذ ماله فهو معاد لأولياء الله تعالى بذلك وروى أسباط عن السدى عن صبيح مولى أم سلمة عن زيد بن أرقم أن النبي ﷺ قال لعلي وفاطمة والحسن والحسين أنا حرب لمن حاربتم سلم لمن سالمتم فاستحق من حاربهم اسم المحارب لله ولرسوله وإن لم يكن مشركا فثبت بما ذكرنا أن قاطع الطريق يقع عليه اسم المحارب لله عز وجل ولرسوله

→ अबू बक्र जसास राज़ी رحمه الله की **"अहकाम उल क़ुरआन"** में है: हज़रत ज़ैद बिन अरक़म رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने हज़रत अली رضي الله عنه , हज़रत फ़ातिमा رضي الله عنها , हज़रत हसन رضي الله عنه और हज़रत हुसैन رضي الله عنه से फ़रमाया:

"मेरी उससे जंग है जिससे तुम्हारी जंग है,

और मेरी उससे सुलह है जिस से तुम्हारी सुलह है।"

☆ **इससे पता चला कि इन हज़रात से जंग करने वाला अल्लाह سبحانه وتعالى और रसूल صلى الله عليه وآله وسلم से जंग करने वाला समझा जाएगा अगरचे मुशरिक न हो।**

المُسْتَدْرَك

على الصَّحِيحَين

للإمام الحافظ أبي عبد الله محمد بن عبد الله الحاكم النيسابوري

مع تضمينات الإمام الذهبي في التلخيص والميزان والعراقي في أماليه والمناوي في فيض القدير وغيرهم من العلماء الأجلاء

أول طبعة مرقمة الأحاديث ومقابلة على عدة مخطوطات

دراسة وتحقيق
مصطفى عبد القادر عطا

كتاب الهجرة، كتاب المغازي والسرايا، كتاب معرفة الصحابة

الجزء الثالث

منشورات
محمد علي بيضون
لنشر كتب السنة والجماعة
دار الكتب العلمية
بيروت - لبنان

الله ﷺ: «إني تارك فيكم الثقلين كتاب الله وأهل بيتي وإنهما لن يتفرقا حتى يردا علي الحوض».

هذا حديث صحيح الإسناد على شرط الشيخين ولم يخرجاه.

٤٧١٢/٣١٠ - حدثنا أبو جعفر أحمد بن عبيد بن إبراهيم الحافظ الأسدي بهمدان، ثنا إبراهيم بن الحسين بن ديزيل، ثنا إسماعيل بن أبي أويس، ثنا أبي، عن حميد بن قيس المكي، عن عطاء بن أبي رباح وغيره من أصحاب ابن عباس، عن عبد الله بن عباس رضي الله عنهما أن رسول الله ﷺ قال: «يا بني عبد المطلب إني سألت الله لكم / ثلاثاً أن يثبت قائمكم وأن يهدي ضالكم وأن يعلم جاهلكم وسألت الله أن يجعلكم جوداء نجداء رحماء فلو أن رجلاً صفن بين الركن والمقام فصلى وصام ثم لقي الله وهو مبغض لأهل بيت محمد دخل النار».

هذا حديث حسن صحيح على شرط مسلم ولم يخرجاه.

٤٧١٣/٣١١ - أخبرنا أحمد بن جعفر القطيعي، ثنا عبد الله بن أحمد بن حنبل، حدثني أبي، ثنا تليد بن سليمان، ثنا أبو الجحاف، عن أبي حازم، عن أبي هريرة رضي الله عنه قال: نظر النبي ﷺ إلى علي وفاطمة والحسن والحسين فقال: «أنا حرب لمن حاربكم وسلم لمن سالمكم».

هذا حديث حسن من حديث أبي عبد الله أحمد بن حنبل عن تليد بن سليمان فإني لم أجد له رواية غيرها.

وله شاهد عن زيد بن أرقم.

٤٧١٤/٣١٢ - حدثناه أبو العباس محمد بن يعقوب، ثنا العباس بن محمد الدوري، ثنا مالك بن إسماعيل، ثنا أسباط بن نصر الهمداني، عن إسماعيل بن عبد الرحمن السدي، عن صبيح مولى أم سلمة، عن زيد بن أرقم، عن النبي ﷺ أنه قال لعلي وفاطمة والحسن والحسين: «أنا حرب لمن حاربتم وسلم لمن سالمتم».

٤٧١٢ ـ قال في التلخيص: على شرط مسلم.
٤٧١٣ ـ سكت عنه الذهبي في التلخيص.
٤٧١٤ ـ سكت عنه الذهبي في التلخيص.

→ हाकिम رحمہ اللہ की **“मुस्तदरक”** में है: हज़रत अबू हुरैरह رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ , हज़रत फ़ातिमा رضی اللہ عنہا , हज़रत हसन رضی اللہ عنہ और हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ की तरफ़ देखा और फ़रमाया: **“मेरी उस से जंग है जिससे तुम्हारी जंग है, और मेरी उससे सुलह है जिससे तुम्हारी सुलह है।”**

✯ **तलीद बिन सुलेमान से अबू अब्दुल्लाह बिन हम्बल की यह रिवायत हसन(Good) है।**

الإحسان

في تقريب

صحيح ابن حبان

تأليف

الأمير علاء الدين علي بن بلبان الفارسي

المتوفى سنة ٧٣٩ هـ

المجلد الخامس عشر

حققه وخرج أحاديثه وعلق عليه

شعيب الأرنؤوط

مؤسسة الرسالة

٦٩٧٧ ــ أخبرنا الحَسَنُ بنُ سفيان، حدثنا أبو بكر بنُ أبي شيبة، حدَّثنا مالكُ بنُ إسماعيل، عن أسباط بنِ نَصْرٍ، عن السُّدِّي، عن صُبَيْح مولى أمِّ سلمة

عن زيد بنِ أرقم أن النبيَّ ﷺ قال لِفاطمةَ والحسنِ والحُسين: «أنا حَرْبٌ لِمَنْ حارَبَكُمْ، وَسِلْمٌ لِمَنْ سالَمَكُمْ»(١).

[٣ : ٨]

(١) أسباط بن نصر ذكره الذهبي في «الميزان» ١/ ١٧٥، فقال: وثقه ابن معين، وتوقف فيه أحمد، وضعفه أبو نعيم، وقال النسائي: ليس بالقوي، ثم ساق له هذا الحديث من طريقه، وقال بإثره: تفرد به. قلتُ: وصبيح مولى أم سلمة لم يوثقه غيرُ المؤلف، ولم يرو عنه غير اثنين، وقال فيه الترمذي كما سيأتي: ليس بمعروف.

وهو في «مصنف ابن أبي شيبة» ١٢/ ٩٧.

وأخرجه ابن ماجة (١٤٥) في المقدمة: باب في فضائل أصحاب رسول الله ﷺ، والطبراني (٢٦١٩) و (٥٠٣٠)، والحاكم ٣/ ١٤٩ من طرق عن أبي غسان مالك بن إسماعيل، بهذا الإسناد.

وأخرجه الترمذي (٣٨٧٠) في المناقب: باب فضل فاطمة بنت محمد ﷺ، من طريق علي بن قادم، والدولابي في «الكنى والأسماء» ٢/ ١٦٠ من طريق رجل لم يُسم، كلاهما عن أسباط بن نصر، به.

قال الترمذي: هذا حديث غريب إنما نعرفه من هذا الوجه، وصبيح مولى أم سلمة ليس بمعروف.

وأخرجه الطبراني (٢٦٢٠) و (٥٠٣١) من طريق سليمان بن قرم، عن أبي الجحاف، عن إبراهيم بن عبد الرحمن بن صبيح مولى أم سلمة، عن جده صبيح، به.

وفي الباب عن أبي هريرة عند أحمد في «المسند» ٢/ ٤٤٢، و «الفضائل» (١٣٥٠)، والطبراني (٢٦٢١)، والحاكم ٣/ ١٤٩، والخطيب ٧/ ١٣٧، وفيه تليد بن سليمان وهو ضعيف، ومع ذلك فقد قال الحاكم: حديث حسن من حديث أبي عبد الله أحمد بن حنبل عن تليد بن سليمان، وقال الهيثمي ٩/ ١٦٩: فيه تليد بن سليمان وفيه خلاف، وبقية رجاله رجال الصحيح!

→ अलाउद्दीन अली बिन बलबान फ़ारसी की **"अलएहसान फ़ी तक़रीब सही इब्न-ए-हब्बान"** में है कि: हज़रत ज़ैद बिन अरक़म رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ , हज़रत फ़ातिमा رضی اللہ عنہا , हज़रत हसन رضی اللہ عنہ और हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ से फ़रमाया:

"मेरी उससे जंग है जिससे तुम्हारी जंग है,

और मेरी उससे सुलह है जिससे तुम्हारी सुलह है।"

صحيح ابن حبان

بترتيب

ابن بلبان

تأليف

الأمير علاء الدين علي بن بلبان الفارسي

المتوفى سنة ٧٣٩هـ

المجلد الخامس عشر

حققه وخرج أحاديثه وعلق عليه

شعيب الأرنؤوط

مؤسسة الرسالة

ذِكْرُ البيانِ بأنَّ مَحبَّةَ المصطفى ﷺ مقرونةٌ بمحبة فاطمةَ والحسنِ والحسينِ وكذلك بغضُه ببغضهم

٦٩٧٧ ـ أخبرنا الحَسَنُ بنُ سفيان، حدثنا أبو بكر بنُ أبي شيبة، حدَّثنا مالكُ بنُ إسماعيل، عن أسباط بنِ نَصْرٍ، عن السُّدِّي، عن صُبَيح مولى أمِّ سلمة

عن زيد بنِ أرقم أن النبيَّ ﷺ قال لِفاطمةَ والحسنِ والحُسينِ: «أنا حَرْبٌ لِمَنْ حَارَبَكُم، وَسِلْمٌ لِمنْ سالَمَكُمْ»[1].

[٨:٣]

(1) أسباط بن نصر ذكره الذهبي في «الميزان» ١٧٥/١، فقال: وثقه ابن معين، وتوقف فيه أحمد، وضعفه أبو نعيم، وقال النسائي: ليس بالقوي، ثم ساق له هذا الحديث من طريقه، وقال بإثره: تفرد به. قلتُ: وصبيح مولى أم سلمة لم يوثقه غيرُ المؤلف، ولم يروِ عنه غير اثنين، وقال فيه الترمذي كما سيأتي: ليس بمعروف.

وهو في «مصنف ابن أبي شيبة» ٩٧/١٢.

وأخرجه ابن ماجة (١٤٥) في المقدمة: باب في فضائل أصحاب رسول الله ﷺ، والطبراني (٢٦١٩) و(٥٠٣٠)، والحاكم ١٤٩/٣ من طرق عن أبي غسان مالك بن إسماعيل، بهذا الإسناد.

وأخرجه الترمذي (٣٨٧٠) في المناقب: باب فضل فاطمة بنت محمد ﷺ، من طريق علي بن قادم، والدولابي في «الكنى والأسماء» ١٦٠/٢ من طريق رجل لم يُسم، كلاهما عن أسباط بن نصر، به.

قال الترمذي: هذا حديث غريب إنما نعرفه من هذا الوجه، وصبيح مولى أم سلمة ليس بمعروف.

وأخرجه الطبراني (٢٦٢٠) و(٥٠٣١) من طريق سليمان بن قرم، عن أبي الجحاف، عن إبراهيم بن عبد الرحمن بن صبيح مولى أم سلمة، عن جده صبيح، به.

وفي الباب عن أبي هريرة عند أحمد في «المسند» ٤٤٢/٢، و«الفضائل» (١٣٥٠)، والطبراني (٢٦٢١)، والحاكم ١٤٩/٣، والخطيب ١٣٧/٧، وفيه تليد بن سليمان وهو ضعيف، ومع ذلك فقد قال الحاكم: حديث حسن من حديث أبي عبد الله أحمد بن حنبل عن تليد بن سليمان، وقال الهيثمي ١٦٩/٩: فيه تليد بن سليمان وفيه خلاف، وبقية رجاله رجال الصحيح!

→ **“सही इब्न-ए-हब्बान बतरतीब इब्न-ए-बलबान”** में है कि: हज़रत ज़ैद बिन अरक़म رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने हज़रत अली رضي الله عنه , हज़रत फ़ातिमा رضي الله عنها , हज़रत हसन رضي الله عنه और हज़रत हुसैन رضي الله عنه से फ़रमाया:

“मेरी उस से जंग है जिससे तुम्हारी जंग है,

और मेरी उससे सुलह है जिससे तुम्हारी सुलह है।”

مجمع الزوائد ومنبع الفوائد

تأليف

الحافظ نور الدين علي بن أبي بكر بن سليمان الهيثمي المصري

المتوفى سنة ٨٠٧ هـ

تحقيق

محمد عبد القادر أحمد عطا

الجزء التاسع

المحتوى :

كتاب المناقب

منشورات
محمد علي بيضون
لنشر كتب السنة والجماعة
دار الكتب العلمية
بيروت - لبنان

رواه الطبراني، وَفِيهِ عُمَر بن شبيب المسلي، وَهُوَ ضعيف.

١٤٩٨٧ - وَعَنْ أَبِي سعيد الخدري، أن النَّبِي ﷺ جَاءَ إِلَى باب عَلِي، رَضِي اللَّه عَنْهُ، أربعين صباحًا بعدما دخل عَلَى فاطمة، فَقَالَ: «السلام عليكم أهل البيت ورحمة الله وبركاته، ﴿إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا﴾ [الأحزاب: ٣٣]»(١).

رواه الطبراني فِي الأوسط، وَفِيهِ من لم أعرفهم.

١٤٩٨٨ - وَعَنْ عَلِي، أنه دخل عَلَى النَّبِي ﷺ وَقَدْ بسط شملة، فجلس عليها هُوَ، وعلي، وفاطمة، والحسن، والحسين، ثُمَّ أخذ النَّبِي ﷺ بمجامعه، فعقد عليهم، ثُمَّ قَالَ: «اللَّهُمَّ ارْضَ عَنْهُمْ كَمَا أَنَا عَنْهُمْ رَاضٍ»(٢).

رواه الطبراني فِي الأوسط، ورجاله رجال الصحيح، غير عبيد بن طفيل، وَهُوَ ثقة، كنيته: أَبُو سيدان.

١٤٩٨٩ - وَعَنْ صبيح، قَالَ: كُنْتُ بباب النَّبِي ﷺ، فجاء عَلِي وفاطمة والحسن والحسين، فجلسوا ناحية، فخرج رَسُول اللَّه ﷺ إلينا، فَقَالَ: «إنكم عَلَى خير»، وعليه كساء خيبري، فجللهم بِهِ، وَقَالَ: «أنا حرب لمن حاربكم، سلم لمن سالمكم»(٣).

رواه الطبراني فِي الأوسط، وَفِيهِ من لم أعرفهم.

١٤٩٩٠ - وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: نَظَرَ النَّبِي ﷺ إِلَى عَلِيٍّ، وَالْحَسَنِ، وَالْحُسَيْنِ، وَفَاطِمَةَ فَقَالَ: «أَنَا حَرْبٌ لِمَنْ حَارَبَكُمْ وَسِلْمٌ لِمَنْ سَالَمَكُمْ»(٤).

رواه أحمد، والطبراني، وَفِيهِ تليد بن سليمان، وَفِيهِ خلاف، وبقية رجاله رجال الصحيح.

(١) أخرجه الطبراني فِي الأوسط برقم (٨١٢٥).
(٢) أخرجه الطبراني فِي الأوسط برقم (٥٥١٢).
(٣) أخرجه الطبراني فِي الأوسط برقم (٢٨٥٢).
(٤) أخرجه الإمام أحمد فِي المسند (٢/٤٤٢). والطبراني فِي الكبير (٣١١٣، ٥/٢٠٧)، والأوسط (٥/٢٠٧)، وأورده المصنف فِي زوائد المسند برقم (٣٧٠٢)، والحاكم فِي المستدرك (٣/١٤٩)، والكنى والأسماء للدولابي (٢/١٦٠)، وابن عساكر فِي تهذيب تاريخ دمشق (٤/٣١٩)، والسيوطي فِي الدر المنثور (٥/١٩٩)، وابن أبي شيبة برقم (٩٦١١٢)، والخطيب البغدادي فِي تاريخ بغداد (٧/١٣).

→ **"मजमाउलज़वाइद"** में है कि: हज़रत अबू हुरैरह ﵁ फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अली ﵁ , हज़रत फ़ातिमा ﵂ , हज़रत हसन ﵁ और हज़रत हुसैन ﵁ से फरमाया:

"मेरी उससे जंग है जिससे तुम्हारी जंग है और मेरी उससे सुलह है जिससे तुम्हारी सुलह है।"

✫ **इसे अहमद ﵀ और तबरानी ﵀ ने रिवायत किया है, इसकी सनद में तलीद बिन सुलेमान है, जो मुख़्तलिफ़ फ़िया है, बाक़ी दीगर रिवात सहीह के हैं।**

المُصَنَّف

لابنِ أبي شَيْبَة

للإمام أبي بكر عبد الله بن محمد بن أبي شيبة العبسي الكوفي

المولود سنة ١٥٩هـ ـ والمتوفى سنة ٢٣٥هـ

رضي الله عنه

حققه وقوَّم نصوصه وخرَّج أحاديثه

محمد عوَّامة

المجلد السابع عشر

تتمة الفضائل ـ السير

٣٢٥٨٦ ـ ٣٣٨٤٠

مؤسسة علوم القرآن — شركة دار القبلة

٣٢٨٤٥ ـ حدثنا مالك بن إسماعيل، عن أسباط بن نصر، عن السدِّي، عن صُبَيح مولى أم سلمة، عن زيد بن أرقم: أن النبي صلى الله عليه وسلم قال لفاطمة وعليٍّ وحسن وحسين: «أنا حربٌ لمن حاربكم، وسِلْم لمن سالَمَكم».

٣٢٨٤٥ ـ رواه المصنف في «مسنده» (٥٢٠) بهذا الإسناد، وسقط من مطبوعته قوله: «حدثنا مالك بن إسماعيل».

وصُبيح: غير معروف عند الترمذي، وذكره ابن حبان في «الثقات» ٤ : ٣٨٢.

ورواه ابن حبان (٦٩٧٧) من طريق المصنف، به.

ورواه ابن ماجه (١٤٥)، والحاكم ٣: ١٤٩ شاهداً، والطبراني في الصغير (٧٦٧)، والكبير ٣ (٢٦١٩)، ٥ (٥٠٣٠) من طريق مالك بن إسماعيل، به.

ورواه الترمذي من طريق أسباط (٣٨٧٠) وضعّفه.

ورواه أحمد في «المسند» ٢: ٤٤٢، و«فضائل الصحابة» (١٣٥٠)، ـ ومن طريقه الطبراني ٣ (٢٦٢١)، والحاكم ٣: ١٤٩ ـ عن تَليد بن سليمان، عن أبي الجَحّاف، عن أبي حازم، عن أبي هريرة، وتليد: رافضي ضعيف.

ورواه الطبراني في الكبير ٣ (٢٦٢٠)، والأوسط (٧٢٥٥) من طريق سليمان ابن قَرْم، عن أبي الجحاف، عن إبراهيم بن عبد الرحمن بن صُبَيح مولى أم سلمة، عن جده صبيح، به. وسليمان ضعيف لسوء حفظه، وإبراهيم: لم أقف له على ترجمة.

ورواه في الأوسط (٢٨٧٥) من طريق آخر عن إبراهيم بن عبد الرحمن بن صبيح، عن جده صبيح قال: «كنت بباب النبي صلى الله عليه وسلم فجاء علي...» ومن أجل الرواية ترجم الحافظ صُبيحاً في «الإصابة»، وليس لصُبيح مسند في المطبوع من «المعجم الكبير».

→ **“मुसन्निफ़ इब्न-ए-अबी शैबा”** में है: हज़रत ज़ैद बिन अरक़म رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत फ़ातिमा رضی اللہ عنہا , हज़रत अली رضی اللہ عنہ , हज़रत हसन رضی اللہ عنہ और हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ से फ़रमाया:

“मेरी उससे जंग है जिससे तुम्हारी जंग है, और मेरी उससे सुलह है जिससे तुम्हारी सुलह है।”

المُسْنَد

للإمام

أحمد بن محمد بن حنبل

١٦٤ ـ ٢٤١

شرحه وصنع فهارسه

حمزة أحمد الزين

الجزء التاسع

من الحديث ٨٧٨٣

إلى الحديث ١٠٩٢٦

دار الحديث

القاهرة

البول والغائط.

٩٦٥٩ـ حدثنا تَليد بن سليمان قال ثنا أبو الجحّاف عن أبي حازم عن أبي هريرة قال نظر النبي ﷺ إلى علي والحسن والحسين وفاطمة فقال «أنا حرب لمن حاربكم وسلم لمن سالمكم».

٩٦٦٠ـ حدثنا ابن إدريس قال سمعت سُهيل بن أبي صالح يذكر عن أبيه عن أبي هريرة قال قال رسول الله ﷺ: «إذا صليتم بعد الجمعة فصلوا أربعا فإن عجل بك شيء فصلِّ ركعتين، وركعتين إذا رجعت» قال ابن إدريس: ولا أدري هذا من حديث رسول الله ﷺ أم لا.

٩٦٦١ـ حدثنا مروان الفزاري قال أنا هشام الدستوائي عن يحيى

(٩٦٥٩) ـ إسناده ضعيف لأجل تليد بن سليمان ـ وهو رافضي ضعيف، وأبو الجحّاف داود ابن أبي عوف صدوق شيعي، والحديث مؤيد للشيعة إلا أن متنه رواه الترمذي ٦٩٩/٥ رقم ٣٨٧٠ في المناقب/ فضل فاطمة، وقال: غريب؛ وقال الحاكم ١٤٩/٣ حسن من طريق القطيعي عن أحمد وسكت الذهبي وأورد حديث الترمذي وسكت عنه أيضا ـ والحديث أيضا عند ابن حبان ٢٢٤٤ (موارد) وابن أبي شيبة ٩٦/٢، والطبراني في الكبير ٣١/٣ وفي ٢٠٧/٥.

(٩٦٦٠) ـ إسناده صحيح، وابن إدريس هو الشافعي الإمام، والحديث رواه أبو داود في الجمعة/ الصلاة بعد الجمعة عن أبي هريرة (٢٩٥/١رقم ١١٣١).

(٩٦٦١) ـ إسناده صحيح، أبو جعفر عن أبي هريرة هو المدني المؤذن ثقة ومروان الفزاري هو ابن معاوية ثقة حافظ، والباقون حفاظ أيضا. والحديث عند النسائي ٦٤/٨ رقم ٤٩٨٦ في القسامة / أفضل الأيمان، وابن حبان ٤٥٨/١٠ رقم ٤٥٩٧ (الإحسان) والطيالسي ٣٢٩ رقم ٢٥١٨ (منحة) وقوله «غزو لا غلول فيه» الغلول السرقة من المغنم في الحرب.

→ **“मुसनद अहमद”** में है कि: हज़रत अबू हुरैरह رضي الله عنه फरमाते हैं कि रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने हज़रत फ़ातिमा رضي الله عنها , हज़रत अली رضي الله عنه , हज़रत हसन رضي الله عنه और हज़रत हुसैन رضي الله عنه की तरफ़ देखा और फ़रमाया:

“मेरी उससे जंग है जिससे तुम्हारी जंग है, और मेरी उससे सुलह है जिससे तुम्हारी सुलह है।”

تاريخ مدينة دمشق

وذكر فضلها وتسمية من حلها من الأماثل أو اجتاز بنواحيها من وارديها وأهلها

تصنيف

الإمام العالم الحافظ أبي القاسم علي بن الحسن ابن هبة الله بن عبد الله الشافعي

المعروف بابن عساكر

٤٩٩هـ - ٥٧١هـ

دراسة وتحقيق

محب الدين أبي سعيد عمر بن غرامة العمروي

الجزء الرابع عشر

الحسن بن يحيى - حفص الأموي

دار الفكر

كساء عليهم ثم قال: «هؤلاء أهل بيتي
قالت أم سَلَمة: فقلت: يا رسول الله
ير»[١] [٣٤٥٢].

لي بن ثابت، عن أبي إسرائيل، عن

م بن الحَسَن، أنا أبُو عمر بن مهدي،
، نا عبد الرَّحمَن بن شريك، نا أبي،
ن مولى أم سَلَمة، عن أم سَلَمة زوج
نما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل
ل الله ﷺ أن أرسل إلى علي وفاطمة
ه اعتنق علياً بيمينه والحَسَن بشماله
لهم هؤلاء أهلي وعترتي فأذهب عنهم
: فأنا يا رسول الله؟ فقال: «إنك على

و الحُسَيْن بن النَّقُّور، أنا مُحَمَّد بن
مد بن عبد العزيز، نا عثمان بن أبي
و جعفر بن عبد الرَّحمَن البَجَلي، عن
ه الآية في النبي ﷺ وعلي وفاطمة
والحَسَن والحُسَيْن: ﴿إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت ويطهركم تطهيراً﴾.

أَخْبَرَنا أبُو الحَسَن علي بن المُسَلَّم، وأبُو القاسم بن السَّمرقندي، قالا: أنا أبُو نصر بن طِلاَّب، أنا أبُو الحُسَيْن بن جُمَيع، نا أبُو جعفر مُحَمَّد بن عمّار بن مُحَمَّد بن عاصم بن مُطيع العِجْلي بالكوفة، نا مُحَمَّد بن عبيد بن أبي هارون المقرىء، نا أبُو

(١) بالأصل: خبيري.
(٢) بالأصل «تطهير».
(٣) زيادة لازمة للإيضاح، انظر سياق السند في الحديث السابق.
(٤) الزيادة في الموضعين عن الترجمة المطبوعة.

حفص الأعشى، عن إسماعيل بن أبي خالد، عن مُحَمَّد بن سوقة عن من أخبره عن أم سَلَمة قال: كان النبي ﷺ عندنا منكساً رأسه، فعملت له فاطمة حريرة[١]، فجاءت ومعها حسن وحسين فقال لها النبي ﷺ: «أين زوجك؟ اذهبي فادعيه» فجاءت به فأكلوا فأخذ [النبي ﷺ][٢] كساء فأداره عليهم فأمسك طرفه بيده اليسرى ثم رفع يده اليمنى إلى السماء، وقال: «اللّهم هؤلاء أهل بيتي وحامتي، اللّهم أذهب عنهم الرجس وطهّرهم تطهيراً، [أنا][٣] حربٌ لمن حاربتم سلم لمن سالمتم، عدو لمن عاداكم» [٣٤٥٤].

أَخْبَرَنا أبُو القاسم بن السَّمرقندي، أنا أبُو القاسم إسماعيل بن مَسْعَدة، أنا أبُو القاسم حمزة بن يوسف، أنا أبُو أحْمَد عبد اللّه بن عدي[٤]، أنا عمر بن سنان، نا إبراهيم بن سعيد، نا حسين بن مُحَمَّد، عن سليمان بن قَرْم[٥]، عن عبد الجبار بن العباس، عن عمّار الدهني[٦]، عن عقرب، عن أم سَلَمة، قالت: نزلت هذه الآية في بيتي: ﴿إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت﴾ وفي البيت سبعة: رسول الله ﷺ وجبريل وميكائيل وعلي وفاطمة والحَسَن والحُسَيْن.

كذا في الأصل: عقرب وهو وهم، إنما هي عمرة.

أخبرناه عالياً على الصواب أبُو عبد اللّه الخلال، أنا أبُو القاسم السلمي، أنا أبُو بكر بن المقرىء، نا أبُو مُحَمَّد عبد الرَّحْمٰن بن عبد اللّه بن أخي الإمام بحلب، نا إبراهيم بن سعيد الجوهري، نا حسين ـ يعني المَرْوَزي ـ عن سليمان بن قَرْم[٥]، عن عبد الجبار بن عباس، عن عمّار الدهني[٧]، عن عمرة، عن أم سَلَمة، قالت: نزلت هذه الآية في بيتي: ﴿إنما يريد الله ليذهب عنكم الرجس أهل البيت﴾ وفي البيت سبعة: رسول الله ﷺ وجبريل وميكائيل وعلي وفاطمة والحَسَن والحُسَيْن.

(١) الحريرة: الحسا من الدسم والدقيق، وقيل: هو الدقيق الذي يطبخ بلبن. قال شمر: الحريرة من الدقيق، والخزيرة من النخال. وقال ابن الأعرابي: هي العصيدة ثم النخيرة ثم الحريرة ثم الحسو (اللسان: حرر).
(٢) الزيادة للإيضاح.
(٣) الزيادة للإيضاح عن الترجمة المطبوعة ص ٦٨ وبغية الطلب ٦/ ٢٥٧٦.
(٤) الخبر في الكامل في ضعفاء الرجال لابن عدي ٣/ ٢٥٧.
(٥) بالأصل «قوم» والمثبت عن ابن عدي.
(٦) عن ابن عدي وبالأصل «الذهلي».
(٧) بالأصل: الذهبي.

→ इब्न-ए-असाकिर رحمه الله की **"तारीख़-ए-दिमश्क़"** में है: हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया:

"मेरी उससे जंग है जिससे तुम्हारी जंग है,

और मेरी उससे सुलह है जिससे तुम्हारी सुलह है।

मैं उसका दुश्मन हूँ जो तुमसे दुश्मनी करेगा।"

صَحِيح

الجَامِع الصَّغِير وَزِيَادَتُه

(الفتح الكبير)

تأليف

محمد ناصر الدين الألباني

اطلب معه القسم الآخر:
" ضعيف الجامع الصغير وزيادته "
و" تبويب وترتيب أحاديث الصحيح على أبواب الفقه "
و" معجم غرائب ألفاظه "

المجلد الثاني

المكتب الإسلامي

حرف العين

٣٩٦٣ - ١٤٦٩ - «عائدُ المريضِ في مخرفةِ الجنَّة، فإذا جلسَ عندهُ غمرَتهُ الرحمةُ».

(صحيح) (البزار) عن عبد الرحمن بن عوف الصحيحة ١٩٢٩

٣٩٦٤ - «عائدُ المريضِ يَمشي في مخرفةِ الجنَّةِ حتى يرجعَ».

(صحيح) (م) عن ثوبان.

٣٩٦٥ - «عائشةُ زوجتي في الجنةِ».

(صحيح) (ابن سعد) عن مسلم البطين مرسلاً الصحيحة ١١٤٢

٣٩٦٦ - «عادى اللهُ من عادى علياً» (ابن منده) عن رافع مولى عائشة.

(صحيح) الصحيحة ١٧٥٠: حم، ن، حب، ك - زيد بن أرقم. ن، ابن ماجه، ك - سعد. عم - علي.

٣٩٦٧ - «عاريَّةٌ مؤدَّاةٌ».

(صحيح) (ك) عن ابن عباس. الصحيحة ٦١٢، الارواء ١٥١٣

٣٩٦٨ - «عاشوراءُ يومُ العاشرِ».

(صحيح) (قط، فر) عن أبي هريرة الضعيفة ٢٨٤٩

٣٩٦٩ - ١٤٧٠ - «عالجيها بكتابِ اللهِ».

(صحيح) (حب) عن عائشة. الصحيحة ١٩٣١

→ अल्लामा अलबानी की **"सहीहुल जामेअ अलसग़ीर व ज़ियादता"** में है: (हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया):

"अल्लाह ﷻ! उससे दुश्मनी करे जिसने अली رضي الله عنه से दुश्मनी की।"

✯ **अल्लामा अलबानी कहते हैं कि यह सहीह है।**

مجمع الزوائد ومنبع الفوائد

تأليف

الحافظ نور الدين علي بن أبي بكر بن سليمان الهيثمي المصري

المتوفى سنة ٨٠٧ هـ

تحقيق

محمد عبد القادر أحمد عطا

الجزء التاسع

المحتوى: كتاب المناقب

منشورات
محمد علي بيضون
لنشر كتب السنة والجماعة
دار الكتب العلمية
بيروت - لبنان

نفسى عَلَيْهِ، فَلَمَّا قَدِمْتُ الْمَدِينَةَ أَظْهَرْتُ شَكَايَتَهُ فِى الْمَسْجِدِ حَتَّى بَلَغَ ذَلِكَ رَسُول اللَّهِ ﷺ، فَدَخَلْتُ الْمَسْجِدَ ذَاتَ غُدْوَةٍ، وَرَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِى نَاسٍ مِنْ أَصْحَابِهِ، فَلَمَّا رَآنِى أَمَدَّنِى عَيْنَيْهِ، يَقُولُ: حَدَّدَ إِلَيَّ النَّظَرَ إِذَا جَلَسْتُ، قَالَ: «يَا عَمْرُو، وَاللَّهِ لَقَدْ آذَيْتَنِى»، قُلْتُ: أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أُوذِيَكَ يَا رَسُول اللَّهِ؟ قَالَ: «بَلَى، مَنْ آذَى عَلِيًّا فَقَدْ آذَانِى»[(١)].

رواه أحمد، والطبرانى باختصار، والبزار أخصر مِنْهُ، ورجال أحمد ثقات.

١٤٧٣٧ – وَعَنْ أَبِى رافع، قَالَ: بعث رَسُول اللَّه ﷺ عليًا أميرًا عَلَى اليمن، وخرج معه رجل من أسلم، يُقَالُ لَهُ: عمرو بن شاس، فرجع وَهُوَ يذم عليًا ويشكوه، فبعث إليه رَسُول اللَّه ﷺ، فَقَالَ: «اخسأ يَا عَمْرُو، هَلْ رَأَيْتَ مِنْ عَلِىٍّ جَوْرًا فِى حُكْمِهِ أَوْ أَثَرَةً فِى قَسْمِهِ؟»، قَالَ: اللَّهُمَّ لا، قَالَ: «فَعَلامَ تَقُولُ الَّذِى بَلَغَنِى؟»، قَالَ: بغضه، لا أم لَكَ، قَالَ: فغضب رَسُول اللَّه ﷺ حَتَّى عرف ذَلِكَ فِى وجهه، ثُمَّ قَالَ: «مَنْ أَبْغَضَهُ فَقَدْ أَبْغَضَنِى، وَمَنْ أَبْغَضَنِى فَقَدْ أَبْغَضَ اللَّهَ، وَمَنْ أَحَبَّهُ فَقَدْ أَحَبَّنِى، وَمَنْ أَحَبَّنِى فَقَدْ أَحَبَّ اللَّهَ تَعَالَى»[(٢)].

رواه البزار، وَفِيهِ رجال وثقوا عَلَى ضعفهم.

١٤٧٣٨ – وَعَنْ سعد بن أَبِى وقاص، قَالَ: كُنْت جالسًا فِى المسجد أنا ورجلين معى، فنلنا من عَلى، فأقبل رَسُول اللَّه ﷺ غضبان يعرف فِى وجهه الغضب، فتعوذت بالله من غضبه، فَقَالَ: «مَا لَكُمْ وَمَا لِى؟ مِنْ آذى عَلِيًّا فَقَدْ آذَانِى».

رواه أَبُو يعلى، والبزار باختصار، ورجال أَبِى يعلى رجال الصحيح، غير محمود بن خداش وقنان، وهما ثقتان.

١٤٧٣٩ – وَعَنْ أَبِى بَكْر بن خالد بن عرفطة، أنه أتى سعد بن مالك، فَقَالَ: بلغنى أنكم تعرضون عَلَى سب عَلى بالكوفة، فهل سببته؟ قَالَ معاذ: والذى نفس سعد بيده، لقد سمِعْت من رَسُول اللَّه ﷺ يَقُولُ فِى عَلِىّ شَيْئًا، لَوْ وُضِعَ المنشار عَلَى مفرقى مَا سببته أبدًا.

رواه أَبُو يعلى، وإسناده حسن.

---

(١) أخرجه الإمام أحمد فى المسند (٤٨٣/٣)، وأورده المصنف فى زوائد المسند برقم (٣٦٥٣)، وفى كشف الأستار برقم (٢٥٦١).

(٢) أورده المصنف فى كشف الأستار برقم (٢٥٥٩).

→ **“मजमा उल ज़वाइद”** में है: रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

“जिसने अली رضي الله عنه को ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी।”

☆ **इसे अबू यअली رحمه الله ने रिवायत किया है और अबू यअली رحمه الله के रिवात सहीह के रिवात हैं, सिवाए महमूद बिन ख़दाश और क़नान के और ये दोनों भी सिक़्क़ा(Trustworthy) हैं।**

١٢٩٩ – (مَنْ أحبَّ علياً فقد أحبَّني ، ومَنْ أحبني فقد أحبَّ اللهَ عزَّ وجلَّ ، ومَنْ أبغَضَ علياً فقد أبغَضَني ، ومن أبغَضَني فقد أبغضَ اللهَ عزَّ وجلَّ) .

رواه المخلص في « الفوائد المنتقاة » (١/٥/١٠) بسند صحيح عن أم سلمة قالت : أشهد أني سمعت رسول الله ﷺ يقول : فذكره .

وله شاهد من حديث سلمان مختصراً يرويه أبو عثمان النهدي قال : وقال رجل لسلمان : ما أشد حبك لعلي ! قال : سمعت رسول الله ﷺ يقول :

« من أحب علياً فقد أحبني ، ومن أبغض علياً فقد أبغضني » .

أخرجه الحاكم (٣ / ١٣٠) عن أبي زيد سعيد بن أوس الأنصاري ثنا عوف عن أبي عثمان النهدي ... وقال :

« صحيح على شرط الشيخين » . ووافقه الذهبي، وقد وهما فإن أبا زيد هذا لم يخرج له الشيخان شيئاً ، على ضعف ،فيه قال الحافظ :

« صدوق له أوهام » .

والحديث أورده السيوطي من ر
المناوي فقال بعد أن أقر الحاكم على قوله

« ورواه أحمد باللفظ المذبور .
وليس هو عنده باللفظ المذكور

« منْ سبَّ علياً فقد سبَّني »
ثم إن إسناده ضعيف أيضاً ، وا

١٣٠٠ – (إذا جَلَسَ إلـ
حتَّ تسمعَ من الآخر كما سَمِعْت
نيبَّنَ لك القضاء) .

أخرجه أبو داود (٢ / ١١٤ –

سلسلة
الأحاديث الصَّحيحة
وَشيءٌ مِنْ فِقهِهَا وَفوائِدِها

محمد ناصر الدين الألباني

المجلّد الثالث

١٠٠١ – ١٥٠٠

مكتبة المعارف للنشر والتوزيع
لصاحبها سعد بن عبد الرحمن الراشد
الرياض

→ अल्लामा अलबानी **"सिलसिलतुल अहादीसुल सहीहा"** में है:

"जिसने अली ﷺ से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की,

और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह ﷻ! से मुहब्बत की,

और जिसने अली ﷺ से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग़्ल्लज़ रखा,

और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा उसने अल्लाह ﷻ! से बुग्ज़ रखा।"

☆ **इसकी सनद सहीह है।**

كشف الأستار

عن زوائد البزار على الكتب الستة

تأليف

الحافظ نور الدين علي بن أبي بكر الهيثمي

٧٣٥ - ٨٠٧ هـ

تحقيق

المحدث الكبير العلامة الشيخ

حبيب الرحمن الأعظمي

الجزء الثالث

مؤسسة الرسالة

الغضَبَ في وجهه ، فقلت : يا رسول الله : بعثتني مع رجلٍ ، وأمرتني بطاعته ، ففعلتُ ما أرسلتُ به ، فقال : يا بريدة ! لا تقع في علي ، فإنه مني وأنا منه .

قلت ، هو في الصحيح ، وفي هذا زيادة .

قال البزار ، لا نعلم روي هذا عن عبد الله بن بريدة ، عن أبيه ، بإسنادٍ أحسن من هذا ، وقد رواه الجريري أيضاً عن عبد الله بن بريدة .

٢٥٦٤ - حدثنا موسى بن إسحاق ، ثنا جُبارة ابنُ مُغَلِّس ، ثنا إبراهيم بن عثمان ، عن الحكم ، عن مُجاهد ، عن ابن عَباس أن رسول الله صلى الله عليه وسلم بعث علياً وخالد بن الوليد واستعمل على المهاجرين والأنصار علياً ، واستعمل على الأعراب خالد بن الوليد ، وقال : إن كان قتال فأمر الناس إلى علي .

قال البزار : قد روي نحوه من وجوه بألفاظ ، ولا نعلمه يُروى عن ابن عباس إلا من هذا الوجه ، وإبراهيم بن عثمان كان قد أسنّ ، فلُقِّن أحاديث فلقنها فضُعِّف حديثه لذلك ، وهو أبو شَيبة ، وهو رديء الحفظ .

باب منه

٢٥٦٥ - حدثنا علي بن المنذر وإبراهيم بن زياد قالا : ثنا عبد الله بن نُمير ، عن عامر بن السِّبط ، عن أبي الجحّاف داود بن أبي عوف ، عن معاوية بن ثَعْلَبَة ، عن أبي ذرٍ قال : قال رسولُ الله صلى الله عليه وسلم لعلي : يا علي ! من فارقني فارقَ الله ، ومن فارقك يا علي فارقني .

قال البزار : لا نعلمه يروى عن أبي ذرٍ إلا بهذا الإسناد .

٢٥٦٣ قال الهيثمي : رواه الترمذي باختصار ، ورواه أحمد والبزار باختصار ، وفيه أجلح الكندي وثقه ابن معين وغيره ، وضعفه جماعة ، وبقية رجال أحمد رجال الصحيح (٩/١٢٨) .

٢٥٦٤

٢٥٦٥ قال الهيثمي : رواه البزار ورجاله ثقات (٩/١٣٥) .

→ **“कश्फ़ुल अस्तार”** में है कि: हुजूर ﷺ ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ से फ़रमाया:

“ऐ अली! رضی اللہ عنہ जिसने मुझे छोड़ा उसने अल्लाह سبحانہ وتعالیٰ ! को छोड़ा,

और जिसने ऐ अली رضی اللہ عنہ तुझे छोड़ा उसने मुझे छोड़ा।”

☆ **मुहक़्क़िक़ किताब हबीबुर्रहमान आज़मी कहते हैं: इमाम हैसमी رحمہ اللہ (९/१३५) ने कहा है कि इसे बाज़ार ने रिवायत किया है और इसके रावी सिक़्क़ा(Trustworthy) हैं।**

المُستدرَك على الصَّحيحَين

للإمام الحافظ أبي عبد الله محمد بن عبد الله الحاكم النيسابوري

مع تضمينات الإمام الذهبي في التلخيص والميزان والعراقي في أماليه والمناوي في فيض القدير وغيرهم من العلماء الأجلاء

أول طبعة مرقمة الأحاديث ومقابلة على عدة مخطوطات

دراسة وتحقيق
مصطفى عبد القادر عطا

كتاب الهجرة، كتاب المغازي والسرايا، كتاب معرفة الصحابة

الجزء الثالث

منشورات
محمد علي بيضون
لنشر كتب السنة والجماعة
دار الكتب العلمية
بيروت - لبنان

إسحاق التميمي يقول: سمعت أبا عبدالله الجدلي يقول: حججت وأنا غلام فمررت بالمدينة وإذا الناس عنق واحد فاتبعتهم فدخلوا على أم سلمة زوج النبي ﷺ فسمعتها تقول: يا شبيب بن ربعي فأجابها رجل جلف جاف لبيك يا أمتاه قالت يسب رسول الله ﷺ في ناديكم قال وأنى ذلك قالت: فعلي بن أبي طالب قال: إنا لنقول أشياء نريد عرض الدنيا قالت: فإني سمعت رسول الله ﷺ يقول: «من سب علياً فقد سبني ومن سبني فقد سب الله تعالى».

٤٦١٧/ ٢١٥ ـ أخبرنا أبو أحمد محمد بن محمد الشيباني من أصل كتابه، ثنا علي بن سعيد بن بشير الرازي بمصر، ثنا الحسن بن حماد الحضرمي، ثنا يحيى بن يعلى، ثنا بسام الصيرفي، عن الحسن بن عمرو الفقيمي، عن معاوية بن ثعلبة، عن أبي ذر رضي الله عنه قال: قال رسول الله ﷺ: «من أطاعني فقد أطاع الله ومن عصاني فقد عصى الله ومن أطاع علياً فقد أطاعني ومن عصى علياً فقد عصاني».

هذا حديث صحيح الإسناد ولم يخرجاه.

٤٦١٨/ ٢١٦ ـ أخبرني محمد بن أحمد بن تميم القنطري، ثنا أبو قلابة الرقاشي، ثنا أبو عاصم، عن عبدالله بن المؤمل، حدثني أبو بكر بن عبيدالله بن أبي مليكة، عن أبيه قال: جاء رجل من أهل الشام فسب علياً عند ابن عباس فحصبه ابن عباس/ فقال: يا عدو الله آذيت رسول الله ﷺ إن الذين يؤذون الله ورسوله لعنهم الله في الدنيا والآخرة وأعد لهم عذاباً مهيناً لو كان رسول الله ﷺ حياً لآذيته.

هذا حديث صحيح الإسناد ولم يخرجاه.

٤٦١٩/ ٢١٧ ـ حدثنا أبو العباس محمد بن يعقوب، ثنا أبو زرعة الدمشقي، ثنا محمد بن خالد الوهبي، ثنا محمد بن إسحاق.

وأخبرناه أحمد بن جعفر البزار، ثنا عبدالله بن أحمد بن حنبل، حدثني أبي، ثنا يعقوب بن إبراهيم بن سعد، ثنا أبي، عن محمد بن إسحاق، عن إبان بن صالح، عن الفضل بن معقل بن يسار، عن عبدالله بن نيار الأسلمي، عن عمرو بن شاس الأسلمي

٤٦١٧ ـ قال في التلخيص: صحيح.
٤٦١٨ ـ قال في التلخيص: صحيح.
٤٦١٩ ـ قال في التلخيص: صحيح.

وافقه الذهبي على التصحيح

→ इमाम हाकिम رحمه الله की **"मुस्तदरक"** में है कि हुज़ूर صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया:

"जिसने मेरी इताअत की उसने अल्लाह تعالیٰ ! की इताअत की और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह تعالیٰ ! की नफ़रमानी की और जिसने अली رضي الله عنه की इताअत की उसने मेरी इताअत की और जिसने अली رضي الله عنه की नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की।"

☆ **मुहक़्क़िक़-ए-किताब मुस्तफ़ा अब्दुल क़ादिर अता कहते हैं: तलख़ीस में है कि यह रिवायत सहीह है।**

سلسلة

الأحاديث الصحيحة

وشيء من فقهها وفوائدها

محمد ناصر الدين الألباني

المجلد الخامس

مكتبة المعارف للنشر والتوزيع
لصاحبها سعد بن عبد الرحمن الراشد
الرياض

...صحيح، غير أبي جعفر الخطمي، وهو ثقة».

...علي رضي الله عنه مرفوعاً نحوه.

...ابعيه لم يسم، فلعله حسنه لشواهده، بل هو بها ...١٢٣ و ٤ / ١١٨)، و «المشكاة» (٥٣٦٦).

...سعود جود إسناده المنذري ثم الهيثمي، وفيه نظر ... لكنه يصلح للشواهد.

...صري مرسلاً.

... / ٣٤٠) من طريقين عنه.

...١٨) برواية البزار عن أبي جحيفة فقط، ووقع فيه ...صح من هنا.

٢٤٨٧ - (إنَّ مِنْكم مَن يُقاتِلُ على تأويلِ هٰذا القُرآنِ، كما قاتَلْتُ على تَنْزيلِه، فاسْتَشْرَفْنا وفينا أبو بكرٍ وعمرُ، فقال: لا، ولكنَّهُ خاصِفُ النَّعْلِ. يعني علياً رضيَ الله عنه).

أخرجه النسائي في «خصائص علي» (ص٢٩)، وابن حبان (٢٢٠٧)، والحاكم (٣ / ١٢٢ - ١٢٣)، وأحمد (٣ / ٣٣ و٨٢)، وأبو يعلى (١ / ٣٠٣ - ٣٠٤)، وأبو نعيم في «الحلية» (١ / ٦٧)، وابن عساكر (١٢ / ١٧٩ / ٢ - ١٨٠ / ٢) من طرق عن إسماعيل بن رجاء الزبيدي عن أبيه قال: سمعت أبا سعيد الخدري يقول:

كنا جلوساً ننتظر رسول الله ﷺ، فخرج علينا من بعض بيوت نسائه، قال: فقمنا معه، فانقطعت نعله، فتخلف عليها علي يخصفها، فمضى رسول الله ﷺ ومضينا معه، ثم قام ينتظره، وقمنا معه، فقال: (فذكره)، قال: فجئنا نبشره، قال: وكأنه قد سمعه.

ولفظ الحاكم وغيره:

«فلم يرفع رأسه، كأنه قد كان سمعه من رسول الله ﷺ»، وقال:

«صحيح على شرط الشيخين»، ووافقه الذهبي.

قلت: وهذا من أوهامهما، فإن إسماعيل بن رجاء وأباه لم يخرج لهما البخاري، فهو على شرط مسلم وحده.

ويقابل هذا الوهم قول الهيثمي في «مجمع الزوائد» (٩ / ١٣٣ - ١٣٤):

«رواه أحمد، ورجاله رجال الصحيح، غير فطر بن خليفة، وهو ثقة».

قلت: فمن عادة الهيثمي في مثل هذا الإسناد أن يطلق قوله: «ورجاله رجال الصحيح»، ولا يستثني؛ لأن فطراً هذا من رجال البخاري، إلا أن الدارقطني قد قال فيه:

«لم يحتج به البخاري».

وصرح الخزرجي وغيره أن البخاري يروي له مقروناً بآخر، لكنه قد توبع كما أشرت إلى ذلك في أول التخريج بقولي: «... من طرق». فالحديث صحيح لا ريب فيه.

(تنبيه): قد خبط عبد الحسين الشيعي في «مراجعاته» (ص١٨٠) في تخريج هذا الحديث خبطاً عجيباً، فقال بعدما عزاه للحاكم وأحمد:

«وأخرجه البيهقي في «شعب الإيمان»، وسعيد بن منصور في «سننه»، وأبو نعيم في «حليته»، وأبو يعلى في «السنن»، ٢٥٨٥ في ص١٥٥ من الجزء ٦ من (الكنز)».

قلت: وهذا مما يدل على جهله البالغ بكتب الحديث، وقلة تحقيقه، فإن الحديث في «الكنز» الذي أشار إليه مرموز له فيه بـ «حم ع هب، ك حل ص». وقد وقع في رمز (هب ص) تصحيف، والصواب (حب، ض) كما في «الجامع الكبير» للسيوطي (١ / ٢٢٣ / ٢)، وبناءً على ذلك التصحيف الذي لم يتنبه له الشيعي جاء منه ذلك العزو الذي لا أصل له: «البيهقي في شعب الإيمان وسعيد بن منصور في سننه»!

→ अल्लामा अलबानी की **"सिलसिलतुल अहादीसुल सहीहा"** (५) में है: हुजुर ﷺ ने फ़रमाया :

"तुम में से एक शख़्स क़ुरआन की तावील पर जंग करेगा जैसे मैं ने इसके नुज़ूल पर जंग की थी", हम ने झाँक कर देखा जबकि हमारे दरमियान हज़रत अबूबक्र رضي الله عنه और हज़रत उमर رضي الله عنه भी थे, तो आप ﷺ ने फ़रमायाः "नहीं, लेकिन वह जूता सीने वाला या'नि हज़रत अली رضي الله عنه ।"

☆ **इसे इमाम निसाई رحمه الله ने "ख़साइस-ए-अली (स० २९)", इब्न-ए-हब्बान رحمه الله (२२०७), इमाम हाकिम رحمه الله (३/१२२-१२३), अहमद رحمه الله (३/ ३३-८२), अबू यअली رحمه الله (१/३०३-३०४), अबू नईम رحمه الله ने हुलिया (१६७) में, इब्न-ए-असाकिर رحمه الله (१२/१७९, २/१८०) ने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه से रिवायत किया है।**

☆ **यह सही है और शेख़ैन(इमाम बुख़ारी رحمه الله व इमाम मुस्लिम رحمه الله) की शर्त के मुताबिक़ है, ज़हबी ने इसकी मुवाफ़िक़त की है।**

صحيح ابن حبان

بترتيب

ابن بلبان

تأليف

الأمير علاء الدين علي بن بلبان الفارسي

المتوفى سنة ٧٣٩ هـ

الجلد الخامس عشر

حققه وخرج أحاديثه وعلق عليه

شعيب الأرنؤوط

مؤسسة الرسالة

ذكرُ قتالِ عليّ بن أبي طالب رضي الله عنه على تأويلِ القُرآن كقتالِ المصطفى ﷺ على تنزيله

٦٩٣٧ ـ أخبرنا أحمدُ بنُ علي بن المُثنى، حدثنا عثمانُ بنُ أبي شيبة، حدثنا جريرٌ، عن الأعمش، عن إسماعيلَ بن رجاء، عن أبيه

عن أبي سعيدٍ الخُدْريِّ قال: سمعتُ رسول الله ﷺ يقول: «إنَّ مِنكُم مَنْ يُقاتِلُ عَلَى تأويلِ القُرآنِ كما قاتلتُ عَلَى تنزيلهِ»، قال أبو بكر: أنا هُوَ يا رَسُولَ الله؟ قال: «لا»، قال عمر: أنا هُو يا رسولَ الله؟ قال: «لا، ولكنْ خاصِفُ النَّعْلِ»، قال: وكان أعطى علياً نعلةً يخصفه[1] [٣: ١]

---

(١) إسناده صحيح على شرط مسلم. جرير: هو ابن عبد الحميد، وهو في «مسند أبي يعلى» (١٠٨٦).

وأخرجه النسائي في «الخصائص» (١٥٦) عن إسحاق بن إبراهيم ومحمد بن قدامة، كلاهما عن جرير، بهذا الإسناد.

وأخرجه القطيعي في زوائده على «الفضائل» لأحمد (١٠٨٣)، والحاكم ١٢٢/٣، والبغوي (٢٥٥٧)، وابن الجوزي في «العلل المتناهية» ٢٣٩/١ من طرق عن الأعمش، به. وضعفه ابن الجوزي بإسماعيل بن رجاء ظناً منه أنه إسماعيل بن رجاء الحصني الذي ضعفه ابن حبان والدارقطني. وهذا وهم منه رحمه الله، فإسماعيل هذا هو الزبيدي الثقة الذي خرج له مسلم في «صحيحه»، نبه على ذلك الإمام الذهبي في «تلخيص العلل المتناهية».

وأخرجه أحمد في «المسند» ١٩٩/١ ـ ٢٠٠، وفي «الفضائل» (٩٢٢) و(١٠١٣)، وفي «الزهد» ص ١٣٣، وابن أبي شيبة ٧٥/١٢ عن وكيع، عن إسرائيل، عن أبي إسحاق، عن عمرو بن حبشي، قال: خطبنا الحسن بن علي...

→ **“सही इब्न-ए-हब्बान बतरतीब इब्न-ए-बलबान”** में है कि: हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم को फ़रमाते हुए सुना: “तुम में से एक शख़्स क़ुरआन की तावील पर जंग करेगा जैसे मैं ने इसके नुज़ूल पर जंग की थी”, हज़रत अबूबक्र رضي الله عنه ने कहा: “मैं या रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ?” आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: “नहीं”, और हज़रत उमर رضي الله عنه ने फ़रमाया: “मैं या रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ?”, तो आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: “नही”, लेकिन वह जूता सीने वाला या’नी हज़रत अली رضي الله عنه । “रावी कहते है कि आप صلى الله عليه وآله وسلم ने हज़रत अली رضي الله عنه को अपना जूता सीने के लिए दिया था। (तो आप صلى الله عليه وآله وسلم ने उनकी तरफ़ इशारा फ़रमाया)।”

☆ **मुहक़्क़िक़-ए-किताब शोएब अरनौवत कहते हैं: इसकी सनद सहीह है, मुस्लिम की शर्त पर है, मुसनद यअली (१०८६) में भी यह रिवायत मौजूद है।**

﴿لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْ أَنْفُسِهِمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ﴾ [آل عمران/الآية ١٦٤].

صحيح مسلم

للإمام أبي الحسين مسلم بن الحجاج
القشيري النيسابوري
٢٠٦ - ٢٦١ هـ

لو ان اهل الحديث يكتبون مائتي سنة الحديث
فمدارهم على هذا المسند

صنفت هذا المسند الصحيح من ثلاثمائة ألف حديث مسموعة
مسلم بن الحجاج

طبعة معتنى بها مرقمة
الأحاديث مع الفهارس

دار المغني

الصَّبَّاحِ). حَدَّثَنَا يُوسُفُ، أَبُو سَلَمَةَ الْمَاجِشُونُ. حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُنْكَدِرِ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لِعَلِيٍّ: «أَنْتَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى. إِلاَّ أَنَّهُ لاَ نَبِيَّ بَعْدِي» [خ:٤٤١٦].

قَالَ سَعِيدٌ: فَأَحْبَبْتُ أَنْ أُشَافِهَ بِهَا سَعْداً. فَلَقِيتُ سَعْداً. فَحَدَّثْتُهُ بِمَا حَدَّثَنِي عَامِرٌ. فَقَالَ: أَنَا سَمِعْتُهُ. فَقُلْتُ: آنْتَ سَمِعْتَهُ؟ فَوَضَعَ إِصْبَعَيْهِ عَلَى أُذُنَيْهِ فَقَالَ: نَعَمْ. وَإِلاَّ. فَاسْتَكَّتَا.

٣١-(٠٠٠) وحدثنا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ. حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ عَنْ شُعْبَةَ. ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى وَ ابْنُ بَشَّارٍ. قَالاَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ. حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ مُصْعَبِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ. قَالَ: خَلَّفَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ، فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ. فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ تُخَلِّفُنِي فِي النِّسَاءِ وَالصِّبْيَانِ؟ فَقَالَ «أَمَا تَرْضَى أَنْ تَكُونَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى؟ غَيْرَ أَنَّهُ لاَ نَبِيَّ بَعْدِي».

(٠٠) حدثنا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُعَاذٍ. حَدَّثَنَا أَبِي. حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، فِي هَذَا الإِسْنَادِ.

٣٢-(٢٤٠٤) حدثنا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ وَ مُحَمَّدُ بْنُ عَبَّادٍ (وَتَقَارَبَا فِي اللَّفْظِ) قَالاَ: حَدَّثَنَا حَاتِمٌ (وَهُوَ ابْنُ إِسْمَاعِيلَ) عَنْ بُكَيْرِ بْنِ مِسْمَارٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ أَبِيهِ، قَالَ: أَمَرَ مُعَاوِيَةُ بْنُ أَبِي سُفْيَانَ سَعْداً فَقَالَ: مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسُبَّ أَبَا التُّرَابِ؟ فَقَالَ: أَمَّا مَا ذَكَرْتُ ثَلاَثاً قَالَهُنَّ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَلَنْ أَسُبَّهُ. لأَنْ تَكُونَ لِي وَاحِدَةٌ مِنْهُنَّ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ حُمْرِ النَّعَمِ. سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ لَهُ، خَلَّفَهُ فِي بَعْضِ مَغَازِيهِ، فَقَالَ لَهُ عَلِيٌّ: يَا رَسُولَ اللَّهِ خَلَّفْتَنِي مَعَ النِّسَاءِ وَالصِّبْيَانِ؟ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: «أَمَا تَرْضَى أَنْ تَكُونَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى. إِلاَّ أَنَّهُ لاَ نُبُوَّةَ بَعْدِي». وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ يَوْمَ خَيْبَرَ: «لأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ رَجُلاً يُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ، وَيُحِبُّهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ» قَالَ: فَتَطَاوَلْنَا لَهَا فَقَالَ «ادْعُوا لِي عَلِيّاً» فَأُتِيَ بِهِ أَرْمَدَ. فَبَصَقَ فِي عَيْنِهِ وَدَفَعَ الرَّايَةَ إِلَيْهِ. فَفَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ. وَلَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ. {فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ} (٣آل عمران الآية: ٦١) دَعَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ عَلِيّاً وَفَاطِمَةَ وَحَسَناً وَحُسَيْناً فَقَالَ: «اللَّهُمَّ هَؤُلاَءِ أَهْلِي».

(٠٠٠) حدثنا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ. حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ عَنْ شُعْبَةَ. ح وَحَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى وَ ابْنُ بَشَّارٍ. قَالاَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ. حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ. سَمِعْتُ

→ **"सहीह मुस्लिम"** में है कि: हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने हज़रत साद رضي الله عنه से कहा: "तुम अबू तुराब (अली رضي الله عنه) को बुरा भला क्यूँ नहीं कहते?", हज़रत साद رضي الله عنه ने जवाब दिया: "रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने उनके बारे में तीन बातें ऐसी इरशाद फ़रमाई हैं कि मैं उन्हें बुरा भला नहीं कह सकता।"

فتح المنعم

شرح صحيح مسلم

تابع كتاب الطب والمرض
كتاب الأدب من الألفاظ وغيرها
كتاب الشعر - كتاب الرؤيا - كتاب الفضائل
كتاب البر والصلة والآداب

الجزء التاسع

الأستاذ الدكتور
موسى شاهين لاشين

دار الشروق

التشبيه ليس أخوة النسب قطعا، وليس النبوة المشتركة بين موسى وهارون، فهي منفية بلفظ الحديث، فدل ذلك على أنه الخليفة في غيابه، كما قال موسى لأخيه هارون: اخلفني في قومي، فعلى كان المستحق للخلافة من بعده. هكذا يفهم بعض الشيعة، ويجيب أهل السنة بأن هارون المشبه به إنما كان خليفة في حياة موسى، حين ذهب لميقات ربه، للمناجاة لا بعد موته، لأنه مات قبل موسى بالاتفاق وقبل وفاة موسى بنحو أربعين سنة على المشهور، فالتشبيه إنما هو في قيام عليٍّ على المدينة في فترة غياب الرسول ﷺ عنها في هذه الغزوة فقط، فقد أقام صلى الله عليه وسلم غيره على المدينة في غير هذه الغزوة.

(قال سعيد: فأحببت أن أشافه بها سعدا، فلقيت سعدا، فحدثته بما حدثني عامر فقال: أنا سمعته.فقلت: آنت سمعته؟ فوضع إصبعيه على أذنيه، فقال: نعم، وإلا فاستكتا) أصل الإسناد: عن سعيد بن المسيب عن عامر بن سعد بن أبي وقاص عن أبيه قال...إلخ، فسعيد استوثق من سعد نفسه ما سمعه من ابنه، وقول سعد « وإلا فاستكتا » بتشديد الكاف، دعاء على أذنيه بالصمم إن لم تكونا سمعتا ما أخبر به أنه سمعه، يقال: استك أي انسد، واستكت مسامعه أي صمت.

(أمر معاوية بن أبي سفيان سعدا) المأمور به محذوف، لصيانة اللسان عنه، والتقدير: أمره بسب علي ﷺ، وكان سعد قد اعتزل الفتنة، [حرب علي مع خصومه]، ولعله اشتهر عنه الدفاع عن علي.

(فقال: ما منعك أن تسب أبا التراب)؟ معطوف على محذوف، والتقدير: أمر معاوية سعدا أن يسب عليا، فامتنع، فقال له: ما منعك؟

ويحاول النووي تبرئة معاوية من هذا السوء، فيقول: قال العلماء: الأحاديث الواردة التي في ظاهرها دخل على صحابي يجب تأويلها، قالوا: ولا يقع في روايات الثقات إلا ما يمكن تأويله فقول معاوية هنا ليس فيه تصريح بأنه أمر سعدا بسبه، وإنما سأله عن السبب المانع له من السب، كأنه يقول هل امتنعت تورعا؟ أو خوفا؟ أو غير ذلك؟ فإن كان تورعا وإجلالا له عن السب، فأنت مصيب محسن، وإن كان غير ذلك فله جواب آخر ولعل سعدا كان في طائفة يسبون، فلم يسب معهم، وعجز عن الإنكار عليهم، فسأله هذا السؤال، قالوا: ويحتمل تأويلا آخر، أن معناه: ما منعك أن تخطئه في رأيه واجتهاده؟ وتظهر للناس حسن رأينا واجتهادنا، وأنه أخطأ.اهـ

وهذا تأويل واضح التعسف والبعد، والثابت أن معاوية كان يأمر بسب علي، وهو غير معصوم، فهو يخطئ، ولكننا يجب أن نمسك عن انتقاص أي من أصحاب رسول الله ﷺ، وسب عليٍّ في عهد معاوية صريح في روايتنا التاسعة.

(أما ما ذكرت ثلاثا - قالهن له رسول الله ﷺ - فلن أسبه) « ما ذكرت » بضم التاء للمتكلم، و« ما » ظرفية دوامية، والمعنى لا أسبه مدة ذكري للثلاث، طالما أنا أذكر ثلاثا.

(لأن تكون لي واحدة منهن أحب إلي من حمر النعم) اللام في جواب قسم محذوف.

→ **“फ़तहुल मुनअम शरह-ए-सही मुस्लिम”** में है: हज़रत सईद बिन मुसय्यब رضي الله عنه फ़रमाते हैं: मैं ने चाहा कि यह रिवायत ख़ुद हज़रत साद رضي الله عنه की ज़ुबान से सुनूँ, तो मैं ने हज़रत साद رضي الله عنه से मुलाक़ात की और मैं ने पूछा: “क्या आपने यह रिवायत रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم से सुनी है?” आप رضي الله عنه ने अपने कानों पर उंगलियाँ रख कर फ़रमाया: “हाँ, वरना यह कान बहरे हो जाते। ”

हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने हज़रत साद رضي الله عنه को हुक्म दिया; किस चीज़ का हुक्म दिया? यह उसमें महज़ूफ़ है, तक़दीर यह है कि हज़रत अली رضي الله عنه को बुरा भला कहने का हुक्म दिया, हज़रत साद رضي الله عنه **फ़ितना** (या’नी हज़रत मुआविया رضي الله عنه की हज़रत अली رضي الله عنه के साथ जंग) से अलग रहे थे, हो सकता है कि उनके बारे में यह बात मशहूर हो गई हो कि वह हज़रत अली رضي الله عنه का दिफ़ाअ करते हैं।

तो हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने पूछा: “तुम अली رضي الله عنه को बुरा भला क्यूँ नहीं कहते?”

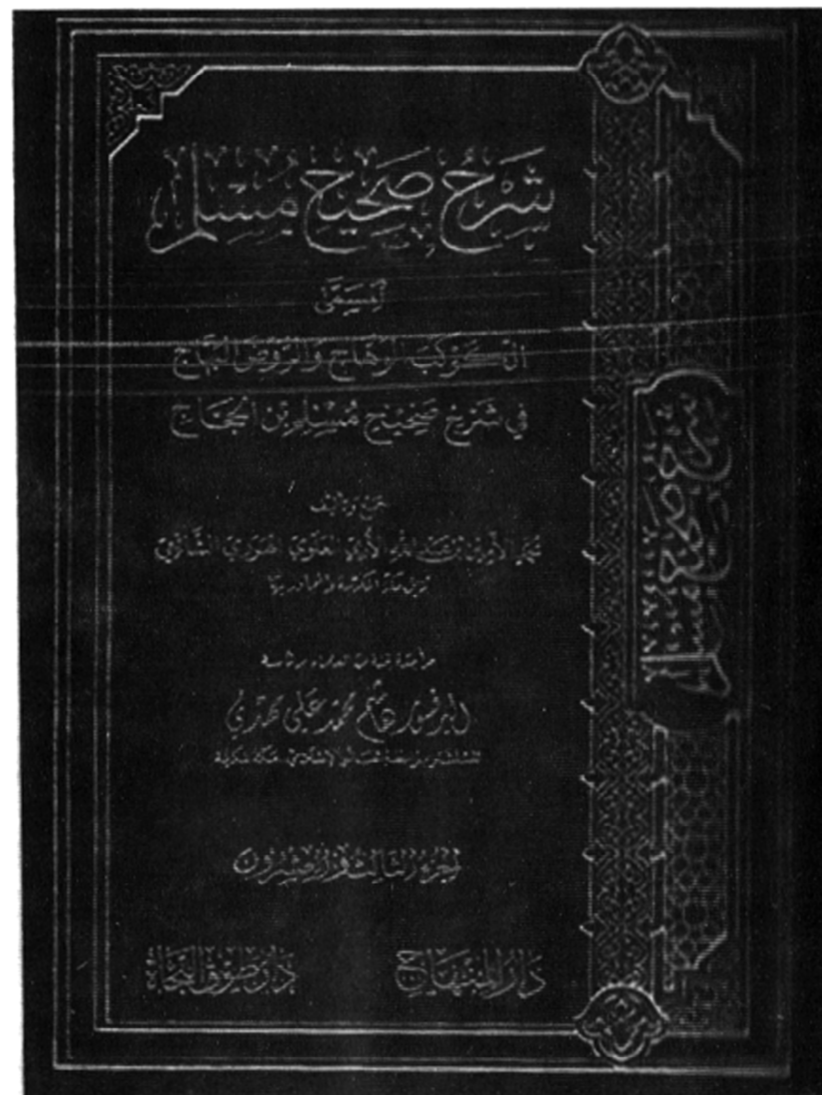
→ इमाम नौवी इस बुराई से हज़रत मुआविया رضي الله عنه को बरी क़रार देने की कोशिश करते हुए कहते हैं कि उलमा कहते हैं: जो अहादीस इस तरह की वारिद हैं जिन से एक सहाबी की तनक़ीस लाज़िम आती है उनकी तावील करना ज़रुरी है और उलमा यह भी कहते हैं कि सिक़्क़ा(Trustworthy) रावियों की रिवायात में जो भी इस तरह की बातें होती हैं उनकी तावील करना मुमकिन भी है, तो हज़रत मुआविया رضي الله عنه का यह कौल इस बिना पर (साफ)(स्पष्ट) नहीं है कि उन्होंने हज़रत साद رضي الله عنه को हज़रत अली رضي الله عنه को बुरा भला कहने का हुक्म दिया, बल्कि दरअस्ल आपने ऐसा न करने की वजह मालूम की, गोया यह पूछा कि क्या तुम तौरअन ऐसा नहीं करते? या ख़ौफ़ की वजह से? या किसी और वजह से? अगर यह तौरअन है तो तुम ठीक हो, और अगर इसके अलावा किसी और वजह से है तो इस का जवाब दूसरा है, शायद हज़रत साद رضي الله عنه उस जमाअत में होंगे जो हज़रत अली رضي الله عنه को बुरा भला कहती थी, मगर ख़ुद उन्हों ने ऐसा न किया, और इस जमाअत पर नकीर भी न कर सके तो हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने उनसे यह सवाल किया और उलमा ने कहा है कि इसमें एक दूसरी तावील का भी इमकान है, वह यह कि इसका मतलब यह है कि क्या बात है कि तुम अली رضي الله عنه को उनकी राय और इजतेहाद में ग़लत नहीं बताते? और लोगों के सामने हमारे इजतेहाद की अच्छाई और राय कि ख़ूबी क्यूँ नहीं बयान करते? और यह बात कि हज़रत अली رضي الله عنه से इजतेहाद में ग़लती हुई?

→ लेकिन यह दूर की तावील है, यह बात साबित है कि हज़रत मुआविया رضي الله عنه ऐसा करने का हुक्म देते थे, और हज़रत मुआविया رضي الله عنه भी मासूम नहीं हैं, उनसे भी ग़लती हो सकती है, लेकिन हमारे लिए यह ज़रुरी है कि हम रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم के किसी भी सहाबी की तनक़ीस से बाज़ रहें।

(وتقاربا في اللفظ)، قالا: حدثنا حاتم، (وهو ابن إسماعيل)، عن بكير بن مسمار، عن عامر بن سعد بن أبي وقاص، عن أبيه، قال: أمر معاوية بن أبي سفيان سعداً فقال: ما منعك أن تسب أبا التراب؟ فقال: أما ما ذكرت ثلاثاً قالهن له رسول الله صلى الله عليه وسلم، فلن أسبه. لأن تكون لي واحدة منهن ......

(وتقاربا في اللفظ قالا: حدثنا حاتم وهو ابن إسماعيل) العبدري مولاهم أبو إسماعيل المدني، صدوق، من (٨) روى عنه في (١٢) باباً (عن بكير بن مسمار) القرشي الزهري، مولاهم مولى عامر بن سعد أبي محمد المدني أخو مهاجر بن مسمار، روى عن مولاه عامر في مناقب علي بن أبي طالب، وفي الزهد، وابن عمر وجابر وغيرهم. ويروي عنه (م ت س) وحاتم بن إسماعيل وأبو بكر الحنفي والواقدي، وثقه العجلي، وقال النسائي: لا بأس به، وقال في التقريب: صدوق، من الرابعة، مات سنة (١٥٣) ثلاث وخمسين ومائة (عن) مولاه (عامر بن سعد بن أبي وقاص عن أبيه) سعد بن أبي وقاص رضي الله عنه. وهذا السند من خماسياته، غرضه بيان متابعة بكير بن مسمار لسعيد بن المسيب (قال) عامر بن سعد: (أمر معاوية بن أبي سفيان) الأموي الشامي، الخليفة المشهور (سعداً) بن أبي وقاص رضي الله عنهما أي أمره بسب علي بن أبي طالب رضي الله عنه فأبى سعد أن يسب علياً (فقال) معاوية بن أبي سفيان لسعد: (ما منعك) يا سعد (أن تسب أبا التراب) علي بن أبي طالب حين أمرتك أن تسبه وأبو التراب كنية علي بن أبي طالب رضي الله عنه كناه به النبي صلى الله عليه وسلم حين نام في تراب المسجد النبوي وأيقظه فقال له: «قم أبا التراب، قم أبا التراب» (فقال) سعد لمعاوية: (أما) شرطية (ما) مصدرية (ذكرت) بضم التاء للمتكلم وحده وهو سعد (ثلاثاً) معمول ذكرت، وجملة (قالهن له) أي لعلي (رسول الله صلى الله عليه وسلم) صفة لثلاثاً. وجملة ذكرت صلة ما المصدرية والمصدر المؤول منها مرفوع على الابتداء، والخبر جملة قوله: (فلن أسبه) والفاء فيه رابطة لجواب أما واقعة في غير موضعها كما هو المعروف في الفاء الرابطة لجواب أما كما هي مذكورة مع أما في متن الأجرومية في باب علامات الإعراب، والتقدير أما تذكري ثلاثاً قالهن رسول الله صلى الله عليه وسلم لعلي: فمانع من سبي إياه أبداً فوالله (لأن تكون) وتحصل (لي واحدة منهن) أي من تلك

٤٤٤



→ अलकोकब अल्वहाज رحمه الله **“शरह-ए-सहीह मुस्लिम”** में है: हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने हज़रत साद رضي الله عنه को हुक्म दिया तो पूछा: क्या बात कि तुम अली رضي الله عنه को बुरा भला नहीं कहते?

→ या’नी हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने जो उमवी और शामी हैं, और मशहूर ख़लीफ़ा हैं हज़रत साद बिन वक़्क़ास رضي الله عنه को हुक्म दिया या’नी हज़रत अली رضي الله عنه को बुरा भला कहने का, तो हज़रत साद رضي الله عنه ने इन्कार किया, तो हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने पूछा कि “जब मैं ने तुम्हें यह हुक्म दिया तो किस बात ने तुम्हें इस से रोका?”

صحيح مسلم

المسمّى

١ـ المسند الصحيح المختصر من السنن بنقل العدل عن العدل إلى رسول الله ﷺ

للإمام الحافظ أبي الحسين مسلم بن الحجاج القشيري النيسابوري (٢٠٦ - ٢٦١هـ)

وفي طليعته

٢ـ غاية الابتهاج لمقتفي أسانيد كتاب مسلم بن الحجاج

للعلامة السيد محمد بن محمد مرتضى الزبيدي (ت ١٢٠٥هـ)

وبحاشيته

٣ـ علل الأحاديث في كتاب الصحيح: لأبي الفضل بن عمار الشهيد (ت ٣١٧هـ)

٤ـ الإلزامات والتتبع: للإمام أبي الحسن علي بن عمر الدارقطني (ت ٣٨٥هـ)

٥ـ الأجوبة عما أشكل الشيخ الدارقطني: لأبي مسعود الدمشقي (ت ٤٠١هـ)

٦ـ التنبيه على الأوهام الواقعة في صحيح مسلم: لأبي علي الجياني (ت ٤٩٨هـ)

٧ـ غرر الفوائد: للحافظ رشيد الدين أبي الحسين يحيى بن علي العطار (ت ٦٦٢هـ)

٨ـ تنبيه المعلم بمبهمات صحيح مسلم: لأبي ذر ابن سبط ابن العجمي (ت ٨٨٤هـ)

تشرف بخدمتها والعناية بها

أبو قتيبة نظر محمد الفاريابي

دار طيبة

يقول: «من ادعى أبًا في الإسلام غير أبيه، يعلم أنه غير أبيه، فالجنة عليه حرام».

فقال أبو بكرة: أنا سمعته من رسول الله ﷺ. [خ٦٧٦٦، ٦٧٦٧]

١١٥- (...) حدثنا أبو بكر بن أبي شيبة: حدثنا يحيى بن زكرياء بن أبي زائدة و أبو معاوية، عن عاصم، عن أبي عثمان، عن سعد وأبي بكرة كلاهما يقول: سمعته أذناي. ووعاه قلبي. محمدًا[1] ﷺ يقول: «من ادعى إلى غير أبيه، وهو يعلم أنه غير أبيه، فالجنة عليه حرام». [خ٤٣٢٦، ٤٣٢٧]

(٢٨) باب بيان قول النبي ﷺ: «سباب المسلم فسوق وقتاله كفر»

١١٦- (٦٤) حدثنا محمد بن بكار بن الريان، و عون بن سلام، قالا: حدثنا محمد بن طلحة. ح وحدثنا محمد بن المثنى: حدثنا عبد الرحمن ابن مهدي: حدثنا سفيان. ح وحدثنا محمد بن المثنى: حدثنا محمد بن جعفر: حدثنا شعبة كلهم عن زبيد، عن أبي وائل، عن عبد الله بن مسعود قال: قال رسول الله ﷺ: «سباب المسلم فسوق. وقتاله كفر» قال: زبيد: فقلت لأبي وائل: أنت[2] سمعته من عبد الله يرويه عن رسول الله ﷺ؟ قال: نعم.

وليس في حديث شعبة قول زبيد لأبي وائل. [خ٤٨، ٦٠٤٤، ٧٠٧٦]

١١٧- (...) حدثنا أبو بكر بن أبي شيبة وابن المثنى، عن محمد بن جعفر، عن شعبة، عن منصور. ح وحدثنا ابن نمير: حدثنا عفان: حدثنا شعبة عن الأعمش، كلاهما عن أبي وائل، عن عبد الله، عن النبي ﷺ بمثله.

(٢٩) باب بيان معنى قول النبي ﷺ: «لا ترجعوا بعدي كفارًا يضرب بعضكم رقاب بعض»

١١٨- (٦٥) حدثنا أبو بكر بن أبي شيبة، ومحمد بن المثنى، و ابن بشار، جميعًا، عن محمد بن جعفر، عن شعبة. ح وحدثنا عبيد الله ابن معاذ. واللفظ له. حدثنا أبي حدثنا شعبة، عن علي بن مدرك، سمع أبا زرعة يحدث عن جده جرير قال: قال لي النبي ﷺ في حجة الوداع: «استنصت الناس» ثم قال: «لا ترجعوا بعدي كفارًا يضرب بعضكم رقاب بعض». [خ١٢١، ٤٤٠٥، ٦٨٦٩، ٧٠٨٠]

١١٩- (٦٦) وحدثنا عبيد الله بن معاذ: حدثنا أبي: حدثنا شعبة، عن واقد بن محمد عن أبيه، عن ابن عمر عن النبي ﷺ بمثله. [خ١٧٤٢، ٦١٦٦، ٦٧٨٥، ٦٨٦٨]

١٢٠- (...) وحدثني[3] أبو بكر بن أبي شيبة و أبو بكر بن خلاد الباهلي، قالا: حدثنا محمد بن جعفر. حدثنا شعبة عن واقد بن محمد ابن زيد أنه سمع أباه يحدث، عن عبد الله بن

(١) نصب على البدل من الضمير المنصوب في «سمعته أذناي».

(٢) في (ح) «أأنت سمعته».

(٣) في (خ) «حدثنا أبوبكر».

→ **"सहीह मुस्लिम"** में है: रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

मोमिन को गाली देना फ़िस्क़ है और उसको क़त्ल करना कुफ़्र है।

سُنن ابن ماجه

بشرح الإمام أبي الحسن الحنفي المعروف بالسندي
المتوفى ١١٣٨ هـ

وبحاشية

تعليقات مصباح الزجاجة في زوائد ابن ماجه
للإمام البوصيري المتوفى سنة ٨٤٠ هجرية

المجلد الأول

حقق أصوله وخرج أحاديثه على الكتب الستة
ورقمه حسب المعجم المفهرس وتحفة الأشراف
الشيخ خليل مأمون شيحا

دار المعرفة
بيروت - لبنان

١٢١/٨ ـ حدّثنا عَلِيُّ بْنُ مُحَمَّدٍ، ثنا أَبُو مُعَاوِيَةَ، ثنا مُوسىٰ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنِ ابْنِ سَابِطٍ، وَهُوَ: عَبْدُ الرَّحْمٰنِ، عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، قَالَ: قَدِمَ مُعَاوِيَةُ فِي بَعْضِ حَجَّاتِهِ، فَدَخَلَ عَلَيْهِ سَعْدٌ، فَذَكَرُوا عَلِيًّا عليه السلام، فَنَالَ مِنْهُ، فَغَضِبَ سَعْدٌ، وَقَالَ: تَقُولُ هٰذَا الرَّجُل سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: «مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ». وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: «أَنْتَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هارونَ مِنْ مُوسىٰ إِلاَّ أَنَّهُ لاَ نَبِيَّ بَعْدِي». وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: «لَأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ الْيَوْمَ رَجُلاً يُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ»؟.

---

١٢١ ـ انفرد به ابن ماجه، تحفة الأشراف (٣٩٠١).

وفيه بعد لا يخفى. وقال ابن رجب: رواه النسائي في خصائص علي. وقال الذهبي في الميزان: هذا كأنه كذب على علي. وفي الزوائد: قلت: هذا إسنادٌ صحيحٌ. رجاله ثقاتٌ، رواه الحاكم في المستدرك عن المنهال، وقال صحيحٌ على شرط الشيخين، والجملة الأولى في جامع الترمذي من حديث ابن عمر مرفوعاً «أنت أخي في الدنيا والآخرة». وقال: حديثٌ حسنٌ غريبٌ انتهى. قلت: فكان من حكم بالوضع، حكم عليه، لعدم ظهور معناه لا لأجل خلل في إسناده، وقد ظهر معناه بما ذكرنا.

١٢١ ـ **قوله:** (فنال منه) أي: نال معاويةُ من علي ووقع فيه وسبه، بل أمر سعداً بالسب كما قيل في مسلم والترمذي. ومنشأ ذلك الأمور الدنيوية التي كانت بينهما، ولا حول ولا قوة إلا باللّه، واللّه يغفر لنا ويتجاوز عن سيئاتنا، ومقتضى حسن الظن أن يحسن السب على التخطئة. ونحوها مما يجوز بالنسبة إلى أهل الاجتهاد لا اللعن وغيره.

قوله: (لأعطين) بالنون الثقيلة من الإعطاء. قاله يوم فتح خيبر، ثم أعطى علياً. قيل: وهذا سبب كثرة ما روي في مناقبه رضي اللّه تعالى عنه كما في الإصابة للحافظ ابن حجر. قال: ومناقبه كثيرةٌ حتى قال الإمام أحمد: لم ينقل لأحد من الصحابة ما نقل لعلي. وقال غيره: وسبب ذلك تعرض بني أمية له. فكان كل من كان عنده علم شيءٍ من مناقبه من الصحابة بثه، فكلما أرادوا إخماد شرفه حدث الصحابة بمناقبه فلا يزداد إلا انتشاراً. وتتبع النسائي ما خص به من دون الصحابة فجمع من ذلك أشياء كثيرةً. أسانيدها أكثرها جياد انتهى.

→ **“सुनन इब्न-ए-माजा”** में है कि : हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ एक मर्तबा हज करने आए तो हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ عنہ उन के पास गए, हज़रत अली رضی اللہ عنہ का तज़किरा आया तो हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ के बारे में कोई नामुनासिब बात कही, हज़रत साद رضی اللہ عنہ गुस्सा हुए और फ़रमाया: “आप उस शख़्स के बारे में यह बात कहते हैं जिसके बारे में मैं ने रसूलल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को फ़रमाते हुए सुना है: **‘मैं जिसका मौला हूँ अली رضی اللہ عنہ भी उसके मौला हैं,’** और मैं ने आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को फ़रमाते हुए सुना है कि: **‘तुम (अली رضی اللہ عنہ) मेरे नज़दीक उस मक़ाम ओ मरतबा पर हो जिस पर हज़रत मूसा علیہ السلام के नज़दीक हज़रत हारून علیہ السلام थे, मगर मेरे बाद कोई नबी नहीं’** और मैं ने आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم को फ़रमाते हुए सुना है कि: **‘कल मैं झण्डा ऐसे शख़्स को दूँगा जो अल्लाह عزوجل ! और उस के रसूल صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم से मुहब्बत करता है।’**

☆ **सिंधी की शरह में है: “نال منه” का मतलब है कि हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ के बारे में कुछ बात कही और कुछ बुरा कहा, बल्कि हज़रत साद رضی اللہ عنہ को भी ऐसा करने का हुक्म दिया जैसा कि मुस्लिम और तिरमिज़ी में है।**

صحيح سنن ابن ماجه

للإمام الحافظ أبي عبد الله محمد بن يزيد القزويني

المتوفى سنة (٢٧٥هـ)

تأليف

محمد ناصر الدين الألباني

المجلد الأول

مكتبة المعارف للنشر والتوزيع
لصاحبها سعد بن عبد الرحمن الراشد
الرياض

٩٧ – ١١٨ – عن حُبْشيّ بنِ جُنادَةَ ، قالَ : سمعتُ رسولَ اللّهِ ﷺ يقولُ :

« عليٌّ منّي وأنا منهُ ، ولا يُؤَدِّي عنّي إلّا عليٌّ » .

حسن : « المشكاة » (٦٠٨٣) ، « الصحيحة » (١٩٨٠) ، « الظلال » (١١٨٩) .

٩٨ – ١٢٠ – عن سعدِ بنِ أبي وَقّاصٍ قالَ :

قدِمَ مُعاويةُ في بعضِ حَجَّاتِهِ ، فَدَخَلَ عليهِ سعدٌ ، فذكروا عليًّا فنالَ منهُ[1] ، فغضِبَ سعدٌ وقالَ : تقولُ هذا لرجلٍ سمعتُ رسولَ اللّهِ ﷺ يقولُ :

« مَن كنتُ مولاهُ فعليٌّ مولاهُ » . وسمعتُهُ يقولُ :

« أنتَ منّي بمنزلةِ هارونَ مِن موسى ، إلّا أنّهُ لا نبيَّ بعدي » ! وسمعتُهُ يقولُ :

« لأُعطينَّ الرّايَةَ اليومَ رجلًا يُحبُّ اللّهَ ورسولَهُ » ؟ !

١٢٠ – صحيح : « الصحيحة » (٤ / ٣٣٥) .

- فضلُ الزُّبير رضيَ اللّه عنهُ .

٩٩ – ١٢١ – عن جابرٍ قالَ : قالَ رسولُ اللّهِ ﷺ – يومَ قُرَيظةَ – :

« مَنْ يأْتينا بِخَبَرِ القومِ ؟ » ، فقالَ الزبيرُ : أنا .

(١) « فنال منه » : أي : نال معاوية من عليّ ، وتكلّم فيه .

→ अल्लामा अलबानी की **“सहीह इब्न-ए-माजा”** में है: कि हज़रत मुआविया رضي الله عنه एक मर्तबा हज करने आए तो हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास رضي الله عنه उन के पास गए, हज़रत अली رضي الله عنه का तज़किरा आया तो हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने हज़रत अली رضي الله عنه के बारे में कोई नामुनासिब बात कही, हज़रत साद رضي الله عنه गुस्सा हुए और फ़रमाया: “आप उस शख़्स के बारे में यह बात कहते हैं जिसके बारे में मैं ने रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم को फ़रमाते हुए सुना है: **‘मैं जिसका मौला हूँ अली رضي الله عنه भी उसके मौला हैं,’** और मैं ने आप صلى الله عليه وآله وسلم को फ़रमाते हुए सुना है कि: **‘तुम मेरे नज़दीक उस मक़ाम ओ मरतबा पर हो जिस पर हज़रत मूसा عليه السلام के नज़दीक हज़रत हारून عليه السلام थे, मगर मेरे बाद कोई नबी नहीं,’** और मैं ने आप صلى الله عليه وآله وسلم को फ़रमाते हुए सुना है कि: **‘कल मैं झण्डा ऐसे शख़्स को दूँगा जो अल्लाह سبحانه وتعالى ! और उस के रसूल صلى الله عليه وآله وسلم से मुहब्बत करता है।’** ”

☆ **نال منه का मतलब है कि हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने हज़रत अली رضي الله عنه के बारे में कुछ बात कही और कुछ बुरा कहा।**

شروح سنن ابن ماجة

مصباح الزجاجة على سنن ابن ماجة لجلال الدين عبد الرحمن بن بكر السيوطي

كفاية الحاجة في شرح سنن ابن ماجة لأبي الحسن بن عبد الهادي السندي

إنجاح الحاجة للشيخ عبد الغني المجددي الدهلوي

مصباح الزجاجة في زوائد ابن ماجة لأحمد بن أبي بكر بن إسماعيل البوصيري

ما يليق من حل اللغات وشرح المشكلات لفخر الحسن الكنكوهي.

مختصر ما تمس إليه الحاجة لمن يطالع سنن ابن ماجة للنعماني

النص الكامل لسنن ابن ماجة بشروحه المذكورة مضبوطة النص ومخرجة ومحكوم عليها صحة وضعفاً

قدم له وحققه

رائد بن صبري ابن أبي علفة

بيت الأفكار الدولية

ويحتمل أنه قال: لأنه ما اطلع عليه، وفيه بعد لا يخفى.

وقال ابن رجب: رواه النسائي في خصائص علي.

وقال الذهبي في «الميزان»: هذا كأنه كذب على علي.

وفي «الزوائد»: قلت: هذا إسنادٌ صحيحٌ.

رجاله ثقاتٌ، رواه الحاكم في «المستدرك»، عن المنهال، وقال: صحيحٌ على شرط الشيخين، والجملة الأولى في «جامع الترمذي» من حديث ابن عمر مرفوعاً: «أنت أخي في الدنيا والآخرة».

وقال: حديثٌ حسنٌ غريبٌ. انتهى.

قلت: فكان من حكم بالوضع، حكم عليه، لعدم ظهور معناه لا لأجل خلل في إسناده، وقد ظهر معناه بما ذكرنا.

١٢١ - [صحيح] حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ مُسْلِمٍ عَنِ ابْنِ سَابِطٍ وَهُوَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ.

عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ قَدِمَ مُعَاوِيَةُ فِي بَعْضِ حَجَّاتِهِ فَدَخَلَ عَلَيْهِ سَعْدٌ فَذَكَرُوا عَلِيًّا فَنَالَ مِنْهُ فَغَضِبَ سَعْدٌ وَقَالَ تَقُولُ هَذَا لِرَجُلٍ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ مَنْ كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلِيٌّ مَوْلَاهُ وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ أَنْتَ مِنِّي بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى إِلَّا أَنَّهُ لَا نَبِيَّ بَعْدِي وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ لَأُعْطِيَنَّ الرَّايَةَ الْيَوْمَ رَجُلًا يُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ. [خ: ٣٧٠٦] [م: ٢٤٠٤] [ت: ٣٧٣١]

● قوله: (من كنت مولاه فعلي مولاه) قال في «النهاية»: المولى اسم يقع على جماعة كثيرة فهو الرب المالك والسيد والمنعم والمعتق والناصر والمحب التابع والجار وابن العم والحليف والصهر والعبد والمعتق والمنعم عليه وهذا الحديث يحمل على أكثر الأسماء المذكورة وقال الشافعي: عنى بذلك ولاء الإسلام كقوله تعالى: ﴿ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَىٰ لَهُمْ﴾ وقيل: سبب ذلك أن أسامة قال لعلي رضي الله عنه: لست مولاي إنما مولاي رسول الله ﷺ فقال ذلك «مصباح الزجاجة».

● قال السندي: قوله: (فنال منه) أي: نال معاوية من علي ووقع فيه وسبه، بل أمر سعداً بالسب كما قيل في مسلم والترمذي.

ومنشأ ذلك الأمور الدنيوية التي كانت بينهما، ولا حول ولا قوة إلا بالله، والله يغفر لنا ويتجاوز عن سيئاتنا، ومقتضى حسن الظن أن يحمل السب على التخطئة.

ونحوها مما يجوز بالنسبة إلى أهل الاجتهاد لا اللعن وغيره.

قوله: (لأعطين) بالنون الثقيلة من الإعطاء.

قاله يوم فتح خيبر، ثم أعطى علياً.

قيل: وهذا سبب كثرة ما روي في مناقبه رضي الله تعالى عنه كما في «الإصابة» للحافظ ابن حجر.

قال: ومناقبه كثيرةٌ حتى قال الإمام أحمد: لم ينقل لأحد من الصحابة ما نقل لعلي.

وقال غيره: وسبب ذلك تعرض بني أمية له.

فكان كل من كان عنده علم شيء من مناقبه من الصحابة بثه، فكلما أرادوا إخماد شرفه حدث الصحابة بمناقبه فلا يزداد إلا انتشاراً.

وتتبع النسائي ما خص به من دون الصحابة فجمع من ذلك أشياء كثيرةً، أسانيدها أكثرها جياد. انتهى.

فَضْلُ الزُّبَيْرِ رضي الله عنه

١٢٢ - [متفق عليه] حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا وَكِيعٌ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ.

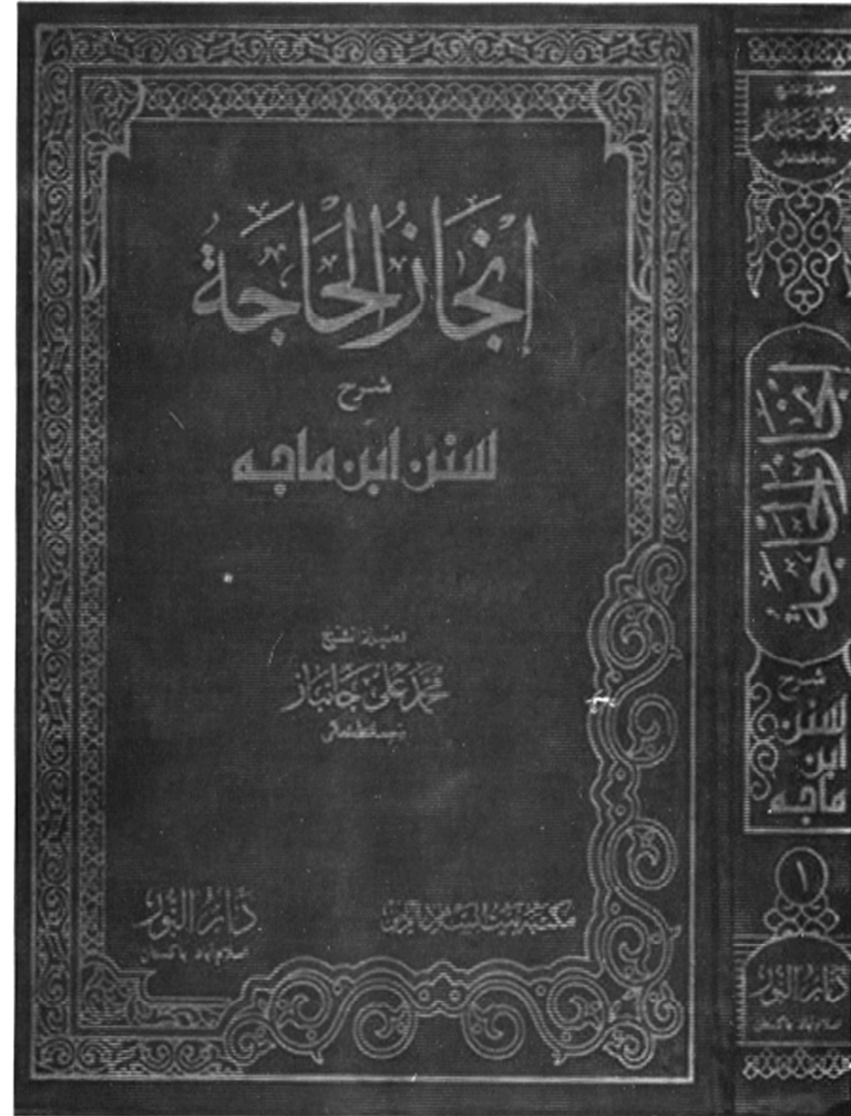
عَنْ جَابِرٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَوْمَ قُرَيْظَةَ مَنْ يَأْتِينَا بِخَبَرِ الْقَوْمِ فَقَالَ الزُّبَيْرُ أَنَا فَقَالَ مَنْ يَأْتِينَا بِخَبَرِ الْقَوْمِ فَقَالَ الزُّبَيْرُ أَنَا ثَلَاثًا فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا وَإِنَّ حَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ. [خ: ٢٨٤٦] [م: ٢٤١٥] [ت: ٣٧٤٥]

● قوله: (وإن حواري الزبير) قال في «النهاية»: أي خاصتي وناصري وقال عياض: ضبطه جماعة من المحققين بفتح الياء وضبطه أكثرهم بكسرها «زجاجة».

● قال السندي: قوله: (حواري) بتشديد الياء لفظه مفردٌ بمعنى: الخالص والناصر.

والياء فيه للنسبة، وأصل معناه: البياض، فهو منصرفٌ

→ **“शरह-ए-इब्न-ए-माजा”** में है कि: सिंधी ने कहा है: ‘**نال منه** का मतलब है कि हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ के बारे में कुछ बात कही और कुछ बुरा कहा, बल्कि हज़रत साद رضی اللہ عنہ को भी ऐसा करने का हुक्म दिया जैसा कि मुस्लिम और तिरमिज़ी में है।’**



المقدمة، باب: ١١ حديث: ١٢١

١٢١ - حدثنا علي بن محمد. ثنا أبو معاوية. ثنا موسى بن مسلم، عن ابن سابط، وهو عبد الرحمن، عن سعد بن أبي وقاص، قال: قدم معاوية في بعض حجاته، فدخل عليه سعد، فذكروا عليا. فنال منه. فغضب سعد وقال: تقول هذا لرجل سمعت رسول الله ﷺ يقول: "من كنت مولاه فعلي مولاه".

والحديث أخرجه أيضا ابن أبي عاصم في السنة (٢/٥٩٨). والعقيلي في الضعفاء (٣/١٣٧) والبشار عواد في المسند الجامع (١٣/٤٠٢). إسناده ضعيف ومتنه باطل

١٢١ - ((موسى بن مسلم)) الكوفي، أبو عيسى، الطحان، يقال له موسى الصغير. وثقه ابن معين وابن حبان. وقال أحمد: ما أرى به بأسا. وقال الحافظ: لا بأس به من السابعة. مات وهو ساجد.

((ابن سابط)) هو عبد الرحمن بن سابط، ويقال: ابن عبد الله بن سابط، وهو الصحيح، ويقال: ابن عبد الله بن عبد الرحمن، الجمحي، المكي. قال أبو زرعة وابن معين: ثقة. وقال ابن سعد: كثير الحديث. وذكره البخاري وأبو حاتم وابن حبان في الثقات. وقال الحافظ: ثقة كثير الإرسال، من الثالثة.

قال الذهبي: ولي الشام (٢٠) سنة وملك (٢٠) سنة، وكان حليما كريما، سائسا عاقلا، خليقا للإمارة، كامل السودد، ذا دهاء ورأي ومكر، كأنما خلق للملك مات في رجب سنة (٦٠) وقد قارب (٨٠).

((فنال منه)) أي نال معاوية من علي ووقع فيه وسبه، بل أمر سعدا بالسب، كما قيل في مسلم والترمذي. ومنشأ ذلك الأمور الدنيوية التي كانت بينهما، ولا حول ولا قوة إلا بالله، والله يغفر لنا ويتجاوز عن سيئاتنا. ومقتضى حسن الظن أن يحسن السب على التخطئة ونحوها مما يجوز بالنسبة إلى أهل الاجتهاد، لا اللعن وغيره. ((من كنت مولاه فعلي مولاه)) من الولي ضد العدو، أي من كنت أحبه فعليّ يحبه، وقيل: معناه من يتولاني فعلي يتولاه ذكره القاري عن بعض علمائه. وقال ابن الأثير في النهاية: المولى يقع على جماعة كثيرة، كالرب والمالك والسيد والمنعم والمعتق والناصر والمحب والتابع والجار وابن العم والحليف والعقيد والصهر والعبد والمعتَق والمنعم عليه.

وأكثرها قد جاء في الحديث فيضاف كل واحد إلى ما يقتضيه الحديث الوارد فيه، ومن ولي أمرا وقام به فهو مولاه ووليه. وقد تختلف مصادر هذه الأسماء، فالوَلاية بالفتح في النسب والنصرة والمعتق والولاية بالكسر في الإمارة، والوَلاء في المعتق والموالاة، من والى القوم، ومنه الحديث "من كنت مولاه فعلي مولاه" يحمل على أكثر الأسماء المذكورة.

- ٤٠٣ -

→ **"अंजाज़तुल शरह इब्न-ए-माजा"** में है कि हज़रत मुआविया رضي الله عنه एक मर्तबा हज करने आए तो हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास رضي الله عنه उन के पास गए, हज़रत अली رضي الله عنه का तज़किरा आया तो हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने हज़रत अली رضي الله عنه के बारे में कोई नामुनासिब बात कही, हज़रत साद رضي الله عنه गुस्सा हुए।

☆ **نال منه : का मतलब है कि हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने हज़रत अली رضي الله عنه के बारे में कुछ बात कही और कुछ बुरा कहा, बल्कि हज़रत साद رضي الله عنه को भी ऐसा करने का हुक्म दिया जैसा कि मुस्लिम और तिरमिज़ी में है।**

السُّنَن

تصنيف

الإمام الحافظ أبي عبد الله محمد بن يزيد بن ماجة القزويني

٢٠٩ ـ ٢٧٣هـ

حققه وضبط نصه، وخرج أحاديثه، وعلق عليه

شعيب الأرنؤوط

عادل مرشد　　محمد كامل قره بللي

عبد اللطيف حرز الله

الجزء الأول

مؤسسة الرسالة

١٢١ـ حدَّثنا عليُّ بن محمَّدٍ، حدثنا أبو معاويةَ، حدَّثنا موسى بن مُسلِمٍ، عن ابن سابِطٍ ـ وهو عبدُ الرَّحمٰنِ ـ

عن سَعدِ بن أبي وَقَّاصٍ، قال: قَدِمَ معاويةُ في بعضِ حَجَّاتِه، فدَخَلَ عليه سَعدٌ، فذكروا عَلِيّاً، فنالَ منه، فغَضِبَ سَعدٌ، وقال: تقولُ هٰذا لرجلٍ سمعتُ رسولَ الله ﷺ يقولُ: «مَن كنتُ مَولاهُ فعَلِيٌّ مَولاهُ»، وسمعتُه يقولُ: «أنت منِّي بمَنزِلَةِ هارونَ من موسى إلاَّ أنَّه لا نَبِيَّ بعدي»، وسمعتُه يقولُ: «لأُعطِيَنَّ الرَّايةَ اليومَ رجلاً يُحِبُّ اللهَ ورسولَه»؟[١].

= وأخرجه ابن أبي عاصم في «الآحاد والمثاني» (١٨٦) من طريق نوح بن قيس، عن رجل قد سماه ـ ذهب عن أبي موسى اسمه ـ، عن معاذة بنت عبد الله العدوية قالت: سمعت علياً يخطب على المنبر وهو يقول: أنا الصدِّيق الأكبر، آمنت قبل أن يؤمن أبو بكر، وأسلمت قبل أن يسلم. وهٰذا سند ضعيف لجهالة الراوي عن معاذة العدوية.

(١) حديث صحيح، وهٰذا سند رجاله ثقات.

وأخرجه النسائي في «الكبرى» (٨٣٤٣) من طريق عبد السلام بن حرب، عن موسى بن مسلم الصغير، بهٰذا الإسناد.

وأخرجه بأطول مما هنا دون قوله: «من كنت مولاه فعلي مولاه»: مسلم (٢٤٠٤) (٣٢)، والترمذي (٤٠٥٨) من طريق قتيبة بن سعيد، عن حاتم بن إسماعيل، عن بكير بن مسمار، عن عامر بن سعد، عن أبيه.

وقوله: «أنت مني بمنزلة هارون بن موسى» سلف برقم (١١٥) وهو في «الصحيحين».

وقوله: «من كنت مولاه فعلي مولاه» أورده السيوطي في «الأزهار المتناثرة في الأحاديث المتواترة» برقم (١٠٠).

وانظر ما سلف برقم (١١٦).

→ "सुनन इब्न-ए-माजा" में है कि: हज़रत मुआविया رضي الله عنه एक मर्तबा हज करने आए तो हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास رضي الله عنه उन के पास गए, हज़रत अली رضي الله عنه का तज़किरा आया तो हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने हज़रत अली رضي الله عنه के बारे में कोई नामुनासिब बात कही, हज़रत साद رضي الله عنه गुस्सा हुए और फ़रमाया: 'आप उस शख़्स के बारे में यह बात कहते हैं जिसके बारे में मैं ने रसूलल्लाह رضي الله عنه को फ़रमाते हुए सुना है: **"मैं जिसका मौला हूँ अली رضي الله عنه भी उसके मौला हैं,"** और मैं ने आप صلى الله عليه وآله وسلم को फ़रमाते हुए सुना है कि: **"तुम (अली رضي الله عنه) मेरे नज़दीक उस मक़ाम ओ मरतबा पर हो जिस पर हज़रत मूसा عليه السلام के नज़दीक हज़रत हारून عليه السلام थे, मगर मेरे बाद कोई नबी नहीं,"** और मैं ने आप صلى الله عليه وآله وسلم को फ़रमाते हुए सुना है कि: **"कल मैं झण्डा ऐसे शख़्स को दूँगा जो अल्लाह سبحانه وتعالى ! और उसके रसूल صلى الله عليه وآله وسلم से मुहब्बत करता है।"**

☆ **मुहक्क़िक़-ए-किताब शोएब अरनौवत कहते हैं कि: यह हदीस सहीह है और इस सनद के रावी सिक़्क़ा(Trustworthy) हैं।**

فَلَمَّا كَانَ يَوْمُ عَرَفَةَ ، جَاءَهُ ابْنُ عُمَرَ حِينَ زَالَتِ الشَّمْسُ ، وَأَنَا مَعَهُ ، فَصَاحَ عِنْدَ سُرَادِقِهِ : أَيْنَ هَذَا ؟ فَخَرَجَ إِلَيْهِ الحَجَّاجُ ، وَعَلَيْهِ مِلْحَفَةٌ مُعَصْفَرَةٌ ، فَقَالَ لَهُ : مَا لَكَ يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ ؟! قَالَ : الرَّوَاحَ ، إِنْ كُنْتَ تُرِيدُ السُّنَّةَ ، فَقَالَ لَهُ : هَذِهِ السَّاعَةَ ؟! فَقَالَ لَهُ : نَعَمْ ، فَقَالَ : أُفِيضُ عَلَيَّ مَاءً ، ثُمَّ أَخْرُجُ إِلَيْكَ ، فَانْتَظَرَهُ حَتَّى خَرَجَ ، فَسَارَ بَيْنِي وَبَيْنَ أَبِي ، فَقُلْتُ : إِنْ كُنْتَ تُرِيدُ أَنْ تُصِيبَ السُّنَّةَ ، فَاقْصُرِ الخُطْبَةَ وَعَجِّلِ الوُقُوفَ ، فَجَعَلَ يَنْظُرُ إِلَى ابْنِ عُمَرَ كَيْمَا يَسْمَعَ ذَلِكَ مِنْهُ ، فَلَمَّا رَأَى ذَلِكَ ابْنُ عُمَرَ ، قَالَ : صَدَقَ.

- صحيح : خ (١٦٦٠).

١٩٧- التَّلْبِيَةُ بِعَرَفَةَ

٣٠٠٦- عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ ، قَالَ : كُنْتُ مَعَ ابْنِ عَبَّاسٍ بِعَرَفَاتٍ ، فَقَالَ : مَا لِي لا أَسْمَعُ النَّاسَ يُلَبُّونَ ؟ قُلْتُ : يَخَافُونَ مِنْ مُعَاوِيَةَ ، فَخَرَجَ ابْنُ عَبَّاسٍ مِنْ فُسْطَاطِهِ ، فَقَالَ : لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ ! فَإِنَّهُمْ قَدْ تَرَكُوا السُّنَّةَ مِنْ بُغْضِ عَلِيٍّ.

- صحيح الإسناد.

١٩٨- الخُطْبَةُ بِعَرَفَةَ قَبْلَ الصَّلاةِ

٣٠٠٧- عَنْ نُبَيْطٍ ، قَالَ : رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَخْطُبُ عَلَى جَمَلٍ أَحْمَرَ بِعَرَفَةَ ، قَبْلَ الصَّلاةِ.

- صحيح : « صحيح أبي داود » (١٦٧٣).

صَحِيحُ سُنَنِ النَّسَائِي

تأليف

محمد ناصر الدين الألباني

المجلد الثاني

مكتبة المعارف للنشر والتوزيع
لصاحبها سعد بن عبد الرحمن الراشد
الرياض

→ अल्लामा अलबानी की **“सहीह सुनन निसाई”** में है कि: हज़रत सईद बिन जबीर ؓ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत इब्न-ए-अब्बास ؓ के साथ मैदान-ए-अरफ़ा में था, तो आप ؓ ने मुझ से पूछा: “क्या बात लोगों के तलबिया कहने की आवाज़ नहीं आ रही है?” मैं ने कहा: **“लोग हज़रत मुआविया ؓ से डर रहे हैं”**, तो हज़रत इब्न-ए-अब्बास ؓ अपने ख़ेमे से निकले और “लब्बैक अल्लाह हुम्मा लब्बैक, लब्बैक” कहा, और कहा कि उन लोगों ने हज़रत अली ؓ से बुग्ज़ की वजह से सुन्नत को तर्क कर दिया है।

☆ **यह सनद सहीह है।**

السنن الكبرى

للإمام

أبي بكر أحمد بن الحسين بن علي البيهقي

المتوفى سنة ٤٥٨هـ

تحقيق

محمد عبد القادر عطا

الجزء الخامس

المحتوى

تتمة كتاب الحج ـ كتاب البيوع

منشورات
محمد علي بيضون
دار الكتب العلمية
بيروت ـ لبنان

/ ٩٤٤٥ ـ أخبرنا أبو محمد عبد الله بن يوسف الأصبهاني، أنبأ أبو سعيد ابن الأعرابي، ثنا سعدان (ح) وأخبرنا أبو الحسين بن بشران ببغداد، أنبأ إسماعيل بن محمد الصفار، ثنا سعدان بن نصر، ثنا سفيان، عن سعد بن إبراهيم ذكره، عن عبد الرحمن بن الأسود أن أباه رقى إلى ابن الزبير يوم عرفة، فقال: ما منعك أن تهل فقد سمعت عمر بن الخطاب رضي الله عنه يهل في مكانك هذا فأهل ابن الزبير.

٩٤٤٦ ـ أخبرنا أبو عبد الله الحافظ، ثنا أبو العباس محمد بن يعقوب، ثنا أحمد بن شيبان الرملي، ثنا سفيان بن عيينة، عن زيد بن أسلم، عن عطاء بن يسار، عن ابن عباس قال: سمعت عمر رضي الله عنه يهل بالمزدلفة فقلت له: يا أمير المؤمنين فيم الإهلال، قال: وهل قضينا نسكنا.

٩٤٤٧ ـ أخبرنا أبو الحسن محمد بن الحسين العلوي، أنبأ عبد الله بن محمد بن الحسن ابن الشرقي، ثنا علي بن سعيد النسوي، ثنا خالد بن مخلد، ثنا علي بن صالح، عن ميسرة بن حبيب النهدي، عن المنهال بن عمرو، عن سعيد بن جبير، قال: كنا عند ابن عباس بعرفة فقال: يا سعيد مالي لا أسمع الناس يلبون، فقلت: يخافون معاوية، فخرج ابن عباس من فسطاطه فقال: لبيك اللهم لبيك وإن رغم أنف معاوية، اللهم العنهم فقد تركوا السنة من بغض علي رضي الله عنه.

٩٤٤٨ ـ أخبرنا أبو عبد الله الحافظ، ثنا أبو العباس هو الأصم، ثنا أبو يحيى زكريا بن يحيى بن أسد، ثنا سفيان، عن عبيد الله هو ابن أبي يزيد سمع ابن عباس يقول: تلبي حتى تأتي حرمك إذا رميت الجمرة.

٩٤٤٩ ـ أخبرنا علي بن أحمد بن عبدان، أنبأ أحمد بن عبيد، ثنا عبيد بن شريك، ثنا أبو الجماهر، ثنا عبد العزيز، عن إبراهيم بن عقبة، عن كريب مولى ابن عباس، قال: أرسلني ابن عباس مع ميمونة زوج النبي ﷺ يوم عرفة فاتبعت هودجها فلم أزل أسمعها تلبي حتى رمت جمرة العقبة ثم كبرت.

وروينا في ذلك أيضاً عن الحسين بن علي رضي الله عنهما.

[١٨١] ـ باب الوقوف بعرفة

٩٤٥٠ ـ أخبرنا أبو عبد الله الحافظ، ثنا أبو عبد الله محمد بن يعقوب، أنبأ محمد بن عبد الوهاب، أنبأ محاضر، ثنا هشام (ح) وأنبأ أبو عبد الله الحافظ، أنبأ أبو عبد الله محمد بن يعقوب، ثنا جعفر بن محمد بن الحسين، ثنا يحيى بن يحيى، أنبأ أبو معاوية،

→ इमाम बैहक़ी رحمه الله की **“सुनन कुबरा”** में है: हज़रत सईद बिन जबीर رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत इब्न-ए-अब्बास رضي الله عنهما के साथ मैदान-ए-अरफ़ा में था, तो आप رضي الله عنه ने मुझ से पूछा: “क्या बात लोगों के तलबिया कहने की आवाज़ नहीं आ रही है?” मैं ने कहा: **“लोग हज़रत मुआविया رضي الله عنه से डर रहे हैं”**, तो हज़रत इब्न-ए-अब्बास رضي الله عنه अपने ख़ेमे से निकले और “लब्बैक अल्लाह हुम्मा लब्बैक, लब्बैक” कहा, **अगरचे मुआविया رضي الله عنه न चाहें**, और कहा: **“ऐ अल्लाह عزوجل उन पर लानत कर, कि उन लोगों ने हज़रत अली رضي الله عنه से बुग्ज़ की वजह से सुन्नत को तर्क कर दिया है।”**

سلسلة

الأحاديث الصحيحة

وشيء من فقهها وفوائدها

محمد ناصر الدين الألباني

المجلد الخامس

٢٠٠١ — ٢٥٠٠

مكتبة المعارف للنشر والتوزيع
لصاحبها سعد بن عبد الرحمن الراشد
الرياض

قلت: وإسناده جيد.

وله عند النسائي (٢ / ٢٨٧ و ٣٠٢) طريقان آخران عن علي.

وطريق آخر عند أحمد (١ / ١٤٧).

وله شاهد من حديث البراء بن عازب عند البخاري وغيره، وهو مخرج في «المشكاة» (٤٣٥٨ - التحقيق الثاني)، و«آداب الزفاف» (١٢٥).

وفي «صحيح مسلم» (٦ / ١٣٩ - ١٤٠) عن ابن عمر:

«أن ميثرته كانت أرجواناً».

قال ذلك رداً على من نسب إليه أنه يحرم ميثرة الأرجوان!

٢٣٩٧ - (نهى عن سبِّ الأمواتِ).

أخرجه الحاكم (١ / ٣٨٥) عن شعبة عن مسعر عن زياد بن علاقة عن عمه:

«أن المغيرة بن شعبة سب علي بن أبي طالب، فقام إليه زيد بن أرقم فقال: يا مغيرة! ألم تعلم أن رسول الله ﷺ نهى عن سب الأموات؟ فلمَ تسب علياً وقد مات؟!»، وقال:

«صحيح على شرط مسلم»، ووافقه الذهبي.

قلت: وهو كما قالا، وعم زياد بن علاقة اسمه قطبة بن مالك، وقد اختلف في إسناده على مسعر، فرواه شعبة عنه هكذا، وخالفه محمد بن بشر فقال: ثنا مسعر عن الحجاج مولى بني ثعلبة عن قطبة بن مالك عم زياد بن علاقة قال:

«نال المغيرة بن شعبة من علي، فقال زيد بن أرقم . . .» الحديث.

أخرجه أحمد (٤ / ٣٦٩)، وأبو نعيم في «أخبار أصبهان» (٢ / ١٥٣).

وتابعه وكيع: ثنا مسعر عن أبي أيوب مولى بني ثعلبة عن قطبة بن مالك به.

→ अल्लामा अलबानी की **"सिलसिलतुल अहादीस-ए-सहीहा"** में है: आप ﷺ ने मुर्दों को बुरा भला कहने से मना किया है। इसे इमाम हाकिम رحمه الله (१/३८५) ने शुअबा अन मसअर अन ज़ियाद बिन इलाक़ा अन अम्मा की सनद से रिवायत किया है कि हज़रत मुग़ीरा बिन शुअबा رضي الله عنه ने हज़रत अली رضي الله عنه को बुरा भला कहा तो हज़रत ज़ैद बिन अरक़म رضي الله عنه उन की तरफ़ बढ़े और फ़रमाया: **"क्या आपको नहीं मालूम कि रसूलल्लाह ﷺ ने मुर्दों को बुरा भला कहने से मना किया है, तो आप हज़रत अली رضي الله عنه को क्यूँ बुरा भला कह रहे हैं जबकि उनकी वफ़ात हो चुकी है?"**

☆ **यह सहीह है और मुस्लिम की शर्त पर है, और ज़हबी ने इसकी मुवाफ़िक़त की है।**

→ मैं (अल्लामा अलबानी) कहता हूँ कि ऐसा ही है जैसा इन दोनों ने कहा है, ज़ियाद बिन इलाक़ा के अम्म का नाम क़ुत्बा बिन मालिक है, मसअर के बाद इस में इख़्तलाफ़ हो गया है, तो शुअबा ने तो इसी तरह रिवायत किया है, और मोहम्मद बिन बशर ने इसे मसअर के बाद अन हज्जाज मौला बनी सअलबा अन क़ुत्बा बिन मालिक अम्म-ए-ज़ियाद बिन इलाक़ा से रिवायत किया है कि:

→ हज़रत मुग़ीरा बिन शुअबा رضي الله عنه ने हज़रत अली رضي الله عنه की कुछ तनक़ीस की तो हज़रत ज़ैद बिन अरक़म رضي الله عنه ने फ़रमाया......अलहदीस।

→ **इसे इमाम अहमद رحمه الله (४/३६९) और अबू नईम رحمه الله ने 'अख़्बार-ए-असफ़हान' (२/१५३) में रिवायत किया है।**

سلسلة
الأحاديث الصحيحة
وشيء من فقهها وفوائدها
تأليف
محمد ناصر الدين الألباني
رحمه الله
المجلد السابع
القسم الأول
٣٠٠٠ - ٣٣٢١
مكتبة المعارف للنشر والتوزيع
لصاحبها سعد بن عبدالرحمن الراشد
الرياض

هو مخرج في «الإرواء» (٢/ ٢٠ - ٢٣) ، و«صحيح

جمة صحيح بلا ريب ؛ لحسن إسناد الدارقطني
عل برواية مسلم الفروي ؛ لأنه من طريق بيان -
ثبت - ، ثم هو يرتقي إلى درجة الصحة ببعض
يصلح للشهادة منها مما لا يصلح ، وأخيراً شهادة
حيث المعنى ، مع ملاحظة أن ألفاظهم فيها من
تلفت لفظاً ؛ فهي متحدة معنى ، كما أشار إلى
حقيقاً قد لا تراه في مكان آخر . والله الموفق .

٣٣٣٢ - (كان يحبُّ علياً) .

أخرجه الطبراني في «المعجم الأوسط» (٦/ ٣٨٩/ ٥٨٢٨) ، و«المعجم الصغير» (١٩٩ - هندية) : حدثنا محمد بن الحسين أبو حُصين القاضي : قال : حدثنا عون ابن سلام قال : حدثنا عيسى بن عبدالرحمن السُّلَمي عن السُّدِّي عن أبي عبدالله الجَدَلي قال :

قالت لي أم سلمة : أيُسب رسول الله ﷺ بينكم على المنابر؟! قلت : سبحان الله ! وأنى يسب رسول الله ﷺ ؟! قالت : أليس يُسَبُّ علي بن أبي طالب ومن يحبه؟ وأشهد أن رسول الله ﷺ كان يحبه ! وقال الطبراني :

«لم يروه عن السدي إلا عيسى» .

قلت : ومن طريقه أخرجه أبو يعلى في «مسنده» (١٢/ ٤٤٤ - ٤٤٥) ، والطبراني أيضاً في «المعجم الكبير» (٢٣/ ٣٢٣/ ٧٣٨) من طرق أخرى عن عيسى به .

قلت : وهذا إسناد جيد ، ورجاله كلهم ثقات ، وفي السدي - واسمه إسماعيل بن عبدالرحمن - كلام يسير لا يضر ، وهو من رجال مسلم . وأما إعلال المعلق على «المسند» بقوله :

«رجاله ثقات إلا أنه - عندي - منقطع ، ما علمت رواية لإسماعيل بن عبدالرحمن السدي عن أبي عبدالله الجدلي فيما اطلعت عليه . والله أعلم» !

قلت : وهذا من أسمج ما رأيت من كلامه ؛ فإن السدي تابعي روى عن أنس في «صحيح مسلم» ، ورأى جماعة من الصحابة مثل الحسن بن علي ، وعبدالله بن عمر ، وأبي سعيد ، وأبي هريرة كما في «تهذيب المزي» ، يضاف إلى ذلك أن السدي لم يرم بتدليس ، فيُكتَفى في مثله المعاصرة ، كما هو مذهب جمهور الحفاظ الأئمة ، فلعله جنح به القلم إلى مذهب الإمام البخاري في «صحيحه» الذي يشترط اللقاء وعدم الاكتفاء بالمعاصرة ، وما أظنه يتبناه ؛ وإلا انهار مئات التصحيحات والتحسينات التي قررها ، ويغلب عليه التساهل في الكثير منها ، وبخاصة ما كان فيها من الرواة ممن لم يوثقهم أحد غير ابن حبان ، وهو لا يشترط اللقاء !

ومحمد بن الحسين شيخ الطبراني ؛ مما فات على صاحبنا الشيخ الأنصاري رحمه الله أن يترجم له في كتابه النافع : «بلغة القاصي والداني» ، وقد ترجم له الخطيب (٢/ ١٢٩) ترجمة حسنة ، وأنه روى عنه جماعة من الحفاظ ، وفاته الطبرانيُّ ، ثم قال :

«وكان فهماً ، صنف «المسند» . وقال الدارقطني : كان ثقة . وقال إبراهيم بن إسحاق الصواف : أبو حصين صدوق ، معروف بالطلب ، ثقة . مات سنة (٢٩٦)» .

→ अल्लामा अलबानी की **“सिलसिलतुल अहादीसुल सहीहा”** में है: अबू अब्दुल्लाह जदली कहते हैं: मुझ से हज़रत उम्म-ए-सलमा ﵂ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हारे दरमियान रसूलल्लाह ﷺ को मिम्बरों पर बुरा भला कहा जाता है?” मैं ने कहा: “अल्लाह ﷻ ! की ज़ात पाक है!, अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ को कहाँ बुरा भला कहा जाता है?” आप ﵂ ने फ़रमाया: “क्या हज़रत अली ﵁ और उनके मुहिब्बीन को बुरा भला नहीं कहा जाता? और मैं गवाही देती हूँ कि रसूलल्लाह ﷺ उन से मुहब्बत फ़रमाते थे।”

✮ **मैं (अल्लामा अलबानी) कहता हूँ: इसकी सनद उम्दा है।**

ن عُمَرَ حِينَ زَالَتِ الشَّمْسُ ، وَأَنَا مَعَهُ ،
فَخَرَجَ إِلَيْهِ الحَجَّاجُ ، وَعَلَيْهِ مِلْحَفَةٌ ؟
يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ ؟! قَالَ : الرَّوَاحَ ، إِنْ
هَذِهِ السَّاعَةَ ؟! قَالَ : نَعَمْ ، قَالَ :
ثُمَّ ، فَانْتَظَرَهُ حَتَّى خَرَجَ ، فَسَارَ بَيْنِي وَبَيْنَ
أَنْ تُصِيبَ السُّنَّةَ ، فَأَقْصِرِ الخُطْبَةَ وَعَجِّلِ
ذَلِكَ ، قَالَ : صَدَقَ

- صحيح : خ (١٦٦٠).

١٦٧- التَّلْبِيَةُ بِعَرَفَةَ

٣٠٠٦- عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ ، قَالَ : كُنْتُ مَعَ ابْنِ عَبَّاسٍ بِعَرَفَاتٍ ، فَقَالَ : مَا لِي لَا أَسْمَعُ النَّاسَ يُلَبُّونَ ؟ قُلْتُ : يَخَافُونَ مِنْ مُعَاوِيَةَ ، فَخَرَجَ ابْنُ عَبَّاسٍ مِنْ فُسْطَاطِهِ ، فَقَالَ : لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ ! فَإِنَّهُمْ قَدْ تَرَكُوا السُّنَّةَ مِنْ بُغْضِ عَلِيٍّ.

- صحيح الإسناد

١٦٨- الخُطْبَةُ بِعَرَفَةَ قَبْلَ الصَّلَاةِ

٣٠٠٧- عَنْ نُبَيْطٍ ، قَالَ : رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَخْطُبُ عَلَى جَمَلٍ أَحْمَرَ بِعَرَفَةَ ، قَبْلَ الصَّلَاةِ.

- صحيح : « صحيح أبي داود » (١٦٧٣).

٣١٣ الحاسب

→ अल्लामा अलबानी - **“सहीह सुनन निसाई”** में है: : हज़रत सईद बिन जबीर ﵁ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत इब्न-ए-अब्बास ﵁ के साथ मैदान-ए-अरफ़ा में था, तो आप ﵁ ने मुझ से पूछा: “क्या बात लोगों के तलबिया कहने की आवाज़ नहीं आ रही है?” मैं ने कहा: **“लोग हज़रत मुआविया ﵁ से डर रहे हैं”**, तो हज़रत इब्न-ए-अब्बास ﵁ अपने ख़ेमे से निकले और **“लब्बैक अल्लाह हुम्मा लब्बैक, लब्बैक”** कहा, और कहा कि “उन लोगों ने हज़रत अली ﵁ से बुग्ज़ की वजह से सुन्नत को तर्क कर दिया है।”

✯ **यह सनद सहीह है।**

المعجم الكبير

للحافظ أبي القاسم سليمان بن أحمد الطبراني

٢٦٠هـ — ٣٦٠هـ

حققه وخرج أحاديثه

حمدي عبد المجيد السلفي

الجزء الثالث

الناشر
مكتبة ابن تيمية
القاهرة: ٨٦٤٢٤٠

ابو كبير عن الحسن بن علي رضي الله عنهما

٢٧٢٧ — حدثنا عبدالله بن أحمد بن حنبل • وثنا عبد الرحمن بن سلم الرازي قالا ثنا عباد بن يعقوب الاسدي ثنا علي بن عابس عن بدر بن الخليل ابي الخليل عن أبي كبير قال كنت جالسا عند الحسن بن علي رضي الله عنه فجاءه رجل فقال لقد سب عند معاوية عليا رضي الله عنهما سبا قبيحا رجل يقال له معاوية يعني ابن حديج/تعرفه ؟ قال نعم قال اذا رأيتـه فائتني به قال فرآه عند دار عمرو بن حريث فأراه اياه قال أنت معاوية بن حديج ؟ فسكت فلم يجبه ثلاثا ثم قال أنت السباب عليا عند ابن آكلة الاكباد أما لئن وردت عليه الحوض وما أراك تـرده لتجدنه مشمرا حاسرا ذراعيه يذود الكفار والمنافقين عن حوض رسول الله صلى الله عليه وسلم كما تذاد غريبة الابل عـن صاحبها قول الصادق المصدوق أبي القاسم صلى الله عليه وسلم •

المسيب بن نجية عن الحسن بن علي رضي الله عنه

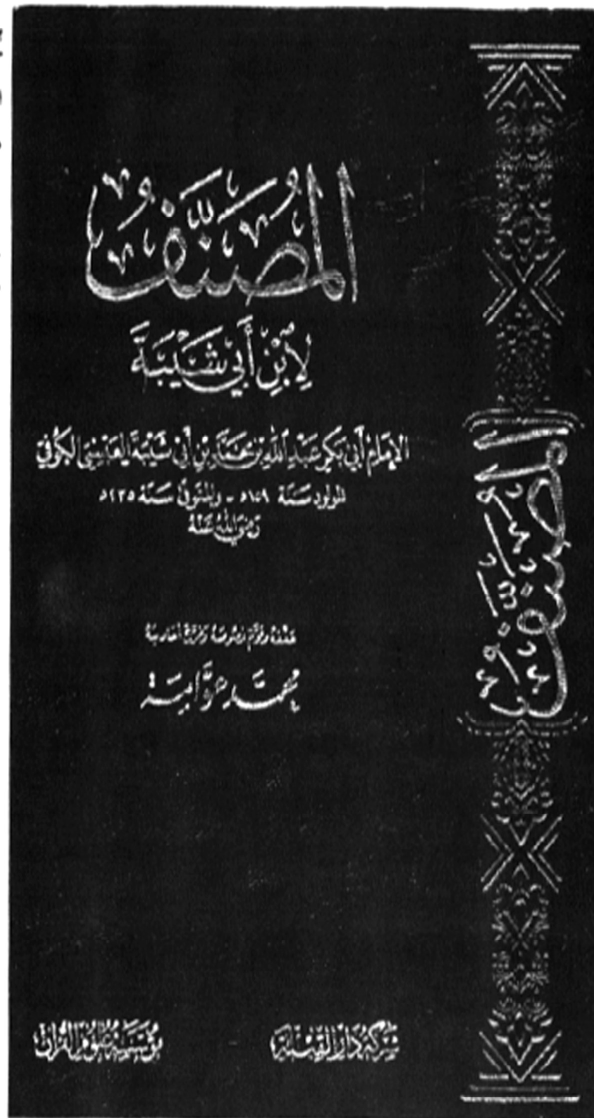
٢٧٢٨ — حدثنا محمد بن عبدالله الحضرمي ثنا ابراهيم ابن الحسن التغلبي ثنا عبيدالله بن بكير الغنوي عن حكيم بن جبير عن أبي ادريس عن المسيب بن نجية عن الحسن بن علـي رضي الله عنه قال قال رسول الله صـلى الله عليه وسـلم : « الحرب خدعة » •

٢٧٢٧ — قال في المجمع ٩/١٣١ ورواه الطبراني باسنادين في أحدهما علي بن ابي طلحة مولى بني امية ولم أعرفه • وبقية رجاله ثقات • والاخر ضعيف • وسياتي ٢٧٤٩ •

٢٧٢٨ — قال في المجمع ٥/٣٢٠ رواه ابو يعلى ورقة ٣١٠-٣١١ وفيه حكيم بن جبير وهو متروك ضعفه الجمهور وقال أبو حاتم محله الصدق ان شاء الله • ولم ينسبه الى الكبير •

→ इमाम तबरानी رحمه الله की **"मोअज्जम कबीर"** में है: अबू कबीर कहते हैं कि मैं हज़रत हसन رضي الله عنه के पास बैठा हुआ था कि आप رضي الله عنه के पास एक शख़्स आया तो आप رضي الله عنه ने उससे कहा: "हज़रत मुआविया رضي الله عنه के पास एक शख़्स ने जिस का नाम मुआविया बिन हदीज है हज़रत अली رضي الله عنه को बुरा भला कहा है, क्या तुम उसे पहचानते हो?" उसने कहा: "हाँ", आप رضي الله عنه ने उससे कहा: "जब तुम उसे देखो तो मेरे पास ले कर आना," उसने उस शख़्स को उमरो बिन हरीस के घर के पास देखा तो हज़रत हसन رضي الله عنه को दिखाया, आप رضي الله عنه ने उस शख़्स से पूछा: "क्या तू मुआविया बिन हदीज है?" वह ख़ामोश रहा, तीन मरतबा आप رضي الله عنه ने पूछा मगर उसने जवाब न दिया, फिर आप(इमाम हसन) رضي الله عنه ने कहा: **"क्या तू ही है जिसने जिगर खाने वाली के बेटे के पास (या'नी हज़रत मुआविया رضي الله عنه के पास जो हज़रत हिंदा رضي الله عنها के बेटे हैं) हज़रत अली رضي الله عنه को बुरा भला कहा है? जब तू हज़रत अली رضي الله عنه के पास हौज़-ए-कौसर पर आएगा, और मुझे नहीं लगता तू आएगा भी, तो तू देखेगा कि हज़रत अली رضي الله عنه अपने हाथों से कुफ़्फ़ार-ओ-मुनाफ़िक़ीन को रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم के हौज़ से इस तरह हटा रहे हैं जैसे अजनबी ऊँटों को हटाया जाता है, यह सादिक़ व मसदूक़ अबुल क़ासिम صلى الله عليه وآله وسلم का फ़रमान है।"**

→ **मजमा उज़्ज़वाइद (९/१३१) में है: इसे इमाम तबरानी ने रिवायत किया है, इसकी एक सनद में अली बिन अबू तल्हा मौला बनी उमैया है जिसे मैं नहीं पहचानता, बाक़ी रावी सिक्क़ा(Trustworthy) हैं।**



ابن أرقم: أن النبي صلى الله عليه وسلم قال لعليٍّ: «أنت مني بمنزلة هارون من موسى، إلا أنه لا نبيَّ بعدي».

٣٢٧٤١ ـ حدثنا أبو معاوية، عن موسى بن مسلم، عن عبد الرحمن

زدتها منه، ولا بد منها.

وقد رواه الطبراني من وجه آخر ضعيف من حديث زيد بن أرقم والبراء بن عازب معاً ٥ (٥٠٩٤، ٥٠٩٥)، وقارنه بما في «السنة» لابن أبي عاصم (١٣٦٢، ١٣٦٣).

٣٢٧٤١ ـ إسناده قوي.

وقد رواه ابن أبي عاصم في «السنة» (١٣٨٧) عن المصنف، به.

ورواه بمثل إسناد المصنف: ابن ماجه (١٢١).

ورواه النسائي (٨٣٩٩ م) من طريق موسى بن مسلم، به.

ورواه جماعة إلا قوله «من كنت مولاه فعليٌّ مولاه» فعندهم بدله «اللهم هؤلاء أهلي» وذلك عند نزول قوله تعالى: ﴿فقل تعالوا ندعُ أبناءنا وأبناءكم﴾.

رواه بهذا اللفظ: أحمد ١: ١٨٥، ومسلم ٤: ١٨٧١ (٣٢)، والترمذي (٢٩٩٩، ٣٧١٤) وقال: حسن صحيح، والنسائي (٨٣٩٩، ٨٤٣٩)، والحاكم ـ من طريق أحمد ـ ٣: ١٠٨ ـ ١٠٩، ومن طريق غير أحمد ٣: ١٥٠، وصححه على شرطهما، فوافقه الذهبي في الموضع الثاني، وقال في الموضع الأول: بل على شرط مسلم فقط.

وروى الحاكم طرفاً منه ٣: ١٤٧ من طريق علي بن ثابت الجزري، عن بكير بن مسمار، به، وسكت عنه الحاكم، وقال الذهبي: علي وبكير تكلم فيهما.

قلت: عليٌّ: ليس فيه إلا التوثيق وما يقرب منه، سوى قول ابن حبان فيه في «الثقات» ٨: ٤٥٦: ربما أخطأ. فلا يلتفت حينئذ إلى تضعيف الأزدي له، وبكير: نقل

المجلد السابع عشر

ابن سابط، عن سعد قال: قدم معاوية في بعض حجَّاته فأتاه سعد. فذكروا علياً، فنال منه معاوية فغضب سعد فقال: تقول هذا لرجل سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول له ثلاثَ خصال، لأن تكون لي خَصلة منها أحبُّ إليَّ من الدنيا وما فيها، سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: «من كنت مولاه فعليٌّ مولاه»، وسمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول: «أنت مني بمنزلة هارون من موسى، إلا أنه لا نبي بعدي»، وسمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: «لأعطينَّ الرايةَ رجلاً يحب الله ورسوله».

٣٢٧٤٢ ـ حدثنا عبد الله بن نمير، عن الحارث بن حَصيرة قال: حدثني أبو سليمان الجهني ـ يعني: زيد بن وهب ـ قال: سمعت علياً على المنبر وهو يقول: أنا عبد الله وأخو رسوله صلى الله عليه وسلم، لم يقلها أحد قبلي ولا يقولها أحد بعدي إلا كذابٌ مفتر.

٣٢٧٤٣ ـ حدثنا عليّ بن هاشم، عن ابن أبي ليلى، عن الحكم

الحافظ في «التهذيب» ١: ٤٩٥ عن الحاكم نفسه أن مسلماً استشهد ببكير في موضعين من «صحيحه».

٣٢٧٤٢ ـ انظر ما سيأتي قريباً برقم (٣٢٧٤٧).

٣٢٧٤٣ ـ سيكرره المصنف برقم (٣٨٠٣٨).

وقوله في الفقرة الأولى «فإنه يسْمُر معه»: أثبتُّه هكذا من مصادر التخريج، وهو في النسخ: فإنه يسهر معه، وفي آخر الفقرة ما يؤيد الذي أثبته.

وهذا إسناد ضعيف من أجل محمد بن عبد الرحمن بن أبي ليلى، لكنه توبع، تابعه أبو إسحاق الهمداني، كما يأتي.

→ **“मुसन्निफ़ इब्न-ए-अबी शैबा”** में है: हज़रत मुआविया رضي الله عنه एक मर्तबा हज करने आए तो हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास رضي الله عنه उन के पास गए, हज़रत अली رضي الله عنه का तज़किरा आया तो हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने हज़रत अली رضي الله عنه के बारे में कोई नामुनासिब बात कही, हज़रत साद رضي الله عنه गुस्सा हुए।

☆ **मुहक़्क़िक़-ए-किताब मुहम्मद अवामा कहते हैं: इसकी सनद क़वी(Strong) है।**

المعجم الكبير

للحافظ أبي القاسم سليمان بن أحمد الطبراني

٢٦٠هـ — ٣٦٠هـ

حققه وخرج احاديثه

حمدي عبدالمجيد السلفي

الجزء الثالث

الناشر

مكتبة ابن تيمية

القاهرة : ٨٦٤٢٤٠٠

٢٦٩٨ ـ حدثنا زكريا بن يحيى الساجي ثنا محمد بن بشار بندار ثنا عبدالملك بن الصباح المسمعي ثنا عمران بن جدير أظنه عن أبي مجلز قال قال عمرو بن العاص والمغيرة بن شعبة لمعاوية ان الحسن بن علي عيي وان له كلاما ورأيا وانه قد علمنا كلامه فيتكلم كلاما فلا يجد كلاما فقال لا تفعلوا فأبوا عليه فصعد عمرو المنبر فذكر عليا ووقع فيه ثم صعد المغيرة بن شعبة فحمد الله وأثنى عليه ثم وقع في علي رضي الله عنه ثم قيل للحسن بن علي اصعد فقال لا أصعد ولا أتكلم حتى تعطوني ان قلت حقا ان تصدقوني وان قلت باطلا أن تكذبوني فأعطوه فصعد المنبر فحمد الله وأثنى عليه فقال بالله يا عمرو وأنت يا مغيرة تعلمان أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال : « لعن السائق والراكب » أحدهما فلان ؟ قالا اللهم نعم بلى قال أنشدك الله يا معاوية ويا مغيرة أتعلمان أن رسول الله صلى الله عليه وسلم لعن عمرا بكل قافية قال لعنة ؟ قالا اللهم بلى قال أنشدك الله ياعمرو وأنت يا معاوية بن أبي سفيان أتعلمان أن رسول الله صلى الله عليه وسلم لعن قوم هذا ؟ قالا بلى قال الحسن فاني أحمد الله الذي وقعتم فيمن تبرأ من هذا .

٢٦٩٩ ـ حدثنا محمد بن عون/السيرافي ثنا الحسن بن علي

٢٦٩٨ ـ رواه الطبراني عن شيخه زكريا بن يحيى الساجي قال الذهبي احد الاثبات ما علت فيه جرحا اصلا وقال ابن القطان مختلف فيه في الحديث وثقه قوم وضعفه اخرون وبقية رجاله رجال صحيح .

٢٦٩٩ ـ قال في المجمع ١٧٨/٩ رواه الطبراني عن شيخه محمد بن عون السيرافي ولم أعرفه وبقية رجاله ثقات . وروى ابو يعلى قول الحسن لابن الاعور قال في المجمع ١١٣/١ ورجاله رجال الصحيح غير عبدالرحمن بن ابي عوف وهو ثقة .

→ **"मोअज्जम कबीरुल तबरानी"** में है: अबू मुजलज़ कहते हैं कि 'हज़रत उमरो बिन आस رضي الله عنه और हज़रत मुग़ीरा बिन शुअबा رضي الله عنه ने हज़रत मुआविया رضي الله عنه से कहा कि हज़रत हसन बिन अली رضي الله عنه नाक़ादिरुल कलाम हैं, उनके पास कलाम और राय तो है लेकिन वह कलाम करते हैं तो कोई बात नहीं पाते', तो हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने कहा: ऐसा न करो, लेकिन वह लोग न माने, हज़रत उमरो رضي الله عنه मिंबर पर चढ़े और हज़रत अली رضي الله عنه का तज़किरा किया तो कुछ तान किया, फिर हज़रत मुग़ीरा رضي الله عنه मिंबर पर चढ़े तो उन्हों ने अल्लाह سبحانه وتعالى! की हम्द ओ सना की फिर हज़रत अली رضي الله عنه पर कुछ तान किया, फिर हज़रत हसन رضي الله عنه से कहा गया तो आप رضي الله عنه ने फ़रमाया: "मैं तब तक मिंबर पर नहीं चढूँगा और कलाम नहीं करूंगा जब तक तुम लोग मुझे इस बात का अहद नहीं दोगे कि अगर मैं सच कहूँ तो मेरी तसदीक़ करोगे और अगर मैं झूठ कहूँ तो मेरी तक्ज़ीब करोगे", उन लोगों ने यह अहद किया तो फिर आप رضي الله عنه मिंबर पर चढ़े और अल्लाह سبحانه وتعالى! की हम्द ओ सना की, और फिर फ़रमाया: "ऐ उमरो और ऐ मुग़ीरा! आप दोनों जानते हैं कि रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: 'हाँकने वाले और सवार पर अल्लाह سبحانه وتعالى! की लानत की, जिन में एक फ़लाँ है?', उन दोनों ने कहा: 'अल्लाह سبحانه وتعالى! की क़सम, क्यूँ नहीं", फिर फ़रमाया: "ऐ उमरो और मुआविया! क्या आप दोनों जानते हैं रसूलल्लाह ﷺ ने उस की क़ौम पर लानत की?", दोनों ने कहा: "क्यूँ नहीं", फिर हज़रत हसन رضي الله عنه ने फ़रमाया: "मैं अल्लाह की तारीफ़ करता हूँ कि तुम ने उस पर तान किया जो इससे बरी है।"

العِقْدُ الفَرِيد

تأليف

الفقيه أحمد بن محمد بن عبد ربه الأندلسي

المتوفى سنة ٣٢٨هـ

بتحقيق

دكتور

مفيد محمد قميحة

الجزء الثاني

دار الكتب العلمية

بيروت - لبنان

لأقتلنك أو تبرأ من عليّ. فقال: أنا من عليّ ومن عثمان بريء، يريد أنه من عليّ، وبريء من عثمان.

أبو بكر بن أبي شيبة قال: قال الوليد بن عقبة على المنبر بالكوفة: أقسم على مَنْ سمّاني أشْعَرَ بَرْكاً[1] إلا قام. فقام إليه رجل من أهل الكوفة فقال له: ومَنْ هذا الذي يقوم إليك فيقول: أنا الذي سميتُك أشعر بركاً؟ وكان هو الذي سمّاه بذلك.

وقال معاوية لصعصعة بن صوحان: اصعد المنبر فالعن علياً. فامتنع من ذلك وقال: أو تعفيني؟ قال: لا. فصعد المنبر فحمد الله وأثنى عليه ثم قال: معاشرَ الناس، إن معاوية أمرني أن ألعن علياً، فالعنوه لعنه الله.

الكناية عن الكذب في طريق المدح

ابن الهيثم وغلام سكران:

المدائنيّ قال: أُتِيَ العُريان بن الهيثم بغلام سكران، فقال له: من أنت؟ فقال:

أنا ابنُ الذي لا ينزلُ الدهرَ قِدْرُهُ ... وإن نزَلتْ يوماً فسوفَ تعودُ

ترى الناسَ أفواجاً إلى ضوْءِ نارِهِ ... فمنهم قِيامٌ عندها وقُعودُ

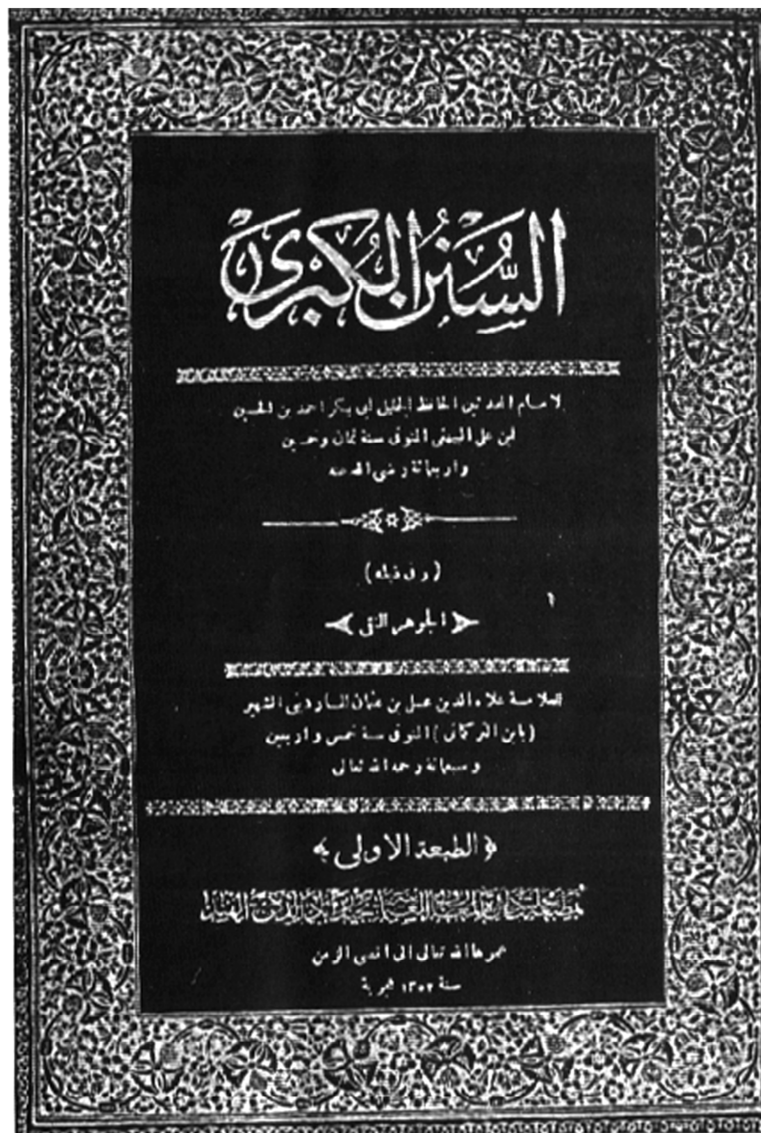
فظنه ولداً لبعض الأشراف، فأمر بتخليته، فلما كُشف عنه قيل له: إنه ابن باقِلاّني.

عيسى بن موسى وابن شبرمة في متهم:

ودخل رجل على عيسى بن موسى وعنده ابن شبرمة القاضي، فقال له: أتعرف هذا الرجل؟ وكان رُمِيَ عنده بريبة: فقال: إن له بيتاً وقَدَماً وشرفاً. فخلّى سبيله. فلما انصرف ابنُ شُبرمة قال له أصحابُه: أكنت تعرف هذا الرجل؟ قال: لا، ولكني عرفتُ أن له بيتاً يأوي إليه، وقَدَماً يمشي عليها، وشرفه أذناه ومَنكباه.

(١) أشعر بركاً: أي كثير شعر الصدر.

→ **"अलअक़्दुल फ़रीद"** में है: **हज़रत मुआविया ﷺ ने सअसआ बिन सोहान से कहा: "मिंबर पर चढ़ो और अली ﷺ पर लानत करो"**, उसने इन्कार किया, और कहा: "क्या आप मुझे मुआफ़ करेंगे?", हज़रत मुआविया ﷺ ने कहा: "नहीं", तो सअसआ मिंबर पर चढ़े और अल्लाह ﷻ ! की हम्द ओ सना के बाद कहा: **"ऐ लोगो! मुझे मुआविया ﷺ ने हज़रत अली ﷺ पर लानत करने का हुक्म दिया है तो तुम उन पर लानत करो, अल्लाह ﷻ ! की उन पर लानत हो।"**



السنن الكبرى

للامام المحدثين الحافظ الجليل ابي بكر احمد بن الحسين
ابن علي البيهقي المتوفى سنة ثمان وخمسين
واربعمائة رضي الله عنه

(وفي ذيله)

﴿الجوهر النقي﴾

للعلامة علاء الدين علي بن عثمان المارديني الشهير
(بابن التركماني) المتوفى سنة خمس واربعين
وسبعمائة رحمه الله تعالى

﴿الطبعة الاولى﴾

[illegible]

عمرها الله تعالى الى اقصى الزمن
سنة ١٣٥٢ هجرية

﴿السنن الكبرى مع الجوهر النقي﴾ (١١٣) ﴿كتاب الحج﴾ (ج - ٥)

(أخبرنا) أبو محمد عبدالله بن يوسف الاصبهاني أنبأ أبو سعيد ابن الاعرابي ثنا سعدان (ح وأخبرنا) أبو الحسين بن بشران ببغداد أنبأ اسمعيل بن محمد الصفار ثنا سعدان بن نصر ثنا سفيان عن سعد بن ابراهيم ذكره عن عبدالرحمن بن الاسود ان اباه رقى الى ابن الزبير يوم عرفة فقال ما منعك ان تهل فقد سمعت عمر بن الخطاب رضي الله عنه يهل في مكانك هذا فاهل ابن الزبير -

(أخبرنا) أبو عبدالله الحافظ ثنا أبو العباس محمد بن يعقوب ثنا احمد بن شيبان الرملي ثنا سفيان بن عيينة عن زيد بن اسلم عن عطاء بن يسار عن ابن عباس قال سمعت عمر رضي الله عنه يهل بالمزدلفة فقلت له يا امير المؤمنين فيم الاهلال قال وهل قضينا نسكنا -

(أخبرنا) أبو الحسن محمد بن الحسين العلوي أنبأ عبدالله بن محمد بن الحسن ابن الشرقي ثنا علي بن سعيد النسوي ثنا خالد بن مخلد ثنا علي بن صالح عن ميسرة بن حبيب النهدي عن المنهال بن عمرو عن سعيد بن جبير قال كنا عند ابن عباس بعرفة فقال ياسعيد مالي لا أسمع الناس يلبون فقلت يخافون معاوية فخرج ابن عباس من فسطاطه فقال لبيك اللهم لبيك وان رغم انف معاوية اللهم العنهم فقد تركوا السنة من بغض علي رضي الله عنه -

(أخبرنا) أبو عبدالله الحافظ ثنا أبو العباس هو الأصم ثنا أبو يحيى زكريا بن يحيى بن اسد ثنا سفيان عن عبدالله هو ابن أبي يزيد سمع ابن عباس يقول لبي حتى تأتي (١) حرمك اذا رميت الجمرة -

(أخبرنا) علي بن احمد بن عبدان أنبأ احمد بن عبيد ثنا عبيد بن شريك ثنا أبو الجماهر ثنا عبدالعزيز عن ابراهيم بن عقبة عن كريب مولى ابن عباس قال ارسلني ابن عباس مع ميمونة زوج النبي صلى الله عليه وسلم يوم عرفة فاتبعت هودجها فلم ازل اسمعها تلبي حتى رمت جمرة العقبة ثم كبرت (وروينا) في ذلك ايضا عن الحسين بن علي رضي الله عنهما -

باب الوقوف بعرفة

(أخبرنا) أبو عبدالله الحافظ ثنا أبو عبدالله محمد بن يعقوب أنبأ محمد بن عبدالوهاب أنبأ محاضر ثنا هشام (ح وأنبأ) أبو عبدالله الحافظ أنبأ أبو عبدالله محمد بن يعقوب ثنا جعفر بن محمد بن الحسين ثنا يحيى بن يحيى أنبأ أبو معاوية عن هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة رضي الله عنها قالت كانت قريش ومن دان دينها يقفون بالمزدلفة وكانوا يسمون الحمس وكان سائر العرب يقفون بعرفة فلما جاء الاسلام امر الله نبيه صلى الله عليه وسلم ان يأتي عرفات فيقف بها ثم يفيض منها فذلك قوله (ثم افيضوا من حيث افاض الناس) لفظ حديث أبي معاوية - رواه البخاري في الصحيح عن علي عن أبي معاوية ورواه مسلم عن يحيى بن يحيى -

(وأخبرنا) أبو الحسن محمد بن الحسين العلوي أنبأ أبو حامد ابن الشرقي ثنا محمد بن يحيى الذهلي ثنا عبدالرزاق أنبأ الثوري عن هشام بن عروة عن ابيه عن عائشة رضي الله عنها قالت قالت قريش نحن قواطن البيت لانجاوز الحرم فقال الله سبحانه وتعالى (ثم افيضوا من حيث افاض الناس) -

(أخبرنا) ابو عبدالله الحافظ اخبرني أبو النضر الفقيه ثنا محمد بن ايوب البجلي ثنا مسدد ثنا سفيان عن عمرو عن محمد بن جبير ابن مطعم عن ابيه قال اضللت بعيرا لي فذهبت اطلبه يوم عرفة فرأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم واقفا بعرفة فقلت هذا والله من الحمس ماشأنه - رواه البخاري في الصحيح عن مسدد واخرجه مسلم من أبي بكر بن أبي شيبة عن سفيان -

(وأخبرنا) أبو عمرو والاديب أنبأ أبو بكر الاسماعيلي اخبرني أبو احمد بن زياد ثنا ابن أبي عمر ثنا سفيان (ح وأخبرنا) أبو بكر قال وأخبرني الحسن بن سفيان ثنا أبو بكر يعني ابن أبي شيبة (قال وأنبأ) أبو بكر قال وثنا عمران ثنا عثمان قالا ثنا سفيان بن عيينة عن عمرو بن دينار - فذكر الحديث بنحوه الا انه قال هذا من الحمس فماله خرج من الحرم قال سفيان يعني

(٢) مص - تقضي -

→ इमाम बैहक़ी رضی اللہ عنہ की **"सुनन कुबरा"** में है: हज़रत सईद बिन जबीर رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत इब्न-ए-अब्बास رضی اللہ عنہ के साथ मैदान-ए-अरफ़ा में था, तो आप رضی اللہ عنہ ने मुझ से पूछा: "क्या बात लोगों के तलबिया कहने की आवाज़ नहीं आ रही है?" मैं ने कहा: **"लोग हज़रत मुआविया رضی اللہ عنہ से डर रहे हैं"**, तो हज़रत इब्न-ए-अब्बास رضی اللہ عنہ अपने ख़ेमे से निकले और **"लब्बैक अल्लाह हुम्मा लब्बैक, लब्बैक"** कहा, **"अगरचे मुआविया رضی اللہ عنہ न चाहें,"** और कहा: **"ऐ अल्लाह سبحانہ وتعالیٰ उन पर लानत कर, कि उन लोगों ने हज़रत अली رضی اللہ عنہ से बुग्ज़ की वजह से सुन्नत को तर्क कर दिया है।"**

مِنهاجُ السُّنّةِ النّبويّة

في نقضِ كلامِ الشيعةِ القدريّة

لابن تيمية

أبي العباس تقي الدين أحمد بن عبد الحليم

تحقيق

الدكتور محمد رشاد سالم

الجزء الخامس

الأحاديث المكذوبة ما لا يخفى كذبه على من له أدنى معرفة بالحديث، فضلاً عن علماء الحديث، وليس هو من علماء الحديث ولا ممن يُرجع إليه فى هذا الشأن ألبتة[1]. وهذه الأحاديث مما يعلم أهل المعرفة بالحديث أنها من المكذوبات. وهذا الرجل قد ذكر أنه يذكر ما هو صحيح عندهم، ونقلوه فى المعتمد من قولهم وكتبهم، فكيف يذكر ما اجمعوا على أنه كذب موضوع، ولم يُروَ[2] فى شىء من كتب الحديث المعتمدة، ولا صححه أحد من أئمة الحديث.

فالعشرة الأول[3] كلها كذب إلى [آخر حديث]: قتله[4] لعمرو بن عبد ودّ. وأما حديث سعد لما أمره معاوية بالسب فأبى، فقال: ما منعك أن تسب عليَّ بن أبى طالب؟ فقال: ثلاث قالهن رسول الله صلى الله عليه وسلم فلن أسبه، لأن يكون لى واحدة منهن أحب إلىَّ من حمر النعم.. الحديث. فهذا حديث صحيح رواه مسلم فى صحيحه[5] وفيه ثلاث فضائل لعليٍّ لكن ليست من خصائص الأئمة ولا من خصائص

(١) يقول الأستاذ محب الدين الخطيب فى تعليقه على «منهاج الاعتدال» ص ٣١٢: «أخطب خوارزم أديب متشيع من تلاميذ الزمخشرى، اسمه الموفق بن أحمد بن إسحاق (٤٨٤ ـ ٥٦٨) له ترجمة فى «بغية الوعاة» ٤٠١ و «روضات الجنات» (الطبعة الثانية) ٧٢٢ وغيرهما، وكتابه الذى كَذَب فيه هذا الخبر على رسول الله صلى الله عليه وسلم اسمه «مناقب أهل البيت». . وانظر ترجمة أبى المؤيد الموفق بن أحمد المكّى الخوارزمى فى: الأعلام ٢٨٩/٨ وذكر الزركلى أن كتابه «مناقب أمير المؤمنين على بن أبى طالب» مطبوع.

(٢) ن، م، و، ى: ولا يروى.

(٣) ا، ب: الأولى.

(٤) ن، م، و: إلى قوله. . .

(٥) سبق الحديث فيما مضى ١/٥٠١ وذكرت هناك أنه فى: مسلم ٤/١٨٧١.

→ **इब्न-ए-तैमिया** की **“मिनहाजुल सुन्नता अलनबविया”** में है: और रही वह हदीस कि जिसमें हज़रत साद رضي الله عنه को हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने बुरा भला कहने का हुक्म दिया तो उन्हों ने इन्कार किया, तो हज़रत मुआविया رضي الله عنه ने उनसे पूछा: “तुम को क्या बात मानेअ है कि तुम अली رضي الله عنه को बुरा भला कहो?”, तो हज़रत साद رضي الله عنه ने फ़रमाया: **“मैं ने उनके बारे में रसूलल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم से ऐसी तीन बातें सुनी हैं कि उसके बाद मैं उन्हें बुरा भला नहीं कह सकता, और अगर मुझे उनमें से एक भी हासिल हो जाए तो मेरे लिए सुर्ख़ ऊँटों से भी ज़ियादा महबूब है।”**

☆ **यह हदीस सहीह है, मुस्लिम ने इसे रिवायत किया है, इसमें हज़रत अली رضي الله عنه के तीन फ़ज़ाइल बयान किए गए हैं।**

١٦ ـ باب من اغبرَّتْ قدماه في سبيلِ الله، وقول الله عزَّ وجل:

﴿ مَا كَانَ لِأَهْلِ ٱلْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُم مِّنَ ٱلْأَعْرَابِ أَن يَتَخَلَّفُوا۟ عَن رَّسُولِ ٱللَّهِ ﴾

إلى قوله: ﴿ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُحْسِنِينَ ﴾. [التوبة: ١٢٠]

٢٨١١ ـ حدَّثنا إسحاقُ أخبرنا محمدُ بنُ المباركِ حدَّثنا يحيىٰ بنُ حمزة قال: حدَّثني يَزيدُ بنُ أبي مَريمَ أخبرنا عَبايةُ بنُ رفاعَةَ بن رافع بنِ خَديجٍ قال: أخبرني أبو عبسٍ هو عبدُ الرحمنِ بنُ جبرٍ أنَّ رسولَ اللهِ ﷺ قال: «ما اغبرَّت قدمَا عبدٍ في سبيلِ اللهِ فتَمَسَّهُ النارُ».

[انظر الحديث: ٩٠٧].

١٧ ـ باب مَسح الغبارِ عنِ الرأسِ في سبيلِ الله

٢٨١٢ ـ حدَّثنا إبراهيمُ بنُ موسىٰ أخبرنَا عبدُ الوهَّابِ حدَّثنا خالدٌ عن عِكرمةَ أنَّ ابنَ عبَّاسٍ قال لهُ ولعليِّ بنِ عبدِ اللهِ: ائتيا أبا سعيد فاسمعا من حديثِه. فأتَيا وهوَ وأخوهُ في حائطٍ لهما يَسقيانه، فلمَّا رآنا جاء فاحْتَبىٰ وجَلسَ فقال: «كنَّا نَنقُلُ لَبِنَ المسجدِ لَبِنةً لَبِنة، وكان عمَّارٌ ينقُلُ لبنَتين لبنتين، فمرَّ بهِ النبيُّ ﷺ ومَسحَ عن رأسهِ الغُبارَ وقال: وَيحَ عمارٍ تقتُلُهُ الفئةُ الباغية، عمَّارٌ يَدْعوهم إلى اللهِ ويَدْعونهُ إلى النار» [انظر الحديث: ٤٤٧].

١٨ ـ باب الغُسْلِ بعدَ الحربِ والغُبارِ

٢٨١٣ ـ حدَّثنا محمدٌ أخبرَنا عَبدةُ عن هِشام بنِ عُروةَ عن أبيهِ عن عائشةَ رضيَ اللهُ عنها «أنَّ رسولَ اللهِ ﷺ لما رجَعَ يومَ الخَندقِ ووَضعَ السلاحَ واغتَسَل، فأتاهُ جبريلُ وقد عَصبَ رأسَهُ الغُبارُ فقال: وَضعتَ السِّلاحَ؟ فواللهِ ما وَضعتُهُ. فقال رسولَ اللهِ ﷺ: فأينَ؟ قال: هاهنا ـ وأومأَ إلى بني قُرَيظةَ ـ قالت: فخرَجَ إليهم رسولُ اللهِ ﷺ». [انظر الحديث: ٤٦٣].

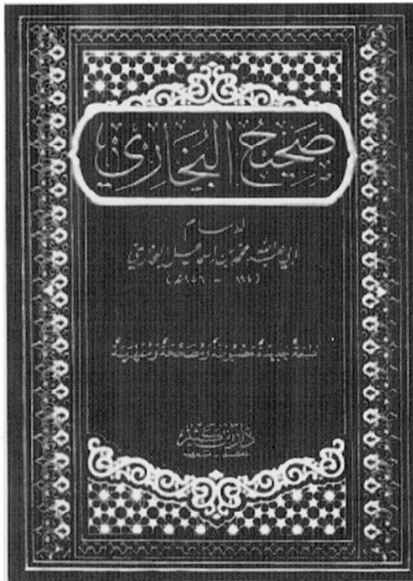
١٩ ـ باب فضلِ قولِ اللهِ تعالى: ﴿ وَلَا تَحْسَبَنَّ ٱلَّذِينَ قُتِلُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ أَمْوَٰتًۢا ۚ بَلْ أَحْيَآءٌ عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿١٦٩﴾ فَرِحِينَ بِمَآ ءَاتَىٰهُمُ ٱللَّهُ مِن فَضْلِهِۦ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِٱلَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا۟ بِهِم مِّنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٧٠﴾ ۞ يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَفَضْلٍ وَأَنَّ ٱللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴾ [آل عمران: ١٦٩ ـ ١٧١].

٢٨١٤ ـ حدَّثنا إسماعيلُ بنُ عبدِ اللهِ قال: حدَّثني مالكٌ عن إسحاقَ بنِ عبدِ اللهِ بنِ أبي طلحةَ عن أنسِ بنِ مالكٍ رضي اللهُ عنه قال: «دعا رسولُ اللهِ ﷺ على الذينَ قتلوا أصحابَ

٦٣ ـ باب التعاوُنِ في بناء المسجدِ

﴿ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَن يَعْمُرُوا۟ مَسَٰجِدَ ٱللَّهِ شَٰهِدِينَ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِم بِٱلْكُفْرِ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَٰلُهُمْ وَفِى ٱلنَّارِ هُمْ خَٰلِدُونَ ﴿١٧﴾ إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَٰجِدَ ٱللَّهِ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَأَقَامَ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَى ٱلزَّكَوٰةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا ٱللَّهَ ۖ فَعَسَىٰٓ أُو۟لَٰٓئِكَ أَن يَكُونُوا۟ مِنَ ٱلْمُهْتَدِينَ ﴾ [التوبة: ١٧ ـ ١٨].

٤٤٧ ـ حدَّثنا مُسدَّدٌ قال: حدَّثنا عبدُ العزيز بنُ مُختارٍ قال: حدَّثنا خالدٌ الحَذَّاءُ عن عِكرمةَ قال لي ابنُ عبَّاسٍ ولابنهِ عليٍّ: انطَلِقا إلى أبي سَعيدٍ فاسمعا مِنْ حَديثهِ. فانطَلَقنا، فإذا هوَ في حائطٍ يُصلِحهُ، فأخَذَ رِداءهُ فاحتَبىٰ، ثمَّ أنشأ يُحدِّثنا، حتَّى أتىٰ على ذِكرِ بناءِ المَسجدِ فقال: «كنَّا نَحمِلُ لَبِنةً لَبنة وعمَّارٌ لَبِنتَين لَبِنتَين، فرآهُ النبيُّ ﷺ، فينفُضُ التُّرابَ عنهُ ويقولُ: وَيحَ عمَّارٍ تَقتُلُهُ الفِئةُ الباغِيةُ يَدْعُوهُم إلى الجَنَّةِ ويَدْعونَهُ إلى النار. قال: يقول عمَّارٌ: أعوذُ باللهِ مِنَ الفِتَنِ». [الحديث ٤٤٧ ـ طرفه في: ٢٨١٢].



٦٤ ـ باب الاستِعانةِ بالنَّجارِ والـ

٤٤٨ ـ حدَّثنا قُتَيبةُ قال: حدَّثَنا عبدُ الـ
رسولُ اللهِ ﷺ إلى امرأةٍ أن مُري غُلامَكِ النَّجَّار

[انظر الحديث: ٣٧٧].

٤٤٩ ـ حدَّثنا خَلَّادٌ قال: حدَّثَنا عبدُ الواحـ
يا رسولَ الله، ألا أجعلُ لكَ شيئاً تَقعدُ عليهِ؟
المِنبرَ». [الحديث ٤٤٩ ـ أطرافه في: ٩١٨، ٢٠٩٥، ...

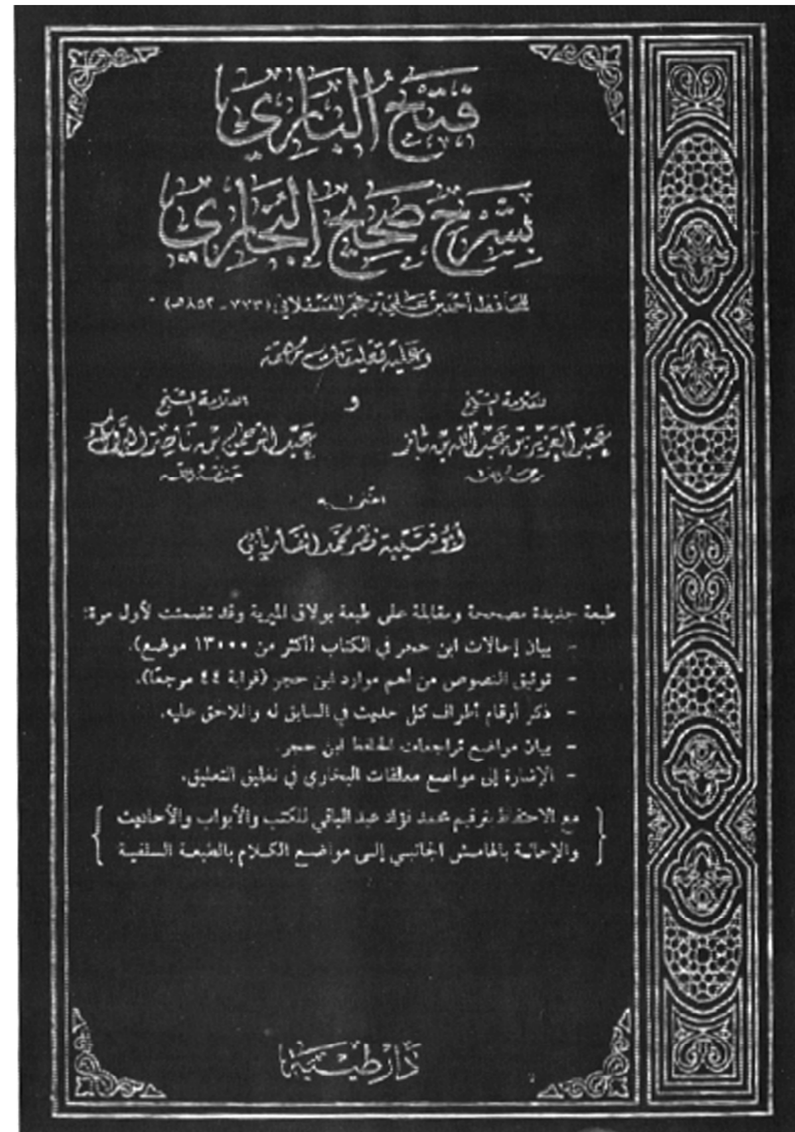
٦٥ ـ باب مَن

٤٥٠ ـ حدَّثنا يَحيىٰ بنُ سُليمانَ حدَّثَني
عاصمَ بنَ عُمرَ بنِ قتادَةَ حدَّثَه أنه سَمعَ عُبيدَ اللهِ
قولِ الناسِ فيهِ حِينَ بَنىٰ مَسجدَ الرسولِ ﷺ ـ:
«مَنْ بَنىٰ مسجداً ـ قال بُكيرٌ: حَسِبتُ أنه قال: يَـ

→ बुख़ारी **"बाब मसह-अल गबार अन अलअरास फी सबीलिल्लाह"** में है : हुज़ूर ﷺ हज़रत अम्मार رضي الله عنه के पास से गुज़रे तो उनके सर से ग़ुबार साफ़ किया और फ़रमाया : **"अम्मार رضي الله عنه को बाग़ी जमाअत क़त्ल करेगी, अम्मार رضي الله عنه उनको अल्लाह ﷻ की तरफ बुलाता होगा और वह अम्मार رضي الله عنه के दोज़ख़ की दावत देते होगें!"**

→ और **"बाब अल तआ़उन फी बनाअ़ अल मसजिद"** में है : रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अम्मार رضي الله عنه को देखा तो उनसे मिट्टी साफ़ की और फ़रमाया : **"अम्मार رضي الله عنه को बाग़ी जमाअत क़त्ल करेगी, अम्मार رضي الله عنه उनको अल्लाह ﷻ की तरफ बुलाता होगा और वोह अम्मार رضي الله عنه को दोज़ख़ की दावत देते होगें!"**

☆ **हज़रत अम्मार رضي الله عنه को हज़रत मुआविया رضي الله عنه की फौज ने जंग-ए-सिफ़्फ़िन में क़त्ल क़िया था।**



الإسلام إلى الكفر وهم الذين قتلهم علي بالنهروان حين قالوا: إنك ربنا فاغتاظ عليهم وأمر بهم فحرقوا بالنار فزادهم ذلك فتنة وقالوا: الآن تيقنّا أنك ربنا إذ لا يعذب بالنار إلا الله. انتهى. وقد تقدمت هذه القصة لعلي في الفتن[1] وليست للخوارج وإنما هي للزنادقة كما وقع مصرحًا به في بعض طرقه.

ووقع في شرح الوجيز للرافعي عند ذكر الخوارج قال: هم فرقة من المبتدعة خرجوا على علي حيث اعتقدوا أنه يعرف قتلة عثمان ويقدر عليهم ولا يقتص منهم لرضاه بقتله ومواطأته إياهم، ويعتقدون أن من أتى كبيرة فقد كفر واستحق الخلود في النار ويطعنون لذلك في الأئمة. انتهى. وليس الوصف الأول في كلامه وصف الخوارج المبتدعة وإنما هو وصف النواصب أتباع معاوية بصفين، وأما الخوارج فمن معتقدهم تكفير عثمان وأنه قتل بحق، ولم يزالوا مع علي حتى وقع التحكيم بصفين فأنكروا التحكيم وخرجوا على علي وكفروه، وقد تقدم القول فيهم مبسوطًا في «كتاب الفتن»[2].

٥٨ـ باب قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَنَضَعُ ٱلْمَوَٰزِينَ ٱلْقِسْطَ لِيَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ﴾

وَأَنَّ أَعْمَالَ بَنِي آدَمَ وَقَوْلَهُمْ يُوزَنُ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ: الْقُسْطَاسُ: الْعَدْلُ بِالرُّومِيَّةِ وَيُقَالُ: الْقِسْطُ مَصْدَرُ الْمُقْسِطِ وَهُوَ الْعَادِلُ، وَأَمَّا الْقَاسِطُ فَهُوَ الْجَائِرُ

٧٥٦٣ـ حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِشْكَابٍ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ عَنْ أَبِي زُرْعَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «كَلِمَتَانِ حَبِيبَتَانِ إِلَى الرَّحْمَنِ خَفِيفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ ثَقِيلَتَانِ فِي الْمِيزَانِ: سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ».

[تقدم في: ٦٤٠٦، طرفه في: ٦٦٨٢]

قوله: (باب قول الله تعالى: ﴿وَنَضَعُ ٱلْمَوَٰزِينَ ٱلْقِسْطَ لِيَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ﴾) كذا لأبي ذر وسقط لأكثرهم: ﴿لِيَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ﴾، والموازين: جمع ميزان وأصله موزان فقلبت الواو ياء لكسرة ما قبلها، واختلف في ذكره هنا بلفظ الجمع هل المراد أن لكل شخص ميزانًا أو لكل عمل ميزان فيكون الجمع حقيقة، أو ليس هناك إلا ميزان واحد والجمع باعتبار تعدد الأعمال أو

(١) (١٦/ ٤٧٣)، كتاب الفتن، باب ٨.
(٢) (١٦/ ٤٧٣)، كتاب الفتن، باب ٨.

المجلد السابع عشر

→ **“फ़तहुल बारी शरह बुख़ारी”** में है:

मज़्कूरा कलाम में जो पहली सिफ़त बयान की गई है वह बिदअती ख़्वारिज की नहीं है बल्कि नासबियों की है, यह वह लोग हैं जो जंग-ए-सिफ़्फ़ीन में हज़रत मुआविया رضي الله عنه के साथ थे।

سِيَرُ أَعْلَامِ النُّبَلَاءِ

تصنيف

الإمام شمس الدين محمد بن أحمد بن عثمان الذهبي

المتوفى

٧٤٨هـ - ١٣٧٤م

الجزء الثالث

أشرف على تحقيق الكتاب وخرّج أحاديثه

شعيب الأرنؤوط

حقق هذا الجزء

محمد نعيم العرقسوسي و مأمون صاغرجي

مؤسسة الرسالة

أبو حاتم السِّجستاني : عن أبي عُبيدة ، قال : قال مُعاويةُ : لقد وضعتُ رجلي في الرِّكاب ، وهمَمْتُ يوم صِفِّين بالهزيمة ، فما منعني إلا قولُ ابنِ الإطنابة :

أَبَتْ لي عِفَّتي وأبىَ بلائي وأخذي الحَمْدَ بالثَّمنِ الرَّبيح
وإكراهي على المكروه نفسي وضربي هامَة البطل المُشِيح
وقولي كلما جَشَأتْ وجاشتْ مكانَك تُحمَدي أو تستريحي[1]

قال الأوزاعي : سأل رجلٌ الحسنَ البصريَّ عن عليٍّ وعثمانَ ، فقال : كانتْ لهذا سابقة ولهذا سابقة ، ولهذا قرابة ولهذا قرابة ، وابتُلي هذا ، وعُوفي هذا . فسأله عن عليٍّ ومعاوية ، فقال : كان لهذا قرابة ولهذا قرابة ، ولهذا سابقة وليسَ لهذا سابقة ، وابتُليا جميعاً .

قلت : قُتل بين الفريقين نحو من ستين ألفاً . وقيل : سبعون ألفاً . وقُتِل عمارٌ مع عليٍّ ، وتبيَّن للناس قولُ رسول الله ﷺ « تقتُلُه الفئة الباغية »[2] .

(١) الخبر مع الأبيات عند ابن عساكر ١٦ / ٣٥٧ / ب ، والأبيات في « الوحشيات » ٧٧ ، و « الاختياريين » : ١٥٩ ، ١٦٠ ، و « عيون الأخبار » ١ / ١٢٦ ، و « العقد الفريد » ١ / ١٠٤ ، ١٠٥ ، وانظر « سمط اللآلي » ٥٧٤ . وابن الإطنابة : هو عمرو بن عامر بن زيد مناة الخزرجي ، شاعر فارس من فرسان الجاهلية ، والإطنابة : أمه : بنت شهاب من بني القين ، ومعنى الإطنابة : سير الحزام يكون عوناً لسير آخر إذا قلق ، وسير يشد في وتر القوس العربية . مترجم في « معجم الشعراء » : ٢٠٣ ، ٢٠٤ للمرزباني .

(٢) وهو حديث صحيح مشهور بل متواتر ، ولما لم يقدر معاوية على إنكاره ، قال : إنما قتله الذين جاؤوا به ، كما في « المسند » ٢ / ١٦١ بسند صحيح ، فأجابه علي رضي الله عنه بأن رسول الله ﷺ إذن قتل حمزة حين أخرجه ، وهذا منه رضي الله عنه إلزام مُفحِم لا جواب عنه ، وحجةٌ لا اعتراض عليها .

وما ذهب إليه المؤلف من كون طائفة معاوية هي الباغية هو مذهب فقهاء الحجاز والعراق من فريقي الحديث والرأي ، منهم مالك والشافعي وأبو حنيفة والأوزاعي ، وغيرهم كما قال الإمام عبد القاهر الجرجاني في كتاب «الإمامة» . نقله عنه المناوي في «فيض القدير» ٦/٦٦٣ .

☆ **"सैर-ए-आलामुल नुबला" में है: रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:**

इसे (या'नी हज़रत अम्मार رضي الله عنه को) बाग़ी जमाअत क़त्ल करेगी।

→ मुहक़्क़िक़-ए-किताब शोएब अरनौवत कहते हैं: **यह हदीस सही और मशहूर है बल्कि मुतवातिर है, जब हज़रत मुआविया رضي الله عنه इसका इन्कार न कर सके तो फ़रमाया:** अम्मार رضي الله عنه के क़ातिल वही लोग हैं जो उन्हें ले कर आए थे, (जैसा कि मुस्नद (२/१६१) में सही सनद के साथ मौजूद है), तो हज़रत अली رضي الله عنه ने जवाब दिया कि "फिर तो हज़रत हमज़ा رضي الله عنه को रसूलल्लाह ﷺ ने क़त्ल किया क्यूँ कि आप ही उनको (जंग-ए-उहद में) ले कर आए थे", यह एक ऐसा जवाब था जिसका कोई जवाब नहीं बन पाता और ऐसी दलील थी जिस पर कोई क़दह नहीं हो सकती।

→ और मुअल्लिफ़(ज़हबी) की जो राय है कि **हज़रत मुआविया رضي الله عنه का गिरोह बाग़ी था तो यही फ़ुक़हा-ए-हिजाज़ ओ इराक़ का मज़हब है, जिनमें इमाम मालिक رحمه الله, इमाम शाफ़ई رحمه الله, इमाम अबू हनीफ़ा رحمه الله और इमाम औज़ाई رحمه الله शामिल हैं, जैसा कि अब्दुल क़ाहिर जर्जानी ने "किताबुल इमामा" में कहा है, यह बात मुसन्निफ़ से मनावी ने "फ़ैज़ुल क़दीर (२/६६३)" में नक़ल की है।**

سلسلة

الأحاديث الصحيحة

وشيء من فقهها وفوائدها

محمد ناصر الدين الألباني

المجلد الرابع

١٥٠١ - ٢٠٠٠

مكتبة المعارف للنشر والتوزيع
لصاحبها سعد بن عبد الرحمن الراشد
الرياض

الشهاب» (١١/٢/١) عن شريك عن عاصم عن أبي وائل عن عبد الله، قال: قال رسول الله ﷺ: فذكره.

قلت: وهذا إسناد حسن في الشواهد، رجاله ثقات، غير أن شريكاً وهو ابن عبد الله القاضي سيء الحفظ.

لكن الحديث صحيح، فإن شطره الثاني في «الصحيحين» والنسائي وابن أبي عاصم وغيرهم من طريق أخرى عن أبي وائل به. وكذلك رواه ابن أبي الدنيا في «الأهوال» (٢/٩١) والبيهقي في «شعب الإيمان» (٢/١١٣/٢) وأحمد (٣٦٧٤ و ٤٢٠٠ و ٤٢١٣ و ٤٢١٤) وغيرهم.

والشطر الأول له شواهد من حديث أبي هريرة وتميم الداري عند أبي داود وغيره، وهو مخرج في «صحيح أبي داود» (٨١٠ - ٨١٢)، وحديث تميم عند الطبراني أيضاً (١٢٥٥ و ١٢٥٦).

من أعلام نبوته ﷺ الغيبية

١٧٤٩ - (أوَّلُ من يُغَيِّرُ سنتي رجلٌ من بني أميَّةَ)

أخرجه ابن أبي عاصم في «الأوائل» (٢/٧): حدثنا عبيد الله بن معاذ: ثنا أبي: ثنا عوف عن المهاجر أبي مخلد عن أبي العالية عن أبي ذر أنه قال ليزيد بن أبي سفيان: سمعت رسول الله ﷺ، فذكره.

قلت: وهذا إسناد حسن، رجاله ثقات رجال الشيخين غير المهاجر وهو ابن مخلد أبو مخلد، قال ابن معين:

«صالح». وذكره ابن حبان في «الثقات». وقال الساجي:

«صدوق». وقال أبو حاتم:

«لين الحديث ليس بذاك، وليس بالمتقن، يكتب حديثه».

→ अल्लामा अलबानी की **“सिलसिलतुल अहादीसुल सहीहा”** में है:

रसूलल्लाह ﷺ ने नबुव्वत की पेशनगोइयों में से है कि आप ने फ़रमाया:

“सबसे पहले जो मेरी सुन्नत को बदलेगा वह बनी उमैया का एक शख़्स होगा।”

→ इसे इब्न-ए-अबी आसिम ने **“अल अवाइल”** (७/२) में रिवायत किया है: हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, वह कहते हैं: हम से औफ़ ने बयान किया, वह मुहाजिर अबू मुख़लिद से, वह अबुल आलिया से कि हज़रत अबूज़र رضي الله عنه ने यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान رضي الله عنه से कहा कि मैं ने रसूलल्लाह ﷺ से सुना है..फिर यह हदीस ज़िक्र की।

→ **“मैं कहता हूँ कि इसकी सनद हसन(Good) है, इसके रिजाल सिक़्क़ा(Trustworthy) हैं और मुहाजिर के अलावा सब शेख़ैन (इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम رحمه الله) के रिजाल हैं। मुहाजिर के बारे में इब्न-ए-मोईन कहते हैं: सालेह हैं, और इब्न-ए-हब्बान ने सिक़्क़ात(Trustworthy) में शुमार किया है।”**

مجمع الزوائد ومنبع الفوائد

تأليف

الحافظ نور الدين علي بن أبي بكر بن سليمان
الهيثمي المصري
المتوفى سنة ٨٠٧ هـ

تحقيق

محمد عبد القادر أحمد عطا

الجزء السابع

يحتوي على الكتب التالية:
التفسير - التعبير - القدر - الفتن

منشورات
محمد علي بيضون
لنشر كتب السنة والجماعة
دار الكتب العلمية
بيروت - لبنان

١٢٠٥١ — وعن عمرو بن العاص، أنه أَهْدَى إِلَى نَاسٍ هَدَايَا، فَفَضَّلَ عَمَّارَ بْنَ يَاسِرٍ، فَقِيلَ لَهُ: فَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: «تَقْتُلُهُ الْفِئَةُ الْبَاغِيَةُ»(١).

رواه أحمد وفيه راو لم يسم، وبقية رجاله رجال الصحيح، ورواه أبو يعلى باختصار الهدية.

١٢٠٥٢ — وعن زيد بن وهب، قال: كان عمار قد ولع بقريش وولعت به فغدوا عليه، فضربوه فخرج عثمان بعصا فصعد المنبر، فحمد الله وأثنى عليه ثم قال: يا أيها الناس، ما لي ولقريش، وقد عدوا على رجل، فضربوه سمعت رسول الله ﷺ يقول لعمار: «تقتلك الفئة الباغية»(٢).

رواه أبو يعلى والطبراني في الثلاثة باختصار القصة، وفيه أحمد بن بديل الرملي، وثقه النسائي وغيره، وفيه ضعف.

١٢٠٥٣ — وعن أنس، أن رسول الله ﷺ كان يبني المسجد، وكان ابن ياسر يحمل صخرتين، فقال: «ويح ابن سمية، تقتله الفئة الباغية».

رواه الطبراني في الأوسط، وأبو يعلى، وإسناد أبو يعلى منقطع، وفي إسناد الطبراني أحمد بن عمر العلاف الرازي، ولم أعرفه.

١٢٠٥٤ — وعن ابن عمر، قال: لم أجدني آسى على شيء، إلا أني لم أقاتل الفئة الباغية مع علي.

رواه الطبراني بأسانيد، وأحدها رجاله رجال الصحيح.

١٢٠٥٥ — وعن عمار بن ياسر، قال: ضرب رسول الله ﷺ في خاصرتي، فقال: «خاصرة مؤمنة، تقتلك الفئة الباغية، آخر زادك ضياح من لبن».

رواه الطبراني في الكبير والأوسط باختصار، وأسانيده كلها فيها ضعف.

قلت: وتأتي أحاديث من هذا كثيرة في مناقب عمار، إن شاء الله.

١٢٠٥٦ — وعن عبد الله بن سلمة، قال: رَأَيْتُ عَمَّارًا يَوْمَ صِفِّينَ شَيْخًا كَبِيرًا آدَمَ طُوَالاً، آخِذًا الْحَرْبَةَ بِيَدِهِ، وَيَدُهُ تَرْعَدُ، فَقَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَقَدْ قَاتَلْتُ بِهَذِهِ الرَّايَةِ

(١) أخرجه الإمام أحمد في المسند (١٩٧/٤).
(٢) أخرجه الطبراني في الصغير برقم (٥١٦).

→ **“मजमा उल ज़वाइद”** में है: हज़रत अनस ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलल्लाह ﷺ मस्जिद तामीर कर रहे थे, और यासिर के बेटे (अम्मार ﷺ) दो दो पत्थर उठा रहे थे, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: **“बुरा हो, इब्न-ए-समिया(सुमैया) (अम्मार) को बाग़ी जमाअत क़त्ल करेगी।”**

इसे ‘औसत’ में इमाम तबरानी ﷺ ने और अबू यअली ﷺ ने रिवायत किया है, अबू यअली ﷺ की सनद मुनक़तअ है, और इमाम तबरानी ﷺ की सनद में अहमद नम उमर अलाफ़ राज़ी है जिसे मैं नहीं जानता।

→ हज़रत इब्न-ए-उमर ﷺ कहते हैं: **“मुझे इसके अलावा किसी बात का अफ़सोस नहीं कि मैं ने हज़रत अली ﷺ के साथ मिल कर बाग़ी जमाअत से क़िताल नहीं किया।”**

→ **इसे इमाम तबरानी ﷺ ने कई सनदों से नक़ल किया है, एक सनद के तमाम रावी सहीह बुख़ारी के हैं।**

شرح المقاصد

للعالم الإمام مسعود بن عمر بن عبد الله
الشهير بسعد الدين التفتازاني
٧١٢ هجرية - ٧٩٣ هجرية

تحقيق وتعليق مع مقدمة في علم الكلام
الدكتور عبد الرحمن عميرة

تصدير فضيلة الشيخ
صالح موسى شرف
عضو هيئة كبار العلماء وعضو مجمع البحوث الإسلامية

الجزء الخامس

عالم الكتب

أن كلتا الطائفتين على الصواب بناء على تصويب كل مجتهد، وذلك لأن الخلاف إنما هو فيما إذا كان كل منهما مجتهداً في الدين على الشرائط المذكورة في الاجتهاد، لا في كل من يتخيل شبهة واهية ويتأول تأويلاً فاسداً ولهذا ذهب الأكثرون إلى أن أول من بغى في الإسلام معاوية لأن قتلة عثمان لم يكونوا بغاة بل ظلمة وعتاة، لعدم الاعتداد بشبهتهم، ولأنهم بعد كشف الشبهة أصروا إصراراً واستكبروا استكباراً.

قال: وفي حرب الخوارج

(الأمر أظهر إذ التحكيم لا يصلح شبهة في الخروج عن الطاعة.كيف وهو نوع إصلاح.وقد قال الله تعالى:﴿فأصلحوا﴾والأمر بالقتال ليس للفور).

الأمر أظهر لأن الحكمة من نصب الإمام، وهي تألف القلوب واجتماع الكلمة كما يحصل بالقتال فقد يحصل بالتحكيم، سيما وقد شرط أن يحكم الحكمان

---

(١) هو عمرو بن عبيد بن باب التميمي بالولاء أبو عثمان البصري شيخ المعتزلة في عصره، وفقيهاً، وأحد الزهاد المشهورين كان جده من سبي فارس، وأبوه نساجاً ثم شرطياً للحجاج في البصرة، واشتهر عمرو بعلمه وزهده وأخباره مع المنصور العباسي، له رسائل وكتب منها «التفسير» والرد على القدرية، توفي بمران (بقرب مكة) عام ١٤٤ هـ وفي العلماء من يراه مبتدعاً قال يحيى بن معين كان من الدهرية الذين يقولون: إنما الناس مثل الزرع. راجع وفيات الأعيان ١ : ٣٨٤ والبداية والنهاية ١٠ : ٧٨ وميزان الاعتدال ٢ : ٢٩٤ .

→ **सादुद्दीन तफ़्ता ज़ानी** की **“शरहुल मक़ासिद”** में है:

इसी वजह से अक्सर लोगों की राय है कि इस्लाम में सब से पहले बग़ावत करने वाले हज़रत मुआविया رضي الله عنه हैं।

بإصابته في قتل أصحاب الجمل، وقالوا أيضاً بأن الذين قاتلوه بغاة ظالمون له ولكن لا يجوز تكفيرهم ببغيهم[1].

وقال الإمام أبو منصور التيمي البغدادي في كتاب «الفرق» في بيان عقيدة أهل السنة: وأجمعوا أن عليًا كان مصيباً في قتال أهل الجمل، أعني طلحة والزبير وعائشة بالبصرة، وأهل صفين أعني معاوية وعسكره.

وقال الإمام أبو المعالي في كتاب «الإرشاد»: فصل: علي رضي الله عنه كان إماماً حقًا في توليته، ومقاتلوه بغاة وحسن الظن بهم يقتضي أن يُظنّ بهم قصد الخير وإن أخطأوه، فهو آخر فصل ختم به كتابه.

وحسبك بقول سيد المرسلين وإمام المتقين لعمار رضي الله عنه: «تقتلك الفئة الباغية». وهو من أثبت الأحاديث كما تقدم، ولما لم يقدر معاوية على إنكاره لثبوته عنده: إنما قتله من أخرجه، ولو كان حديثاً فيه شك لرده معاوية وأنكره وكذّب ناقله وزوّره.

وقد أجاب علي رضي الله عنه عن قول معاوية بأن قال: فرسول الله ﷺ إذن قتل حمزة حين أخرجه، وهذا من علي رضي الله عنه إلزام لا جواب عنه، وحجة لا اعتراض عليها، قاله الإمام الحافظ أبو الخطاب بن دحية.

• • •

٢٢٩

باب لا يأتي زمان إلا والذي بعده شر منه، وفي ظهور الفتن

(البخاري) عن الزبير بن عدي قال: أتينا أنس بن مالك فشكونا إليه ما نلقى من الحجاج فقال: «اصبروا فإنه لا يأتي عليكم زمانٌ إلا والذي بعده شر منه حتى تلقوا ربكم» سمعته من نبيكم ﷺ[2]. وخرّجه الترمذي وقال: حديث حسن صحيح.

وعن أبي هريرة عن النبي ﷺ قال: «يتقارب الزمانُ، وينقص العلم، ويُلقى الشحُّ، وتظهر الفتنُ، ويكثر الهرجُ»، قالوا: يا رسول الله؛ أيم هو؟ قال: «القتل القتل»[3]. أخرجه البخاري ومسلم.

(١) انظر «الفرق بين الفرق» ص٢٧٢ ـ طبعة دار الكتب العلمية.
(٢) أخرجه البخاري (٢٢٠٦).
(٣) أخرجه البخاري (٦٠٣٧) ومسلم (١٥٧).



→ कुरतबी ﷬ की **“अलतज़किरा”** में है: अबू मंसूर तैमी बग़दादी ने “किताबुल फ़र्क़” (बयान अक़ीदत अहल-ए-सुन्नत) में कहा है: सबका इत्तेफाक़ है कि अहल-ए-जमल या’नी हज़रत तल्हा ﷡ , हज़रत ज़ुबैर ﷡ , और हज़रत आयशा ﷺ से बसरा में क़िताल करने में हक़ पर थे, और इसी तरह अहल-ए-सिफ़्फ़िन या’नी हज़रत मुआविया ﷡ और उनके लश्कर से जंग करने में भी आप (या’नी हजरत अली ﷡) हक़ पर थे।

→ तुम्हारे लिए यही काफ़ी है कि सय्यदुल मुरसलीन ﷺ ने हज़रत अम्मार ﷡ से फ़रमाया था कि तुम्हें बाग़ी जमाअत क़त्ल करेगी और यह मज़बूत अहादीस में से है जैसा कि गुज़रा, और जब हज़रत मुआविया ﷡ इस हदीस का इन्कार न कर सके तो कहा कि अम्मार ﷡ को उसी ने क़त्ल किया जो उन्हें ले कर आया था, अगर यह हदीस क़ाबिल-ए-शक होती तो हज़रत मुआविया ﷡ इसे रद कर देते और इसके रिवायत करने वाले की तक्ज़ीब करते।

→ और हज़रत अली ﷡ ने भी हज़रत मुआविया ﷡ के इस क़ौल का यह जवाब दिया कि फिर तो हज़रत हमज़ा ﷡ को हुजूर ﷺ ने क़त्ल किया, क्यूँ कि हुजूर ﷺ ही उन्हें ले कर आए थे, यह हज़रत अली ﷡ का ऐसा जवाब था जिसका कोई जवाब नहीं था और ऐसी दलील थी जिसकी कोई काट नहीं थी।

مَسْنَدُ الفَارُوق

أَمِيرُ المُؤمِنِين

أَبِي حَفْصٍ عُمَرَ بْنِ الخَطَّاب رضي الله عنه

وَأقواله عَلَى أبوابِ العِلم

إن الله جعل الحق على لسان عمر وقلبه
"حديث شريف"

تَصْنِيفُ

الإمام الحافظ عماد الدين أبي الفداء

اسماعيل بن عمر بن كثير الشافعي الدمشقي

٧٠٠ - ٧٤٤هـ

الجُزءُ الثَّاني

وثّق أصوله وخرّج حديثه
وحقّق مسائله

الدكتور عبد المعطي قلعجي

دار الوفاء للطباعة والنشر والتوزيع . المنصورة . ج.م.ع

ومن سورة الحج :

قال الترمذي : حدثنا عبد بن حميد ، حدثنا حسين بن علي الجعفي ، عن فضيل ابن عياض ، عن هشام بن حسان ، عن الحسن البصري ، عن عتبة بن غزوان ، قال : قال عمر (رضي الله عنه) : « اذكروا النَّار فإن حرها شديد ، وقعرها بعيد ، ومقامعها حديد »(٩٠) .

قال الترمذي : لانعرف للحسن سماعاً من عتبة بن غزوان .

حديث اخر :

قال عبد الرزاق : أخبرنا ابن عيينة ، أخبرنا عمرو بن دينار ، عن ابن أبي مليكة ، عن المسور بن مخرمة ، قال : قال عمر لعبد الرحمن بن عوف : أما علمت أنا كنا نقرأ : ﴿ جاهدوا في الله حق جهاده .. ﴾ [الحج : ٧٨] في اخر الزمان كما جاهدتم في أوله . قال : فقال عبد الرحمن : ومتى ذلك ياأمير المؤمنين ؟ قال : إذا كان بنو أمية الأمراء وبنو المغيرة الوزراء .

هذا إسناد صحيح وهكذا رواه البيهقي في « الدلائل » عن أبي محمد عبد الله بن يحيى السكري ، عن إسماعيل بن محمد الصفار ، عن أحمد بن منصور الرمادي ، عن عبد الرزاق ، به

وهو غريب مع نظافة إسناده ، والله أعلم(٩١) .

* * *

ومن سورة المؤمنون :

قال الإمام أحمد : حدثنا عبد الرزاق ، أخبرني يونس بن سُليم — وهو الصنعاني ، سكن الشام — قال : أملى علي يونس بن يزيد الأيلي ، عن ابن شهاب ، عن عروة بن
الزبير عن عبد الرحمن بن عبد / القاري ، قال : سمعت عمر بن الخطاب يقول : كان إذا ٢
أنزل على رسول الله ﷺ الوحي يسمع عند وجهه [دويٌّ] كدوي النحل فمكثنا ساعة ،

= وذكره السيوطي في الدر المنثور (٤ : ٣١٣) ، ونسبه لمالك والبيهقي عن أسلم .

(٩٠) ذكره السيوطي في الدر المنثور (٤ : ٣٥٠) ، ونسبه لابن أبي شيبة ، عن الحسن .

(٩١) رواه البيهقي في دلائل النبوة (٦ : ٤٢٢) ، وذكره السيوطي في الدر المنثور (٤ : ٣٧١) ، ونسبه لابن مردويه ، والبيهقي في الدلائل .

→ **इब्न-ए-कसीर** की **“मुस्नद-ए-फ़ारूक़”** में है: हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ﷛ ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷛ से कहा: क्या आपको नहीं मालूम कि हम यह पढ़ते थे : “जाहिद वा फ़िल्लाह हक़ जिहादा” कि “अल्लाह ﷻ! के रास्ते में जिहाद करो जैसे उसका हक़ है”, आख़िरी ज़माने में जैसे तुमने पहले ज़माने में जिहाद किया”, तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷛ ने कहा: “या अमीरुल मो’मिनीन! कब?” आप ﷛ ने फ़रमाया:

“जब बनू उमैया उमरा होंगे, और बनू मुग़ीरा वुज़रा होंगे।”

☆ **मुहक़्क़िक़-ए-किताब डॉक्टर अब्दुल मुअती क़लअजी कहते हैं कि: इसकी सनद सहीह है।**



IMAM JAFAR SADIQ FOUNDATION

(Ahl-e-Sunnah)

Founder & Chairman : Dr. Shahezadhusain Yasinmiya Kazi

Mugalwada, Kasba, Modasa, Arvalli-383315 (Gujarat)

Mo. 85110 21786